आईएसएसएन ISSN: 2455-9105

ईसीआईएल गौरव

'ई-अभिशासन' विशेषांक

वर्ष-6 अंक-8 | अर्धवार्षिक गृहपत्रिका | अक्टूबर 2016 - मार्च 2017

इलेक्ट्रानिकी में उत्कृष्टता

स्वर्ण जयंती वर्ष

उपलब्धियों के नील गगन में
एक और
गौरवशाली स्वर्णिम अध्याय .....

कॉलेज आफ डिफेन्स मैनेजमेन्ट के अधिकारियों को संबोधित करते हुए
श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
तथा साथ में श्री वी.एस. बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक)

तकनीकी संवाद सत्र

मंचासीन (बाएं से) श्री वाई.एस.मय्या, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; श्री जी.पी. श्रीवास्तव,
पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा श्री पी. सुधाकर (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन स्वागत भाषण देते हुए

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम

ईसीआईएल गौरव

अर्धवार्षिक गृहपत्रिका

वर्ष-6 अंक-8 अक्टूबर 2016-मार्च 2017

प्रधान संरक्षक
श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री वी.एस.बी. बाबु
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री अनुराग कुमार
महाप्रबंधक

संपादक
डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी

प्रकाशन सहयोग
श्री ए.पी. राजु, वरिष्ठ प्रबंधक
श्रीमती के. लक्ष्मी राणी, वरिष्ठ अधिशासी सचिव
श्रीमती ओ. श्वेता, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्रीमती एस. गौतमी, लेखा अधिकारी
श्रीमती पी.डी. रम्या तेजा, तकनीकी अधिकारी
श्री कुलदीप कुमार यादव, तकनीकी अधिकारी

संपर्क
डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक 'ईसीआईएल गौरव'
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद - 500 062
फोन : 040-27182585
ई-मेल : drawasthi@ecil.co.in

इस अंक में

शुभकामना संदेश	7
संपादकीय: कुछ लिखने से पहले.....	11
हमारे प्रेरणा-स्तंभ वैज्ञानिक	
डॉ. पी.के. अय्यंगर	12
ईसीआईएल के बढ़ते कदम	
सम्मान एवं पुरस्कार	13
तकनीकी स्तंभ	
ई-अभिशासन के क्षेत्र में ईसीआईएल	17
विशेष स्तंभ	
ईसीआईएल एवं निगमीय सामाजिक दायित्व	23
शुभागमन-स्वागतम्	
हमारे माननीय अतिथिगण	26
राष्ट्रीय समारोह	
गणतंत्र दिवस- 2017	27
राजभाषा स्तंभ	
ईसीआईएल: राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति की ओर	29
आंचलिक कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां	34
अनुप्रयुक्त विज्ञान अनुवाद: हिन्दी का विस्तार	40
अनुवाद-प्रक्रिया: विश्लेषणपरक अध्ययन	44
व्याकरण एवं विराम-चिह्न	45
साहित्यिक एवं सामाजिक आलेख	
राष्ट्रकवि कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा	46
शाश्वत जीवन-दर्शन	48
मेरा गांव: अतीत की स्मृतियों में	49
मां ! याद तुम्हारी आती है	51
मानव जीवन की सार्थकता	52
महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम : झलकियां	53
काव्य सौरभ: काव्यांजलि	56
स्वास्थ्य-सौन्दर्य	61
'ईसीआईएल गौरव' ज्ञान-प्रश्नोत्तरी	62
संदेशा आया है	63

'ईसीआईएल गौरव' पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नि:शुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि ईसीआईएल प्रबंधन या संपादन समिति की उनसे सहमति हो। पत्रिका की जनोपयोगिता को ध्यान में रखते हुए लेखों में कुछ चित्र इंटरनेट के विविध स्रोतों से पुनर्मुद्रित किए गए हैं। उन सभी के प्रति संपादन समिति सादर आभार व्यक्त करती है - संपादक

ईसीआईएल के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर निगम के पूर्व प्रबंध निदेशकों तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों को सादर नमन करते हुए इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) का सारांश परिचय प्रस्तुत है:-

परिचय

व्यावसायिक ग्रेड इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में मजबूत स्वदेशी सामर्थ्य को सृजन करने के उद्देश्य से परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत वर्ष 1967 में ईसीआईएल की स्थापना हुई। ईसीआईएल अपने स्थापना के वर्ष 1967 से ही 'प्रौद्योगिकी संचालित' कंपनी रही है। इस निगम में सर्वप्रथम पूर्ण आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया। इसने तीन प्रौद्योगिकी क्षेत्र जैसे नियंत्रण प्रणालियां, संचार प्रणालियां और कंप्यूटर से संबंधित उत्पादों पर बल देते हुए इनके डिजाइन, विकास एवं विनिर्माण तथा विभिन्न प्रकार के उत्पादों के विपणन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। विगत कुछ वर्षों से ईसीआईएल बहु उत्पाद, बहु उद्देश्यीय कंपनी के रूप में विकसित हुआ है। वर्तमान में परमाणु ऊर्जा क्षेत्र, वांतरिक्ष क्षेत्र, इलेक्ट्रानिक सुरक्षा, संचार एवं नेटवर्क, ई-अभिशासन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। ईसीआईएल की अनुसंधान एवं विकास संरचना पूरी तरह से स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित है। इसमें देश की अग्रणी प्रयोगशालाओं और शैक्षिक संस्थान जैसे; डीआरडीओ, बीएआरसी, एनपीसीआईएल, आईजीसीएआर तथा अंतरिक्ष विभाग से सामरिक सहभागिता की जा रही है, जो ईसीआईएल की राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है।

विगत कुछ वर्षों से ईसीआईएल बहु उत्पाद, बहु उद्देश्यीय कंपनी के रूप में विकसित हुआ है। वर्तमान में परमाणु ऊर्जा क्षेत्र, वांतरिक्ष क्षेत्र, इलेक्ट्रानिक सुरक्षा, संचार एवं नेटवर्क, ई-अभिशासन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ईसीआईएल की अनुसंधान एवं विकास संरचना पूरी तरह से स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित है

ईसीआईएल को देश में निम्नलिखित के प्रथम प्रवर्तन का श्रेय है:-

- सॉलिड स्टेट टेलिविजन - ईसीटीवी
- इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन (ईवीएम)
- प्रोग्रामकारी लॉजिक नियंत्रक (प्रोजिकॉन)
- नाभिकीय विद्युत संयंत्रों के लिए नियंत्रण एवं उपकरणीकरण
- डिजिटल कंप्यूटर्स एवं ऑपरेटिंग प्रणाली
- विकिरण मॉनीटरन एवं संसूचन प्रणाली
- विश्लेषक एवं मापन उपकरण
- सॉलिड स्टेट कॉकपिट वॉयस रिकॉडर (ब्लैक बॉक्स)
- 'चंद्रयान' एवं 'मंगलयान' मिशन के लिए 'अर्थ स्टेशन' और 'डीप स्पेश नेटवर्क ऐन्टेना' जैसे नवीनतम उत्पादों ने इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ईसीआईएल को एक प्रतिष्ठित पहचान दी है।

राष्ट्र के प्रत्येक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय कार्यक्रम में ईसीआईएल की सहभागिता रही है। ईसीआईएल के लिए 'आम नागरिक' सबसे महत्त्वपूर्ण है। यहां पर ऐसी प्रौद्योगिकियों का विकास किया जाता है जो अपनी नई तकनीक से समाज और देश के लिए हितकारी होती है।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धियां

ईसीआईएल ने हाल में ही ऐसे कई उत्पादों को मार्केट में लांच किया है जिनका मूलभूत अनुसंधान एवं विकास ईसीआईएल की प्रयोगशालाओं में किया गया है। प्रोग्रामकारी लॉजिक नियंत्रक (पीएलसी) सुरक्षित स्वचालन की आवश्यकता के लिए पूर्ण रूप से स्वदेशी समाधान है। ईसीआईएल ने इस उत्पाद को ऐसे समय में विकसित किया है जब भारतीय परमाणु कार्यक्रम विकास की ओर अग्रसर है और सामरिक क्षेत्रों में ऐसे उत्पाद की अत्यंत आवश्यकता है जो सुरक्षित और विश्वसनीय स्वचालन की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

ईसीआईएल राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और शैक्षिक संस्थानों के साथ अनुसंधान एवं विकास करके देश की सूचना सुरक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गंभीरता से काम कर रहा है। हाल में ही विकसित किए गए ईसीआर 1000 सीरीज कैरियर ईथरनेट स्विच रौटर, सेक्योर नेटवर्क एक्सेस प्रणाली तथा आपदा प्रबंधन उपकरण प्रौद्योगिकी विकास के परिणाम

ईसीआईएल ने कांप्लेक्स कंप्यूटर आधारित 'कमांड और कंट्रोल' प्रणाली को विकसित किया है जिसे देश के मिसाइल कार्यक्रम में अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है। ईसीआईएल की सबसे नवीनतम उपलब्धि 'प्रमाणिका'; पोर्टेबल स्मार्ट कार्ड रीडर है जिसका उपयोग कार्ड धारक के सक्रिय बॉयोमीट्रिक डाटा को अधिकृत करने के लिए किया जाता है

हैं। ईसीआईएल ने कांप्लेक्स कंप्यूटर आधारित 'कमांड और कंट्रोल' प्रणाली को विकसित किया है जिसे देश के मिसाइल कार्यक्रम में अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है। ईसीआईएल की सबसे नवीनतम उपलब्धि 'प्रमाणिका'; पोर्टेबल स्मार्ट कार्ड रीडर है जिसका उपयोग कार्ड धारक के सक्रिय बॉयोमीट्रिक डाटा को अधिकृत करने के लिए किया जाता है। इस स्मार्ट कार्ड की सूचना से कार्ड धारक की पहचान की जा सकती है। इस उपकरण का उपयोग सीमा नियंत्रण, कानून व्यवस्था, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और अन्य सरकारी योजनाओं के लिए व्यापक रूप से किया जा सकता है।

उद्देश्य

- सामरिक क्षेत्रों में आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में ईसीआईएल की सक्रियता को अनुकूल बनाना
- स्थानीकरण और आत्मनिर्भरता पर ध्यान देते हुए व्यावसायिक ध्येय की दृष्टि से प्रौद्योगिकी आधार को सशक्त करना
- संगठन के सभी स्तरों पर ग्राहकोन्मुखता पर 'फोकस' बनाए रखना
- सामरिक क्षेत्रों में व्यवसाय को बढ़ाने के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय संगठनों से सहभागिता करना
- आवश्यक मानव संसाधन विकास मध्यस्थता से निष्पादन प्रबंधन प्रणाली की प्रभाविकता को सुनिश्चित करना
- कर्मचारियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को बढ़ाने वाले सौहार्द्रपूर्ण औद्योगिक संबंधों से कार्य संस्कृति की गुणवत्ता का सृजन एवं पोषण
- गुणता, वितरण, लागत, संरक्षा एवं उत्पादकता पर ध्यान देते हुए कंपनी को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के रूप में 'री-इंजीनियर' करना
- निगमीय अभिशासन की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति, निवारक सतर्कता एवं सतत विकास को सुनिश्चित करना
- कंपनी के शेयरधारक मूल्य को प्रगामी समुन्नत करना

डॉ. शेखर बसु, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत सरकार ने भी ईसीआईएल को 50वीं स्थापना दिवस के अवसर पर शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने अपने शुभकामना संदेश में लिखा है कि ईसीआईएल डॉ. होमी जे. भाभा की महत्त्वपूर्ण दूरदर्शिता का परिणाम है। डॉ. होमी जे. भाभा व्यावसायिक ग्रेड इलेक्ट्रानिकी के उपस्करों से राष्ट्र को सशक्त बनाना चाहते थे। ईसीआईएल विगत 50 वर्षों से राष्ट्र की सेवा में योगदान दे रहा है। ईसीआईएल का मुख्य योगदान महत्त्वपूर्ण इलेक्ट्रानिक प्रणालियों का अभिकल्प, विकास, विनिर्माण एवं आपूर्ति है। उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों के नव-प्रवर्तन से ईसीआईएल परमाणु ऊर्जा विभाग एवं राष्ट्र के लिए गौरव बन गया है। वर्षों से राष्ट्र की सेवा में योगदान दे रहा है। ईसीआईएल का मुख्य योगदान महत्त्वपूर्ण इलेक्ट्रानिक प्रणालियों का अभिकल्प, विकास, विनिर्माण एवं आपूर्ति है। उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों के नव-प्रवर्तन से ईसीआईएल परमाणु ऊर्जा विभाग एवं राष्ट्र के लिए गौरव बन गया है।

प्रमुख उत्पाद एवं सेवाएं

- नाभिकीय एवं प्रक्रिया नियंत्रण • रक्षा
- वांतरिक्ष • सुरक्षा प्रणालियां एवं समाधान
- सूचना प्रौद्योगिकी, दूर संचार एवं ई-अभिशासन

अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में ईसीआईएल का महत्त्वपूर्ण योगदान

- लार्ज हाड्रॉन कोलिडर परियोजना, सीईआरएन (सर्न), स्विटजरलैंड
- इन्टरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेन्टल रिएक्टर (आईटीईआर), फ्रांस
- फैसिलिटी आफ एन्टीप्रोटॉन एंड ऑयन रिचर्स (एफएआईआर), जर्मनी

'ईसीआईएल गौरव' की ओर से 'ईसीआईएल' के गौरवशाली एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएं

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
के माननीय पूर्व प्रबंध निदेशक/ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

डॉ. ए. एस. राव
प्रबंध निदेशक 29-08-1967 से 31-05-1978

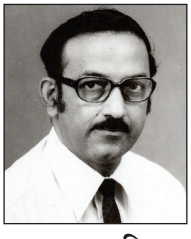

श्री एस.आर. विजयकर
प्रबंध निदेशक 01-06-1978 से 30-09-1982
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 01-10-1982 से 31-05-1984

डॉ. पी.आर. दस्तीदार
कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01-06-1984 से 30-09-1984

श्री बी.एस. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक 01-10-1984 से 31-10-1988
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 01-11-1988 से 16-04-1992

डॉ. सी.राव कासरबाड़ा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
17-04-1992 से 15-10-1998

श्री वी.एस. रॉन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (स्थानापन्न)
16-10-1998 से 31-10-1999
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 01-11-1999 से 30-06-2003

श्री जी.पी.श्रीवास्तव
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01-07-2003 से 29-09-2006

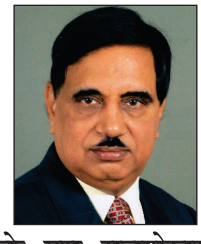

श्री के. एस. राजशेखर राव
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 30-09-2006 से 30-04-2009

श्री वाई.एस. मय्या
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01-05-2009 से 31-08-2012

मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, सेना मेडल
कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01-09-2012 से 28-02-2013

श्री पी. सुधाकर
कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01-03-2013 से 15-09-2013
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 16-09-2013 से 31-10-2016

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक
ईसीआईएल के वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक (इलेक्ट्रानिकी), इलेक्ट्रानिकी एवं उपकरणीकरण वर्ग, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई ने 02-11-2016 को ईसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण किया। श्री देवाशीष दास ने मैसूर विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रानिकी इंजीनियरी में बी.टेक. की उपाधि प्राप्त करके वर्ष 1983 में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई में प्रवेश किया। ये बीएआरसी प्रशिक्षण स्कूल के 26वें बैच के स्नातक हैं। इन्होंने अनुसंधान एवं पॉवर रिएक्टर्स के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण नियंत्रण एवं संरक्षा प्रणालियों को अभिकल्पित एवं विकसित किया है।

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण करते हुए

इनके द्वारा अभिकल्पित की गई महत्त्वपूर्ण प्रणाली में 220 MWe नाभिकीय विद्युत संयंत्रों के लिए रिएक्टर विनियामक प्रणाली, पॉवर एवं अनुसंधान रिएक्टर के लिए सुरक्षा प्रणाली, कॉम्पैक्ट लाइट वाटर रिएक्टर (एलडब्ल्यूआर) तथा प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) के लिए रिएक्टर कोर मॉनीटरन प्रणाली सम्मिलित है। इन्होंने रिएक्टरों, सक्रिय प्रतिरोधी परिप्रश्नों तथा विभिन्न सामग्रियों में प्रयुक्त होने वाले विविध अनुप्रयोगों के लिए विकिरण संसूचकों के विकास के क्षेत्र में अग्रणी कार्य किया है। इनकी तकनीकी विशेषज्ञता का क्षेत्र रिएक्टर अनुप्रयोगों के लिए विकिरण संसूचक है। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई में इलेक्ट्रानिकी प्रभाग के प्रमुख का पद संभालने से पूर्व इन्होंने संसूचक, एएसआईसी, मेगा विज्ञान परियोजनाओं, पराश्रव्य (अल्ट्रॉसॉनिक) निरीक्षण तथा जैव-चिकित्सा (बायो-मेडिकल) उपकरणों के लिए इलेक्ट्रानिकी एवं उपकरणीकरण प्रणाली के क्षेत्र में कार्य करने वाली टीमों का नेतृत्व किया है।

रिएक्टर से संबंधित उपकरणीकरण की प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास के लिए श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक को अनेक महत्त्वपूर्ण परमाणु ऊर्जा विभाग पुरस्कार तथा वर्ग उपलब्धियों से सम्मानित किया गया है

रिएक्टर से संबंधित उपकरणीकरण की प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास के लिए श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक को अनेक महत्त्वपूर्ण परमाणु ऊर्जा विभाग पुरस्कार तथा वर्ग उपलब्धियों से सम्मानित किया गया है।

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

श्री पी. सुधाकर

ईसीआईएल के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

अविस्मरणीय प्रेरक स्मृतियां

श्री पी. सुधाकर इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक पद से 31-10-2016 को सेवानिवृत्त हो गए हैं। ये वर्ष 1979 से ईसीआईएल में कार्यरत रहते हुए नाभिकीय, रक्षा, वांतरिक्ष, सुरक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-अभिशासन क्षेत्रों की प्रणालियों के विकास हेतु प्रतिबद्ध रहे हैं। इन्होंने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वरंगल से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरी में स्नातक तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली से एकीकृत इलेक्ट्रानिक्स एवं सर्किट में स्नातकोत्तर किया है। इन्होंने फ्रांस, इटली और जर्मनी में यूरोपीयन प्रबंधन स्कूल से विकसित प्रबंधन प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

इनके द्वारा विकसित और प्रदत्त प्रणालियां भारत के सभी स्वदेशी रूप से तैयार नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों में सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं

श्री पी. सुधाकर भारतीय नाभिकीय कार्यक्रमों हेतु आवश्यक नियंत्रण और उपकरणीकरण प्रणालियों के अभिकल्पन, विनिर्माणन, परीक्षण और कमिशनिंग के क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त हैं। इनके द्वारा विकसित और प्रदत्त प्रणालियां भारत के सभी स्वदेशी रूप से तैयार नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों में सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं। इन्होंने ब्रह्मोस और आकाश मिसाइल कार्यक्रमों के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल), हैदराबाद के परस्पर सहयोग से कमान्ड और नियंत्रण प्रणाली तैयार की है। ये ईसीआईएल द्वारा राष्ट्रीय उत्तरदायित्व के पालन हेतु सामरिक महत्त्व की अनेक परियोजनाओं में सहयोगी रहे हैं। इन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं।

इनके नेतृत्व में ईसीआईएल ने वर्ष 2012-13 में अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी विकास तथा नवोन्मेष के लिए प्रतिष्ठित 'स्कोप गोल्ड ट्रॉफी' और 2013-14 के लिए 'आईएनएस औद्योगिक उत्कृष्टता अवार्ड' प्राप्त किया। इन्हें वर्ष 2013-14 हेतु इलेक्ट्रानिक्स औद्योगिकी संस्थान ने 'इलेक्ट्रानिक मैन आफ द इयर' के रूप में सम्मानित किया है। इनकी तकनीकी उत्कृष्टता के अभिज्ञान हेतु, नियामकों की समिति और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वरंगल के प्रबंधन ने 'विशिष्ट भूतपूर्व छात्र तकनीकी उपलब्धि अवार्ड-2014' प्रदान किया। इन्हें आन्ध्र प्रदेश विज्ञान अकादमी के सदस्य के रूप में चयनित किया गया है। ये वर्ष 2015 हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विशिष्ट योगदान हेतु कर्नल नगेन्द्र राव मेमोरियल अवार्डी हैं। प्रौद्योगिकी उपलब्धियों के साथ-साथ इनके राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं 'ईसीआईएल गौरव' गृहपत्रिका के प्रधान संरक्षक के कार्यकाल की अवधि में निगम ने अनेक महत्त्वपूर्ण एवं गौरवशाली पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इनके कुशल निर्देशन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा बड़े कार्यालयों की श्रेणी में वर्ष 2013-14, 2014-15 तथा 2015-16 की अवधि में निरंतर राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार) एवं 2015-16 में निगम की हिन्दी गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' को प्रकाशित पत्रिकाओं की श्रेणी में 'उत्तम पत्रिका' पुरस्कार से सम्मनित किया गया है।

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से
सुखद, स्वस्थ एवं गौरवमयी जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति;
प्रधान संरक्षक, 'ईसीआईएल गौरव'

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद- 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121055, 27182206
फैक्स: +91-40-27122535
ई-मेल: cmd@ecil.co.in
सीआईएन CIN: U32100TG1967GOI001149

प्रधान संरक्षक की कलम से.....

'ईसीआईएल गौरव' अंक-8 'ई-अभिशासन' विशेषांक का प्रकाशन गौरव का विषय है। हमारा निगम नाभिकीय, सुरक्षा प्रणाली, रक्षा, वांतरिक्ष प्रणाली, दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-अभिशासन अनुप्रयोग, उपकरण तथा अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। अभी तक 'ईसीआईएल गौरव' के विगत सात अंक विभिन्न महत्त्वपूर्ण प्रणालियों, उत्पादों तथा पुरस्कारों एवं अन्य गतिविधियों पर आधारित रहे हैं। हमारा यह प्रयास है कि पत्रिका का प्रत्येक अंक 'विशेषांक' आधारित हो। इस अंक में हम पाठकों को ई-अभिशासन से संबंधित विभिन्न अनुप्रयोगों से परिचित कराएंगे। विगत वर्ष ईसीआईएल को इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में उच्च कोटि की व्यवसाय उत्कृष्टता के लिए 'विनिर्माण एवं प्रविधि' श्रेणी में वर्ष 2016 के लिए 'इन्स्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया) उद्योग उत्कृष्टता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार को कोलकाता में आयोजित एक भव्य समारोह में मैंने प्राप्त किया। निश्चित रूप से ईसीआईएल के लिए यह गर्व का विषय है। इस सम्मान को प्राप्त करने के लिए किए गए परिश्रम के लिए ईसीआईएल का प्रत्येक कार्मिक प्रशंसा का पात्र है। विश्वास है कि उपलब्धियों का यह क्रम निरंतर इसी प्रकार बना रहेगा।

वैज्ञानिक क्षेत्र में अपने गहन अनुसंधान एवं विकास पर आधारित अनुभवों के अनुसार मेरी यह व्यक्तिगत मान्यता है कि किसी भी देश के विकास के लिए भाषा एवं विज्ञान में सामंजस्य होना आवश्यक है। आज विश्व में वही देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं जिन्होंने अपना वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास अपने देश की भाषा में किया है। ई-अभिशासन के क्षेत्र में, विशेष रूप से भारत निर्वाचन आयोग, मध्य प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग तथा छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग के लिए इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) मैनुअल का हिन्दी संस्करण प्रकाशित करके उल्लेखनीय कार्य किया गया है। मुख्यालय के साथ-साथ हमारे आंचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों में भी राजभाषा नीति एवं संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन सुचारु रूप से किया जा रहा है। मैं 'ईसीआईएल गौरव' के माध्यम से समस्त आंचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संवैधानिक दायित्वों के प्रति कर्त्तव्य निष्ठा की प्रशंसा करता हूं।

शुभकामनाओं के साथ

जय हिन्द

देवाशीष दास
(देवाशीष दास)

यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक मिलकर ही अतिथि का स्वागत करना चाहिए- हितोपदेश

किशोर रुंगटा
निदेशक (वित्त)

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद- 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121522, 27182216
फैक्स: +91-40-27137509
ई-मेल: dirfin@ecil.co.in
सीआईएन CIN: U32100TG1967GOI001149

शुभकामना संदेश

'ईसीआईएल गौरव' अंक-8 'ई-अभिशासन' विशेषांक का प्रकाशन हर्ष का विषय है। राजकीय तंत्र एवं प्रशासनिक व्यवस्था में ई-अभिशासन का विशेष महत्त्व है। इस वर्ष हमें अपनी सृजनात्मक क्षमताओं के माध्यम से राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण योजना 'मेक-इन-इंडिया' एवं 'डिजिटल इंडिया' को सफल बनाने में पूर्ण समर्पित भाव से योगदान देना है। आज के आर्थिक युग में भाषा एवं तकनीक में परस्पर सामंजस्य होना आवश्यक है। यही कारण है कि प्रत्येक नई तकनीक के विकास का आधार भाषा पर आधारित होता है। भारत सरकार की 'कौशल भारत विकास योजना' में भारतीय भाषाएं, विशेष रूप से राजभाषा हिन्दी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हमें अपनी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दों का समावेश करना चाहिए। जब हमारा शब्द-कोश बढ़ेगा तो वैज्ञानिक संकल्पनाओं के लेखन या आवश्यकता पड़ने पर अनुवाद के लिए शब्दों की समस्या नहीं पड़ेगी।

'ईसीआईएल गौरव' के विगत अंकों में लेखकों ने अपने जिस सशक्त रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है वह पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए आवश्यक है। पत्रिका के प्रकाशन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के परिवारजनों ने भी सहयोग दिया है। निश्चित रूप से वे भी प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े संपादन समिति के समस्त सदस्यों का परिश्रम प्रशंसनीय है। पत्रिका का यह अंक एक नई रचनाशीलता के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठकगणों से पत्रिका को और अधिक गुणताशील बनाने इस अंक पर भी प्रतिक्रियाएं अवश्य प्राप्त होंगी।

शुभकामनाओं के साथ

जय हिन्द

(किशोर रुंगटा)

वी.एस.बी. बाबु
निदेशक (कार्मिक) एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति;
संरक्षक, 'ईसीआईएल गौरव'

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद- 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27121484, 27182221
फैक्स: +91-40-27120033
ई-मेल: dirper@ecil.co.in
सीआईएन CIN: U32100TG1967GOI001149

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत गर्व का विषय है कि 'ईसीआईएल गौरव' के अंक-8 'ई-अभिशासन' विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के अनवरत प्रकाशित अंक ईसीआईएल के कार्मिकों एवं परिवार-जनों की कुशल रचनाधर्मिता के परिचायक हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी कार्य-संस्कृति और कार्य-प्रणाली उद्यम, उद्यमिता एवं उत्पादकता से ओत-प्रोत है। कार्य-संस्कृति के क्षेत्र को मात्र तकनीकी अनुसंधान एवं विकास तक ही सीमित न रखकर उसका विस्तार वैज्ञानिक, साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों में लेखन तक करना चाहिए। उद्यम को अपने जीवन में आधार बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। ''नास्ति उद्यमो समो बन्धु:'' अर्थात् उद्यम के सिवाय और दूसरा भाई नहीं है।

यह विशेषांक 'ई-अभिशासन' पर आधारित है। आज राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए 'ई-अभिशासन' के महत्त्व एवं उपयोगिता को भारत के कोने-कोने तक पहुंचाना है। व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के युग में भी समाज के प्रत्येक वर्ग का विकास ईसीआईएल का मुख्य लक्ष्य है। निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत ईसीआईएल ने अनेक महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं को पूर्ण किया है। हमारी यह मान्यता है कि ईसीआईएल की निगमीय सफलता एवं समाज कल्याण परस्पर निर्भर हैं। यही कारण है कि 'ईसीआईएल गौरव' के विशेषांकों में निगमीय सामाजिक दायित्व से संबंधित आलेख को प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। निश्चित ही आगे भी हमारा यह प्रयास इसी प्रकार बना रहेगा। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए निगम को बड़े कार्यालयों की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'राजभाषा शील्ड' (प्रथम पुरस्कार) तथा 'ईसीआईएल गौरव' को प्रकाशित पत्रिका की श्रेणी में 'उत्तम पत्रिका' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह हमारे लिए हर्ष का विषय है लेकिन इस सम्मान को निरंतर बनाए रखने के लिए हमें पत्रिका को और अधिक उत्कृष्टता की ओर ले जाना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सदैव प्रगति एवं उपलब्धियों के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आशा है कि इस अंक की रचनाओं पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं अवश्य प्राप्त होंगी।

शुभकामनाओं के साथ

जय हिन्द

वी एस बी बाबु
(वी.एस.बी. बाबु)

अनुराग कुमार
महाप्रबंधक (उपकरण एवं प्रणाली वर्ग)
तथा मार्गदर्शक, 'ईसीआईएल गौरव'

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड
भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
ईसीआईएल (पो.), हैदराबाद- 500 062
फोन (कार्या.): +91-40-27122734, 27182250
फैक्स: +91-40-27121611
ई-मेल: headig@ecil.co.in
सीआईएन CIN: U32100TG1967GOI001149

अपनी बात.....

'ईसीआईएल गौरव' के अंक-8 'ई-अभिशासन' विशेषांक के माध्यम से पुन: आप सबके साथ संवाद करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। किसी भी संगठन के कार्मिकों की रचनात्मक सृजनशीलता को बहुआयामी बनाने के लिए गृहपत्रिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ईसीआईएल यद्यपि नवीनतम प्रौद्योगिकियों के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहा है लेकिन ई-अभिशासन के क्षेत्र में निगम ने एक नई पहचान स्थापित की है। ई-अभिशासन के क्षेत्र में नवीनतम विकसित प्रौद्योगिकियों को राजभाषा हिन्दी के माध्यम से समाज के अंतिम छोर के नागरिक को सहज एवं सरल ढंग से पहुंचाना हमारा प्रमुख ध्येय है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हमारे आंचलिक शाखा एवं यूनिट कार्यालयों ने भी जिस प्रकार सफलतापूर्वक राजभाषा कार्यान्वयन को आगे बढ़ाया है, उनका प्रयास सार्थक एवं अभिनंदनीय है।

आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता से नियमित रूप राजभाषा हिन्दी बुलेटिन 'प्रयास' का प्रकाशन, आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई में राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन तथा आंचलिक कार्यालय, चेन्नै से हिन्दी में गृहपत्रिका 'प्रवेशांक' को प्रकाशित करना हमारी प्रगति का परिचायक है। राजभाषा गतिविधियों को पत्रिका में प्रकाशित करने में समस्त आंचलिक, शाखा एवं यूनिट कार्यालयों के अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति का योगदान प्रशंसनीय है। विगत अंक-7 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक पर राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थानों तथा वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं एवं शोध संस्थानों से समीक्षाएं प्राप्त हुईं। इस अंक में हमने उनके द्वारा दिए गए सुझावों का अनुपालन किया है। पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका एवं हमारे सुधी पाठकों के मध्य यह संवाद का क्रम निरंतर इसी प्रकार बना रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ

जय हिन्द

अनुराग

(अनुराग कुमार)

संपादकीय

कुछ लिखने से पहले.....

समाज का सर्वांगीण विकास हमारी प्रगति का आधार स्तंभ है। ईसीआईएल के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा प्रधान संरक्षक 'ईसीआईएल गौरव' श्री पी. सुधाकर जी की योजना थी कि 'ईसीआईएल गौरव' का प्रत्येक अंक एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस पत्रिका को इतना सारगर्भित बनाने में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। 'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए कामना है कि उनका वरदहस्त तथा आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहे। 'ईसीआईएल गौरव' का यह अंक 'ई-अभिशासन' पर आधारित विशेषांक है। अंक में निगम द्वारा विकसित एवं विनिर्मित उत्पादों से परिचित कराया जाएगा। इस विशिष्ट तकनीकी आलेख के लिए मैं श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक (उपकरण एवं प्रणाली वर्ग) तथा मार्गदर्शक 'ईसीआईएल गौरव' का हृदय से आभारी हूं। भारतवर्ष की संस्कृति 'ग्रामीण संस्कृति' से प्रभावित है। हरी-हरीतिमा से आच्छादित गांवों की प्राकृतिक सुंदरता को देखकर आज भी कुछ लिखने के लिए लेखनी उठ पड़ती है। जिन प्रारंभिक विद्यालयों से हम पढ़कर आए हैं उनका वंदन करना भी हमारा परम नैतिक दायित्व है। 'ईसीआईएल गौरव' यद्यपि तकनीकी आलेख प्रधान पत्रिका है फिर भी इस अंक में 'ग्रामीण संस्कृति' से संबंधित आलेख को प्रकाशित किया गया है। हमें अपने पर्यावरण को स्वस्थ एवं निर्मल बनाने का अथक परिश्रम करना चाहिए।

भाषा, समाज एवं प्रकृति का मानव जीवन के प्रारंभ से ही अत्यंत आत्मीय संबंध रहा है। हमारा जीवन भी आर्ष संस्कृति के आध्यात्मिक दर्शन से अनुप्राणित रहा है:-

आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वार रोदिभि: ।
अपत्यैरिव नीवारभाग्देयोचितैर्मृगै: ।।
सेकान्ते मुनिकन्याभिस्तत्त्जणोझित वृक्षकम्।
विश्वासाय विहंगामाल्बालाम्बु पायिनाम्।
आतपात्यय संक्षिप्त नीवारासु निषादिभि:।
मृगैर्वत्तित: रोमन्थमुट जॉगन भूमिषु।। **'कुमार संभव 1/50-52'**

प्रत्येक पत्रिका का संपादक सदैव कुछ नवीन करने के लिए अन्य पत्रिकाओं से प्रेरित होता रहता है। मैं भी उन समस्त संपादकों के प्रति आजीवन कृतज्ञ रहूंगा जिन्होंने मुझे कुछ नवीन करने के लिए प्रेरित किया। अनेक पत्रिकाएं मेरी संपादन यात्रा में पथ-प्रदर्शक हैं। मैं प्रो. मोहनलाल छीपा, माननीय कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं कि उन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर पत्रिका पर अपने विचार प्रेषित किए। अंतत:, मैं पत्रिका के इस अंक में योगदान देने वाले समस्त रचनाकारों के प्रति सादर आभार व्यक्त करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के लेखकों एवं पाठकों से उनका अमूल्य सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

इसी आशा एवं अभिलाषा के साथ.....

आपका

(डॉ. राजनारायण अवस्थी)
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक

हमारे प्रेरणा-स्तंभ वैज्ञानिक
डॉ. पी.के. अय्यंगर

(29 जून, 1931 - 21 दिसंबर, 2011)

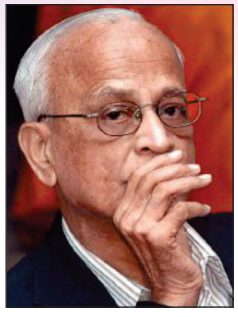

हमारा देश परमाणु शक्ति संपन्न देश है। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के लिए भारत विश्व के प्रमुख अग्रणी देशों में है। अपने देश को परमाणु ऊर्जा संपन्न राष्ट्र बनाने में डॉ. पी.के. (पद्मनाभ कृष्णगोपाल) अय्यंगर का योगदान अप्रतिम रहा है। इनका जन्म 29 जून, 1931 को तिरुवनंतपुरम (केरल) में हुआ था। इन्होंने 1952 में टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान (टीआईएफआर), मुंबई में कनिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक के रूप कार्य करना प्रारंभ किया। इसके बाद इन्होंने 1954 में परमाणु ऊर्जा स्थापना (जिसे बाद में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र नाम दिया गया), मुंबई में प्रवेश किया। वर्ष 1956 में इन्होंने कनाडा में भौतिक के नोबुल पुरस्कार विजेता बरट्रैम नेविली बाकहाउस के मार्गदर्शन में गहन शोधकार्य किया। परमाणु ऊर्जा विभाग में इन्होंने भौतिकी एवं रसायनविदों की एक अन्तरराष्ट्रीय स्तर की टीम का गठन किया। वर्ष 1960 में स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए 'पूर्णिमा' रिएक्टर में इनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा।

जब डॉ. राजा रमन्ना ने 1972 में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई के निदेशक का पदभार ग्रहण किया तब डॉ. पी.के. अय्यंगर को भौतिकी वर्ग का निदेशक बनाया गया। दिनांक 18 मई, 1971 में हुए पहले शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण पोखरन-1 में इन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया

जब डॉ. राजा रमन्ना ने 1972 में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई के निदेशक का पदभार ग्रहण किया तब डॉ. पी.के. अय्यंगर को भौतिकी वर्ग का निदेशक बनाया गया। दिनांक 18 मई, 1971 में हुए पहले शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण पोखरन-1 में इन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 1984 में इन्होंने भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। इनके निदेशकत्व में ध्रुव रिएक्टर का निर्माण कार्य पूरा हुआ। इन्होंने अनुसंधान संस्थानों में विकसित प्रौद्योगिकी को औद्योगिक रूप में समावेशित करने के लिए बीएआरसी में 'प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कक्ष' की स्थापना की। वर्ष 1990 में इनको भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। डॉ. अय्यंगर को न्यूक्लियर पॉवर कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल), मुंबई का भी अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इनके ही नेतृत्व में नरौरा और काकरापार में दो नए परमाणु रिएक्टरों ने कार्य करना प्रारंभ किया। भारी पानी नाभिकीय ईंधन तथा विशेष नाभिकीय पदार्थों के अधिक उत्पादन पर इन्होंने विशेष बल दिया।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास के लिए डॉ. पी.के.अय्यंगर को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्होंने वैज्ञानिक सलाहकार, केरल सरकार; बोर्ड-सदस्य, मनोबल टेक्नॉलॉजी डेवलपमेन्ट सेन्टर; अध्यक्ष, भारतीय नाभिकीय सोसाइटी के पदों को सुशोभित किया।

प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मानः

- शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (1971)
- पद्म भूषण (1975)
- भौतिक विज्ञान के लिए फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री पुरस्कार (1981)
- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा प्रायोगिक भौतिकी के लिए 'रमन सेन्टेनरी' मेडल (1988)
- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा प्रायोगिक भौतिकी के लिए 'भाभा मेडल' (1990)
- भारतीय भौतिकी संघ द्वारा आर.डी. बिड़ला पुरस्कार (1992)
- जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार (1993)
- होमी भाभा मेडल (2006)

परमाणु ऊर्जा विभाग में डॉ. पी.के. अय्यंगर के योगदान के प्रति राष्ट्र सदैव कृतज्ञ रहेगा।

ईसीआईएल के बढ़ते कदम
सम्मान एवं पुरस्कार

सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'स्कोप पुरस्कार'

ईसीआईएल को सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट एवं अप्रतिम योगदान के लिए संस्थागत श्रेणी-III के अंतर्गत वर्ष 2014-2015 के लिए 'स्कोप पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 11-04-2017 को आयोजित एक भव्य समारोह में यह पुरस्कार श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को प्रदान किया। इस महत्त्वपूर्ण पुरस्कार का मूल्यांकन 'डिलॉइट टॉच तोहमास्तु एलएलपी' द्वारा निर्धारित बिन्दुओं के आधार पर किया गया है। इसके निर्णायक मंडल में श्री आर.सी. लाहोटी, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश; पद्म भूषण मूसा राजा, पूर्व सचिव, भारत सरकार; पद्म भूषण एम.बी. अत्रेय, लब्ध प्रतिष्ठ प्रबंधन परामर्शदाता; श्री अरविन्द पान्डेय, पूर्व अध्यक्ष, एसएआईएल तथा श्री सी. फुन्सोग, पूर्व अध्यक्ष, पीईएसबी हैं। डॉ. शेखर बसु, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग ने श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल को इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

'आईईआई उद्योग उत्कृष्टता' पुरस्कार- 2016

ईसीआईएल को 'विनिर्माण एवं प्रविधि' श्रेणी में वर्ष 2016 के लिए 'इन्स्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स (इंडिया) उद्योग उत्कृष्टता' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में उच्च कोटि की व्यवसाय उत्कृष्टता के लिए प्रदान किया गया है। इस पुरस्कार को श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल ने 16-12-2016 को कोलकाता में आयोजित 31वीं राष्ट्रीय इंजीनियरिंग कांग्रेस में प्राप्त किया। ईसीआईएल को परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वांतरिक्ष, अनुसंधान विज्ञान, सुरक्षा, दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-अभिशासन के क्षेत्र में 50 वर्षों का अनुभव है। ईसीआईएल ने परमाणु ऊर्जा तथा सामारिक इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में आत्म निर्भरता प्राप्त करके निगमीय अभिशासन तथा सामाजिक दायित्व संबंधी गतिविधियों में कीर्तिमान स्थापित किया है।

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; 'आईईआई उद्योग उत्कृष्टता पुरस्कार' प्राप्त करते हुए

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौता

राजा रमन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र (आरआर कैट), इन्दौर में 'आईएमएस संसूचक' में प्रयोग किए जाने वाले उच्च वोल्टेज (एच वी)

श्री वी.वी. सत्यनारायण, प्रमुख, उपकरण एवं प्रणाली प्रभाग, ईसीआईएल (बाएं से तीसरे) तथा डॉ. पी.ए. नाईक, निदेशक, राजा रमन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र, इन्दौर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौता आदान-प्रदान करते हुए। साथ में (बाएं से दूसरे) डॉ. एस. सुरेश बाबु, उप महाप्रबंधक, ईसीआईएल

पल्स्ड पॉवर आपूर्ति की प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए ईसीआईएल के साथ समझौता किया। ईसीआईएल ने इस प्रौद्योगिकी को इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र, कल्पाक्कम के सहयोग से विकसित किया है। डॉ. पी.ए. नाईक, निदेशक, राजा रमन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र, इन्दौर तथा श्री वी.वी. सत्यनारायण, अपर महाप्रबंधक एवं प्रमुख, उपकरण एवं प्रणाली प्रभाग, ईसीआईएल ने इस समझौता को अपने-अपने संस्थानों की ओर से हस्ताक्षर किया।

एचवी पल्स्ड मोटर आपूर्ति एवं एचवीडीसी पावर सप्लाई आईएमएस संसूचक के महत्त्वपूर्ण उपकरण हैं। वर्तमान में ये उपकरण आयातित किए जाते हैं। इन उपकरणों के स्वदेशी तकनीक से विकसित करने के लिए ईसीआईएल ने आरआर कैट से संपर्क किया। न्यूनतम क्षति एवं अपेक्षित निष्पादन विशेषताओं के साथ छोटे आकार में उच्च वोल्टेज पॉवर आपूर्ति को विकसित करना एक बड़ी चुनौती थी। आरआर कैट की टीम ने अथक प्रयासों से दो पॉवर आपूर्ति को अपेक्षित विशिष्टताओं के साथ विकसित किया। पॉवर आपूर्ति को 45 दिनों तक अविरल प्रचालित कर इनका परीक्षण सफल पाया गया। इनमें समुद्री पत्तनों एवं हवाई अड्डों हेतु विस्फोटक संसूचक, नार्कोटिक्स, रासायनिक युद्ध संबंधी घटक तथा मादक औद्योगिक रसायन सम्मिलित हैं।

सीआईआई औद्योगिक नव-प्रवर्तन पुरस्कार

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) को अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान तथा इलेक्ट्रानिकी एवं संबंधित क्षेत्रों में नई प्रौद्योगिकियों के समावेशन हेतु वर्ष 2016 के लिए सीआईआई औद्योगिक नव-प्रवर्तन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अधिनिर्णायक सदस्यों ने प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्रों में ईसीआईएल

श्री अनिल मलहोत्रा, अपर महाप्रबंधक (बाएं से तीसरे) 'सीआईआई औद्योगिक नव-प्रवर्तन पुरस्कार' प्राप्त करते हुए

की उपलब्धियों एवं नव-प्रवर्तन की प्रशंसा की। इस पुरस्कार का अधिनिर्णय शैक्षिक क्षेत्र, अनुसंधान एवं विकास तथा उद्योग-विशेषज्ञों की अधिनिर्णायक समिति ने किया। ईसीआईएल की ओर से श्री अनिल मलहोत्रा, अपर महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली ने 08-11-2016 को श्री अनिल डी. सहस्त्रबुधे, अध्यक्ष, एआईसीटीई, नई दिल्ली से यह पुरस्कार प्राप्त किया।

'लक्ष्य' गुणता सर्कल टीम को सम उत्कृष्टता पुरस्कार-2016

ईसीआईएल के संचार प्रणाली वर्ग की 'लक्ष्य' गुणता सर्कल टीम को रायपुर में 17 से 19 दिसंबर, 2016 को आयोजित 'नेशनल कॉनवेन्शन ऑन क्वालिटी कॉन्सेप्ट्स' में सम उत्कृष्टता पुरस्कार-2016 प्रदान किया गया। लक्ष्य टीम ने 'वी/यूएचएफ ट्रान्ससीवर में माड्यूल्स को एकीकृत करने के लिए इन्डेक्स प्लन्जर सहित मेकैनिकल फिक्सर' को विकसित किया। टीम ने इस परियोजना को समय से विकसित करने के लिए अथक परिश्रम किया। इस परियोजना को ईसीआईएल के वरिष्ठ विशेषज्ञ अधिकारियों के समक्ष प्रदर्शित किया गया।

गुणता सर्कल टीम 'लक्ष्य' के सदस्य है:-

- श्री पी.एल. चक्रवर्ती, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक : समन्वयक
- श्री एन. ज्ञानप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक : विवाचक
- श्रीमती सी.एच. अरुणाकुमारी, वरि. तक. अधिकारी : टीम लीडर
- श्री ललित राही, तकनीकी अधिकारी : उप टीम लीडर
- श्रीमती एस. श्रीवाणी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सदस्य
- श्री समीर दुबे, तकनीकी अधिकारी, सदस्य

पुरस्कार प्राप्त करते हुए (बाएं से) श्रीमती एस. श्रीवाणी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी; श्रीमती सी.एच. अरुणाकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (दाएं से) श्री समीर दुबे, तकनीकी अधिकारी; श्री ललित राही, तकनीकी अधिकारी एवं श्री एन. ज्ञानप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

ईसीआईएल में राजा रमन्ना फेलो श्री चंद्रकांत पिथवा को पद्म श्री सम्मान

श्री चंद्रकांत पिथवा, को भारत सरकार द्वारा परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के लिए पद्म श्री सम्मान से सम्मानित किया

गया। ये भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई के इलेक्ट्रानिकी एवं उपकरणीकरण वर्ग तथा विनिर्माण एवं आटोमेशन वर्ग के निदेशक रह चुके हैं। इस समय श्री चंद्रकांत पिथवा, ईसीआईएल में राजा रमन्ना फेलो हैं।

नराकास (उपक्रम) के बड़े कार्यालयों की श्रेणी में राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार)

ईसीआईएल को वर्ष 2015-16 में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए बड़े कार्यालयों की श्रेणी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। उस पुरस्कार की श्री वाई. उदयभास्कर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बीडीएल तथा अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) ने श्री पी. सुधाकर, (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को प्रदान किया।

अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) से श्री पी. सुधाकर, अप्रनि, ईसीआईएल; बड़े कार्यालयों की श्रेणी में राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त करते हुए

श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) 'स्कोप' कार्यपालक बोर्ड के सदस्य

श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) को कार्यपालक बोर्ड का सदस्य चुना गया है। 'स्कोप' सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का एक शीर्ष निकाय है। 'स्कोप' के कार्यपालक बोर्ड के सदस्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा निदेशकगण होते हैं। 'स्कोप' कार्यपालक बोर्ड के सदस्य के रूप में श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) का कार्यकाल 01-04-2017 से 31-03-2019 तक रहेगा।

'ईसीआईएल गौरव' को 'उत्तम पत्रिका' पुरस्कार

ईसीआईएल की गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा वर्ष 2015-16 में प्रकाशित पत्रिका वर्ग में 'उत्तम पत्रिका' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार को

उत्तम पत्रिका पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक; श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन तथा 'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति के सदस्य

श्री वाई. उदय भास्कर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बीडीएल तथा अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) ने श्री पी. सुधाकर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा प्रधान संरक्षक 'ईसीआईएल गौरव' तथा श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक एवं मार्गदर्शक 'ईसीआईएल गौरव' को प्रदान किया। इस अवसर पर श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन, हिन्दी अनुभाग के अधिकारी तथा संपादन समिति के सदस्यों सहित नराकास (उपक्रम) के तत्त्वावधान में वर्ष 2015-16 में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता उपस्थित थे।

ईसीआईएल को इनकी उपलब्धियों पर गर्व है

श्री ब्रज बंधु नायक; प्रमुख, एपीएसडी को पी-एच.डी. (Ph.D.) की उपाधि

डॉ. ब्रज बंधु नायक; प्रमुख, ऐन्टेना उत्पाद एवं साटकॉम प्रभाग (एपीएसडी) को कंप्यूटर साइंस एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में 'अप्लिकेशन आफ न्यूरल नेटवर्क्स फार प्रीडिक्शन आफ वोलाटिलिटी आफ इंडियन स्टॉक मार्केट (Application of Neural Networks for Prediction of Volatility of Indian Stock Market)' विषय पर नार्थ ओड़िसा युनिवर्सिटी, वारिपदा द्वारा पी-एच.डी.(Ph.D.) की उपाधि प्रदान की गई। श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल ने डॉ. ब्रज बंधु नायक; प्रमुख, ऐन्टेना उत्पाद एवं साटकॉम प्रभाग (एपीएसडी) को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं दी हैं।

यूरेनियम कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल), जादुगुड़ा में आयोजित 32वीं परमाणु ऊर्जा विभाग खेल-कूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2016-17 में ईसीआईएल की ओर से निम्नलिखित अधिकारियों ने पदक प्राप्त किया

श्री एस.सी. सरकार
वरिष्ठ बिक्री अधिकारी (क्रय)
इलेक्ट्रानिक्स विनिर्माण एवं सेवा प्रभाग (ईएमएसडी)
5 किमी पैदल चाल प्रतियोगिता: तृतीय स्थान

सुश्री शर्मिला मुर्मू
सहायक तकनीकी अधिकारी
व्यापार प्रणाली प्रभाग (बीएसडी)
लंबी कूद प्रतियोगिता: तृतीय स्थान

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के तत्त्वावधान में वर्ष 2015-16 में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ईसीआईएल का प्रतिनिधित्व करते हुए पुरस्कार प्राप्त किया

1.अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

तीन सदस्यों की टीम: प्रथम स्थान

- **श्री सुनील कुमार,** लेखा सहायक,
  उपकरण एवं प्रणाली वर्ग, वित्त एवं लेखा
- **सुश्री शर्मिला मुर्मू,** सहायक तकनीकी अधिकारी
  व्यापार प्रणाली प्रभाग (बीएसडी)
- **श्री अंकूर कुमार,** तकनीकी अधिकारी
  सर्वो प्रणाली प्रभाग (एसएसडी)

2.अनुवाद प्रतियोगिता

श्री संजय कुमार चौधरी
हिन्दी अनुवादक (हिन्दी अनुभाग), **तृतीय स्थान**

श्री शैलेन्द्र कुमार
तकनीकी अधिकारी, आरआईडी (अन्य अनुभाग), **तृतीय स्थान**

आपत्तियों को पराजित करना ही जीवन के आनंद की पराकाष्ठा है- शोपेनहावर

ईसीआईएल: इलेक्ट्रानिकी में उत्कृष्टता के स्वर्ण जयंती वर्ष में

ई-अभिशासन के क्षेत्र में ईसीआईएल

*अनुराग कुमार**

संकल्पना: ''सामरिक इलेक्ट्रानिकी में देश को आत्म-निर्भरता प्राप्त करने हेतु योगदान देना''

संकल्प: ''परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वांतरिक्ष, नागर विमानन, सुरक्षा तथा सामरिक, आर्थिक और सामाजिक महत्त्व के अन्य क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए विशेष रूप से सामरिक इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति को सशक्त करना''

इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम)

उल्लेखनीय उपलब्धि

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) की स्थापना मूल रूप से परमाणु ऊर्जा विभाग के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों की सहायता के लिए 1967 में की गई थी। समय बीतने के साथ ईसीआईएल ने महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे- रक्षा, वांतरिक्ष, सुरक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-अभिशासन के क्षेत्र में काम करना शुरू किया। ईसीआईएल को भारत में इलेक्ट्रानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक पथ प्रदर्शक के रूप में जाना जाता है। ईसीआईएल ने कई उत्पाद और तकनीकों के लिए पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाई है। ईसीआईएल द्वारा तैयार किए गए उत्पादों में सालिड स्टेट टेलीविजन (ईसी टीवी), डिजिटल कम्प्यूटर, कॉकपिट वायस रिकॉर्डर (जो ब्लैक बॉक्स के नाम से जाना जाता है), प्रोग्रामकारी लॉजिक नियंत्रक, चन्द्रयान और मंगलयान अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए डीप स्पेस नेटवर्क ऐन्टेना और इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) शामिल हैं।

मतदान प्रक्रिया : तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्रचलित मतदान पद्धति	इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम)
1.	चुनाव अधिकारी द्वारा मतदाता सूची के अनुसार मतदाता की पहचान।	प्रचलित पद्धति अपनाई गई है।
2.	मतदाताओं की उंगली पर चुनाव अधिकारी द्वारा अमिट स्याही का चिह्न लगाना।	प्रचलित पद्धति अपनाई गई है।
3.	मतदाता को मतपत्र देना।	मतपत्र की आवश्यकता ही नहीं है।
4.	मतदाता द्वारा मतपत्र पर मोहर लगाना, मोड़ना और चुनाव अधिकारी के सामने मतपेटी में मत डालना।	मतदाता को चयन किये गये प्रत्याशी से संबंधित बटन को दबाना होता है। इस प्रकार मत रिकॉर्ड हो जाता है।
5.	चुनाव अधिकारी को यह निश्चित करना होता है कि मतपत्र मतदान पेटी में उचित ढंग से डाला गया है।	चुनाव अधिकारी को मत डाले जाने का पता "लैम्प" द्वारा लगता है।
6.	भरी हुई मतपेटियों के स्थान पर नई मतपेटियों का रखा जाना।	मतपेटियों की आवश्यकता ही नहीं होती।
7.	प्रत्याशियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मतपेटी सीलबंद की जाती है तथा बचे गये मतपत्रों की तालिका बनाई जाती है।	मतपत्रों के बचने का प्रश्न ही नहीं उठता। केवल "मत रिकॉर्डिंग मशीन" को प्रत्याशियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सीलबंद किया जाता है।

***श्री अनुराग कुमार**, महाप्रबंधक; उपकरण एवं प्रणाली वर्ग तथा निगमीय अनुसंधान एवं विकास हैं। ये राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर से इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरी में स्नातक हैं। इनको व्यवसाय विकास, परियोजना विकास एवं इंजीनियरी, संयंत्र इंजीनियरी, असेम्बली तथा परीक्षण के क्षेत्र में 25 वर्ष से अधिक का अनुभव है।

इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) की सफलता

भारत विश्व का एक विशालतम और सर्वाधिक सक्रिय लोकतंत्र है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवां और जनसंख्या की दृष्टि से

दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। दुनिया की कुल आबादी का छठवां हिस्सा, अर्थात् सवा सौ करोड़ लोग भारत में बसते हैं। यहां हर पांच वर्ष बाद नई लोकतांत्रिक सरकार के गठन के लिए संसदीय चुनाव कराए जाते हैं। यहां संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और यूरोपीय संघ दोनों की मिली-जुली कुल आबादी से भी अधिक अर्थात् लगभग 82 करोड़ लोग मतदान करने के अपने लोकतांत्रिक अधिकार के पात्र हैं। मतदान की यह प्रक्रिया विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए देश भर में लगभग 9 लाख, 30 हजार मतदान केन्द्रों की आवश्यकता होती है। किसी भी देश की लोकतांत्रिक आचार संहिता का मूल आधार स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हैं। इसमें निष्पक्ष, त्रुटिहीन और पारदर्शी मतदान प्रक्रिया और परिणाम शामिल हैं, जिनकी स्वतंत्र रूप से जांच की जा सकती है। परंपरागत मतदान इनमें से कई लक्ष्यों को पूरा करते हैं, फिर भी 'बोगस मतदान' और 'बूथ कैप्चरिंग' जैसे चुनाव प्रक्रिया संबंधी कदाचार प्रजातंत्र की भावना के लिए गंभीर खतरा हैं।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दो सार्वजनिक उपक्रमों के साथ मिलकर अभिकल्पित और रूपांकित इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) का प्रयोग, देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। जिन दो सार्वजनिक उपक्रमों ने ईवीएम की डिजाइन करने में भारत चुनाव आयोग के साथ सहयोग किया, उनमें से एक है- हैदराबाद स्थित, इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल)। वस्तुतः, ईसीआईएल ने ही 1980 में इस इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) को सबसे पहले विकसित किया था। ईवीएम ने पारंपरिक मतपत्र प्रणाली का स्थान लिया और इस तरह भारत में चुनाव संबंधी प्रक्रिया में क्रान्ति का सूत्रपात किया।

(तत्कालीन) प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस मशीन की कार्यप्रणाली की सराहना करते हुए (तत्कालीन) मुख्य चुनाव आयुक्त के अनुरोध पर 1984 में दो विधानसभा क्षेत्रों आन्ध्र प्रदेश (अब तेलंगाना राज्य) के शादनगर और केरल के परूर के लिए प्रायोगिक आधार पर इनका प्रयोग करने की अनुमति दी। इनके सफल प्रयोग के बाद 1989-90 में पहली बार भारत निर्वाचन आयोग ने ईसीआईएल और बीईएल दोनों से क्रमशः 75-75 हजार मशीनें प्राप्त की और उनका संसद तथा

विधानसभा के उपचुनावों में शहरी क्षेत्रों के लिए प्रयोग करना शुरू किया। आरंभ में कुछ राजनीतिक दलों ने ईवीएम के प्रयोग पर कानूनी तौर पर आपत्तियां उठाईं। यद्यपि, भारत चुनाव आयोग ने न्यायालयों से इसके प्रयोग के लिए निर्देश प्राप्त कर लिए और 'लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम' में संशोधन द्वारा ईवीएम के प्रयोग की अनिवार्यता सुनिश्चित कर ली।

कानून में संशोधन के बाद निर्वाचन आयोग ने 1999 में गोवा विधानसभा चुनावों के लिए ईसीआईएल द्वारा विनिर्मित इलेक्ट्रानिक मतदान मशीनों का प्रयोग करके इलेक्ट्रानिक मतदान सफलतापूर्वक करवाया गया। इस सफलता से प्रेरित होकर चुनाव आयोग ने वर्ष 2004 के आम चुनाव सफलतापूर्वक करवाने के लिए पर्याप्त संख्या में इलेक्ट्रानिक मतदान मशीनें का प्रयोग करने का विचार किया। वर्ष

2005-2006 तक ईसीआईएल ने 7.5 लाख इलेक्ट्रानिक मतदान मशीनों की आपूर्ति की। वर्ष 2009 में अप्रैल और मई में आयोजित चुनावों में 8,28,000 मतदान केन्द्रों में 13.6 लाख इलेक्ट्रानिक मतदान मशीनों का प्रयोग किया गया।

इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) की प्रमुख विशेषताएं

- प्रयोग में सरल और इनके साथ छेड़छाड़ असंभव है
- अवैध मतों की संभावना को समाप्त करती है
- मतगणना की गति तेज होती है
- अल्कलाइन बैटरी पर चलने के कारण, विद्युत आपूर्ति रहित क्षेत्रों में प्रयोग के लिए उपयुक्त है
- दृष्टिहीनों के लिए इस पर ब्रेल लिपि मार्किंग होती है
- ईवीएम का बार-बार प्रयोग किया जा सकता है
- आकार में छोटी और भार में हल्की होने से इनको नावों द्वारा या घोड़ों या खच्चरों की पीठ पर भी लाद कर ले जाया जा सकता है
- इलेक्ट्रानिक मतदान मशीनों की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि इनके प्रयोग से लाखों-करोड़ों मतपत्रों की छपाई की परेशानी और खर्च से छुटकारा मिलता है
- इस मशीन में अब मतदाता 'उपर्युक्त में कोई नहीं' अर्थात् 'None of the above (NOTA)' का प्रयोग भी कर सकते हैं

ईवीएम दो इकाइयों से निर्मित होती है- एक नियंत्रण इकाई (कंट्रोल यूनिट) और दूसरी मतदान इकाई (बैलेट यूनिट)। दोनों इकाइयां पांच मीटर लंबे तार से जुड़ी होती हैं। यह पूरी तरह से एक स्वदेशी तकनीक है। इस मशीन की सफलता के पीछे समर्पित दल की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, जो लगातार इसमें सुधार करता रहा है। विशेष बात यह है कि अब तक दुनिया के किसी भी अन्य देश ने आम चुनावों के लिए इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन का प्रयोग नहीं किया है। भारत में स्वतंत्र रूप से इस इलेक्ट्रानिक तकनीक का आविष्कार और निर्माण किया गया है।

मतदाता सत्यापन पेपर आडिट ट्रायल (वीवी पैट)

मतदाता सत्यापन पेपर आडिट ट्रायल (वीवी पैट) प्रिन्टर के माध्यम से निर्वाचन प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया गया है।

प्रयोजन

- मतदाताओं को सांविधिक निर्वाचन आवश्यकता हेतु मतदाताओं के लिए पेपर ट्रायल

- इसका उपयोग इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) के साथ

सहायक उपकरण के रूप में किया जाता है
- यह वर्तमान में प्रयोग में लाई जा रही तथा आगामी समुन्नत ईवीएम डिजाइन के लिए उपयुक्त है

विशेष आकर्षण

- यह जिस प्रत्याशी के पक्ष में मतदान किया गया है उसका क्रमांक, नाम तथा चुनाव चिह्न संबंधित बैलट पर्ची में मुद्रित कर सकता है
- मुद्रित बैलट पर्ची मतदाता को 7 सेकंड दिखाई देगी। इसके बाद बैलट पर्ची कट कर वीवी पैट इकाई के संग्रहण (कलेक्शन) बाक्स में गिर जाएगी
- संग्रहण बॉक्स की क्षमता 1500 बैलट पर्ची है
- यह 22.5 वोल्ट बैटरी पैक से प्रचालित होती है तथा सीलिंग किए जाने का प्रावधान है
- मुद्रित पर्ची की मुद्रण-गुणता 5 वर्ष तक यथावत रहेगी

प्रत्याशी के एजेन्ट ईवीएम के नियंत्रण यूनिट का डिस्प्ले देख सकते हैं

भारत निर्वाचन आयोग ने विधानसभा एवं लोकसभा के लिए होने वाली मतगणना के दौरान ईवीएम की कन्ट्रोल यूनिट पर परिणाम बटन दबाते समय प्रत्याशियों के एजेन्ट को डिस्प्ले पैनल दिखाने के निर्देश दिए हैं। मतगणना पर्यवेक्षक यह सुनिश्चित करेंगे कि एजेन्टों को डिस्प्ले पैनल दिखाया जाए ताकि वे प्रत्येक प्रत्याशी के पक्ष में डाले गए मत की गणना कर सकें जो नियंत्रण यूनिट के डिस्प्ले पैनल पर प्रदर्शित होगी।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यकता होने पर मतगणना सहायक को नियंत्रण यूनिट को इस प्रकार उठाकर रखना होगा कि डिस्प्ले पैनल न केवल मतगणना का पर्यवेक्षक बल्कि मतगणना टेबल पर बैठे दूसरे मतगणना सहायक माइक्रो आब्जर्वर और जाली की दूसरी ओर बैठे प्रत्याशी के एजेन्ट को भी दिखाई दे। यदि कोई एजेन्ट ईवीएम पर एक बार से अधिक परिणाम देखने की इच्छा व्यक्त करेगा तो मतगणना पर्यवेक्षक को उसकी संतुष्टि के लिए पुन: परिणाम दिखाना होगा। आयोग ने यह भी निर्देश दिए हैं कि जब प्रत्येक मतदान केन्द्र की गणना शीट निर्वाचन अधिकारी की मेज पर आ जाती है तो निर्वाचन अधिकारी का कर्त्तव्य होगा कि प्रत्याशी मतगणना एजेन्ट को प्रत्येक मतदान केन्द्र के प्रत्येक प्रत्याशी के परिणाम को नोट करने दें।

मतगणना के संबंध में आयोग ने जो अन्य निर्देश जारी किए हैं उसके अनुसार चक्रवार परिणाम पत्रक की प्रतियां निर्वाचन अधिकारी द्वारा प्रत्याशियों तथा उनके चुनावी एजेन्ट को दी जाएगी। चक्रवार परिणाम पत्रक की प्रतियां उस चक्र का परिणाम निर्वाचन अधिकारी द्वारा घोषित होते ही दी जाएगी। आयोग के निर्देशानुसार मतगणना की पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी करवाया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए, मतगणना प्रक्रिया सम्पन्न होने के पश्चात् निर्वाचन अधिकारी द्वारा वीडियोग्राफी की एक सीडी प्रत्येक प्रत्याशी या उसके चुनावी एजेन्ट को नि:शुल्क दी जाएगी। आयोग ने प्रत्येक जिला निर्वाचन अधिकारी और प्रेक्षक को इस निर्देश का कड़ाई से पालन करवाने को कहा है।

प्रमाणिका (सहज पहचान सत्यापक)

प्रमाणिका, निवास पहचान (आरआई) कार्ड या मैरीन फिशर्स आईडी (एमएफआईडी) कार्ड का सत्यापन करता है। इन कार्डों में बायोमीट्रिक तथा डेमोग्रैफिक डाटा संरक्षित रहते हैं। डाटा को सुरक्षित परिवेश में तैयार किया जाता है। सत्यापन करने वाले प्राधिकारी स्मार्ट कार्ड के माध्यम से डाटा को पढ़ सकते हैं। ऐसा करने के लिए स्मार्ट कार्ड को परस्पर यथार्थता और डिजिटल हस्ताक्षर सत्यापन करने के लिए वी.ए. कार्ड को प्रस्तुत करना पड़ता है। इसी प्रकार कार्ड होल्डर की लाइव फिंगर को स्टोर किए गए बायोमीट्रिक्स से मैच कराया जा सकता है। प्रमाणिका द्वारा स्मार्ट कार्ड में निम्नलिखित सूचनाएं पढ़ी और प्रदर्शित की जा सकती हैं : जैसे; एनआईएन, सीएसएन, सिग्नेचर डाटा, अंग्रेजी और स्थानीय भाषा में अपना नाम, पता, माता-पिता का नाम तथा फोटो, फिंगरप्रिन्ट, जन्म स्थान, स्मार्ट कार्ड जारी करने का स्थान, वैधता, जन्म तिथि एवं लिंग इत्यादि।

प्रौद्योगिकी

प्रमाणिका को अत्याधुनिक एम्बेडेड हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर से विनिर्मित किया जाता है। प्रमाणिका पूरी तरह सुरक्षित एवं संरक्षित (टेम्पर प्रूफ) है। इसको किसी प्रकार खोलने से 'सेक्योर्ड अथेन्टीकेशन माड्यूल' सहित सभी सॉफ्टवेयर नष्ट हो जाते हैं। यह प्रमाणिका दो स्मार्ट कार्ड रीडर और दो सैम कार्ड से युक्त होती है। इस युक्ति में एआरएम 9 प्रॉसेसर होता है। प्रयोक्ता (यूजर) के सत्यापन के लिए व्यक्तिगत पहचान और सत्यापन (पीआईवी) प्रमाणित बायोमीट्रिक फिंगरप्रिन्ट का प्रयोग किया जाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रामाणिक एआरएम प्रॉसेसर को अत्यंत उच्च स्तर के औद्योगिक और सामान्य इम्बेडेड एप्लिकेशन के बचाव की आवश्यकता होती है। अत्यंत सुरक्षित युक्ति बनाने के लिए प्रमाणिका बहुत उपयोगी है। प्रमाणिका की सुरक्षा क्षमता, पॉइंट-ऑफ-सेल (पीओएस), बायोमीट्रिक्स एवं सुरक्षित रेसिडेंसियल गेटवे युक्ति इसको अत्यंत मजबूत एवं 'लागत प्रभावी' बनाती है।

फीचर्स

- अर्गोनॉमिक डिजाइन
- इनबिल्ट स्मार्ट कार्ड रीडर
- कॉम्पैक्ट एवं सशक्त

- ग्रैफिक डिस्प्ले सपोर्ट करने वाला
- स्व-नैदानिक फीचर्स
- कॉम्पैक्ट फर्म फैक्टर

तकनीकी विनिर्देश	
सीपीयू	: 32 बिट प्रॉसेसर
मुख्य मेमोरी	: डीआरएएम - 64 एमबी से 128 एमबी तक
सेकेन्डरी मेमोरी	: 512 एमबी - एनएएनडी फ्लैश
स्टोरेज	: माइक्रो एसडी मेमोरी 2 जीबी
डिस्प्ले प्रणाली	: टच स्क्रीन सहित कलर एलसीडी टीएफटी 4.3
स्मार्ट कार्ड	: 2 - चैनेल, आईएसओ - 7816
सैम इन्टरफेस	: 2 - चैनेल, आईएसओ - 7816
एफपीआर विनिर्देश	: ऑप्टिकल बायोमीट्रिक स्कैनर
ऑपरेटिंग वोल्टेज	: ली - पॉल बैटरी 3.7 वोल्ट @4000 mAh
ज्यामिति (जियोमेट्री)	: 177x83x21 मिमी

प्रमाणिका कॉम्पैक्ट, पोर्टबल और बैटरी ऑपरेटेड युक्ति से ऑफलाइन फील्ड वेरिफिकेशन में 5000 से अधिक कार्ड का डाटा सत्यापित किया जा सकता है। इसकी कार्यप्रणाली यूजरफ्रेंडली है तथा चार्ज करने के बाद इसका एलसीडी टचस्क्रीन 8 घंटे से अधिक काम करता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग

- पहचान एवं फिंगरप्रिन्ट सत्यापन
- सीमा नियंत्रण
- कानून व्यवस्था लागू करना
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली
- पीओएस अनुप्रयोग
- मध्याह्न भोजन मॉनीटरन प्रणाली

प्रज्ञा: बहु प्रयोजनीय संचारित टर्मिनल

प्रज्ञा एक स्मार्ट, कॉम्पैक्ट, बहु प्रयोजनीय संचारित टर्मिनल है। इसकी मल्टी टचस्क्रीन डिवाइस 7 इन्च है। यह बायोमीट्रिक प्रामाणिकता के साथ संरक्षित मोबाइल डाटा संचारित करता है। यह एसटीक्यूसी प्रमाणित ऑप्टिकल बायोमीट्रिक स्कैन के साथ एकीकृत होता है। इसका उपयोग सुरक्षा, अभिगम नियंत्रण एवं बहुत से अन्य अनुप्रयोगों

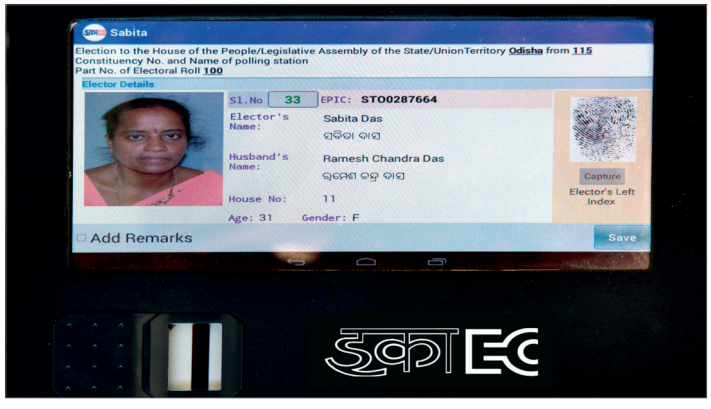

के लिए किया जाता है। प्रज्ञा उच्च गति वाले 32 बिट क्वाड कोर प्रॉसेसर, बड़े भंडारण तथा जीपीआरएस/एलएएन/वाई-फाई संचार माड्यूलों के साथ अभिकल्पित है। यह मोबाइलिटी, बहु प्रयोजनीयता तथा डाटा सुरक्षा उपलब्ध कराती है ताकि आप विभिन्न क्षेत्रों में किसी भी समय एवं कहीं भी विश्वसनीय सेवाएं दे सकें। इसे कम भार के साथ विकसित किया गया है तथा यह बैटरी से संचालित होने वाला टर्मिनल है। यह ई-अभिशासन के सभी प्रकार के अनुप्रयोगों के लिए पूर्णतया उपयुक्त है।

संपूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी समाधान

ईसीआईएल राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सामरिक एवं तकनीकी परियोजनाओं के लिए प्रारंभ से ही संपूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी समाधान की डिजाइनिंग एवं आपूर्ति करता रहा है। इनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं:-

एमएसटीडी परियोजना

वर्तमान में प्रचालित हो रही ई- अभिशासन परियोजना के अंतर्गत

महाराष्ट्र सरकार के लिए बिक्री कर प्रचालन हेतु राज्य-व्यापी आटोमेशन को बीओओआर मॉडल अधीन 8 वर्ष के लिए परिपूर्ण किया गया। यह परियोजना आधुनिकतम तकनीक से युक्त प्राथमिक/द्वितीयक डेटा केन्द्र, आपदा रिकवरी केन्द्र, एमएसटीडी के समस्त 40 कार्यालयों में आटोमेशन, दोहरी अतिरिक्त नेटवर्क अवसंरचना, विभाग के समस्त अधिकारियों के लिए क्लाइंट प्रणाली, सुविधा प्रबंधन सेवाओं का प्रावधान तथा अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर का रोल आउट एवं कार्यान्वयन उपलब्ध कराती है।

ओड़िसा चेकगेट परियोजना

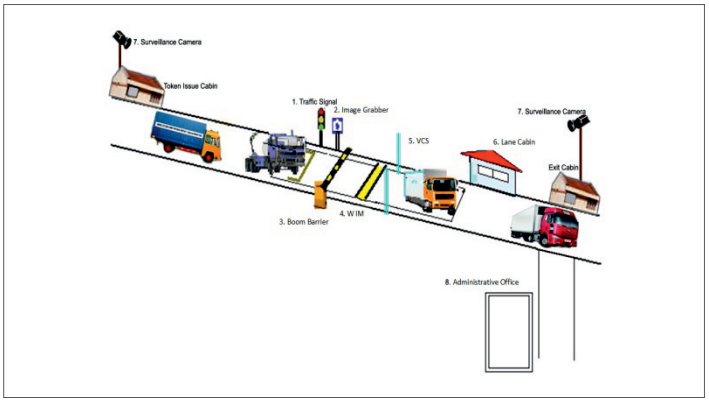

ओड़िसा सरकार के लिए दो राज्यों में यूनिफाइड चेक गेट के आटोमेशन के लिए ई-चेकगेट परियोजना पर कार्य प्रगति पर है। इस परियोजना में आधुनिकतम प्रौद्योगिकी के माध्यम से चलती गाड़ी का वजन करना (डब्ल्यू आईएम), वाहन वर्गीकरण प्रणाली (वीसीएस), बूम बैरियर्स, सीसीटीवी कैमरा, गाड़ी की लंबाई और चौड़ाई मापना तथा उपयुक्त प्रभार की गणना की जा सकती है। इस परियोजना में बहु- उद्देश्यीय अनुप्रयोग साफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है।

प्रणाली एकीकरण, अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर विकास तथा प्लेटफार्म अभिगमन सेवाएं

ईसीआईएल विभिन्न सामरिक क्षेत्र के ग्राहकों के लिए आईसीटी प्रणाली एकीकृत सेवाएं, अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर विकास, कार्यान्वयन एवं प्लेटफार्म अभिगमन सेवाएं तथा प्रशिक्षण और व्यापक सहायता सेवाएं उपलब्ध कराता है। अन्य सेवाओं में उच्च निष्पादन क्लस्टर्स, सर्वर, क्लाइंट्स तथा भंडारण प्रौद्योगिकी के साथ हार्डवेयर अवसंरचना समेकन, डाटा सेन्टर। आपदा रिकवरी तथा नेटवर्किंग समाधान सम्मिलित हैं। इस परियोजना में सूचना-प्रौद्योगिकी (आई टी) हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर तथा भंडारण समाधान के लिए अनेक राष्ट्रीय तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सहयोग लिया जा रहा है।

ईसीआईएल का राजभाषा परिवार

मुख्यालय, हैदराबाद

श्री एम. नरसिम्हा चारी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राभाकास

डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक 'ईसीआईएल गौरव'

श्री संजय कुमार चौधरी
हिन्दी अनुवादक

श्री अजहर सुल्तान
अवर श्रेणी लिपिक/ टंकक (हिन्दी)

आंचलिक कार्यालय

श्रीमती वी. कनका श्री महालक्ष्मी
कनि. हिन्दी अनुवादक
आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नै

श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर
कनि. हिन्दी अनुवादक
आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई

सुश्री देवश्री मोदक
कनि. हिन्दी अनुवादक
आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता

श्री प्रवीण कुमार चौहान
कनि. हिन्दी अनुवादक
आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली

ईसीआईएल एवं निगमीय सामाजिक दायित्व (सीएसआर)

*वी.एस.बी. बाबु**

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड की निगमीय सफलता एवं समाज कल्याण परस्पर निर्भर हैं तथा इससे निगमीय कार्यों में सामाजिक मूल्यों का विकास होता है

अन्तरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता

समाज कल्याण और सामाजिक मूल्यों का विकास ईसीआईएल का प्रमुख उद्देश्य है। इस दिशा में निगम ने तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश में निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। इस

श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ईसीआईएल के स्टॉल में

क्रम में ईसीआईएल ने भुवनेश्वर (ओड़िसा) में दिनांक 02 से 04 दिसंबर, 2016 तक अन्तरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस पर दिव्यांगजन सामाजिक सुरक्षा एवं सशक्तीकरण विभाग, ओड़िसा सरकार द्वारा आयोजित भव्य समारोह में अपने प्रमुख उत्पादों को प्रदर्शित किया। इस प्रदर्शनी में ई-अभिशासन परियोजना के अंतर्गत 'प्रमाणिका (स्मार्ट कार्ड सत्यापक)', 'प्रज्ञा (बायोमीट्रिक टैबलेट पीसी)', 'ईसी-पॉइंट आफ सेल्स उपकरण' तथा 'एमएफआईडी' एवं 'आरआईसी स्मार्ट कार्ड' को प्रमुख रूप से प्रदर्शित किया। इस अवसर पर दिव्यांग जनों के लिए राष्ट्रीय जनसंख्या परियोजना के अंतर्गत आधार नामांकन का शिविर नि:शुल्क आयोजित किया गया।

ईसीआईएल के प्रदर्शनी स्टाल को सुश्री मिनाती बेहेरा, दिव्यांग जनों हेतु ओड़िसा राज्य आयुक्त; श्री नितिन चंद्रा, भाप्रसे, प्रधान सचिव, एसएसईपीडी; सुश्री मानसी निम्भाल, भाप्रसे, निदेशक; श्री देवा प्रसाद दास, संयुक्त सचिव ने निरीक्षण किया। इस समारोह में श्री नवीन पटनायक,माननीय मुख्यमंत्री, ओड़िसा तथा अन्य मंत्रीगण उपस्थित थे। ईसीआईएल ने एसएसईपीडी विभाग, ओड़िसा सरकार के अंतर्गत

ओड़िसा सरकार के वरिष्ठ अधिकारीगण ईसीआईएल के स्टॉल में

वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांग जनों एवं विधवाओं के लिए पेंशन संवितरण हेतु आधार परियोजना को प्रारंभ किया। इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य पेंशन संवितरण में विभिन्न प्रकार की अनियमितताओं को दूर कर पारदर्शिता स्थापित करना था। इस परियोजना में ईसीआईएल

***श्री वी.एस.बी. बाबु,** निदेशक (कार्मिक) तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति हैं। मानव संसाधन नीतियों तथा श्रमिक नियमों के कार्यान्वयन के क्षेत्र में इनको विशेष अनुभव है। निगमीय सामाजिक दायित्व से संबंधित शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल-विकास तथा पर्यावरण संरक्षण संबंधी कार्यों में इनका योगदान प्रशंसनीय है।

ईसीआईएल के तकनीकी उत्पादों का प्रदर्शन

प्रबंधन सूचना प्रणाली को सुव्यवस्थित किया गया। इससे पेंशन संवितरण प्रणाली में बहुत तेजी आई।

इस परियोजना का शुभारंभ खोरधा जनपद के धौली ग्राम पंचायत के 434 लाभार्थियों के लिए किया गया। पेंशन संवितरण के लिए लाभार्थी के डाटा एवं पॉइंट आफ सेल उपकरण में आधार संख्या डाटा फीड करने के लिए बॉयोमीट्रिक टैबलेट-पीसी उपकरण को प्रयोग किया गया। ईसीआईएल ने संपूर्ण पेंशन संवितरण प्रणाली के लिए ऑनलाइन पोर्टल प्रारंभ किया। इस परियोजना की सफलता से एसएसईपीडी विभाग ने पूरे ओड़िसा प्रदेश में पेंशन संवितरण प्रणाली को ऑनलाइन कंप्यूटरीकृत किया।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) छात्राओं को मेडिकल किट वितरित करते हुए

ईसीआईएल द्वारा अपने निगमीय सामाजिक दायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत तेलंगाना राज्य के मेड़चल जनपद के नागवरम स्थित जिला परिषद उच्च विद्यालय में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य शिविर उद्घाटन के पश्चात् छात्राओं को मेडिकल किट दिया गया।

एलईडी बल्बों का वितरण

ईसीआईएल ने ऊर्जा संरक्षण की दिशा में भी निगमीय सामाजिक

डॉ. शेखर बसु, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत एसलईडी बल्ब वितरित करते हुए। इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त) तथा श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं पऊवि के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित हैं

दायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। डॉ. शेखर बसु, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग तथा सचिव, परमाणु ऊर्जा आयोग तथा सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग की अध्यक्षता में 06-10-2016 को

इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल ने कहा कि शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण पर निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत प्रमुख ध्यान दिया जा रहा है

महाराष्ट्र के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों को ईसीआईएल द्वारा विनिर्मित 5 वाट के एलईडी बल्ब दिए गए। इस अवसर पर श्री पी. सुधाकर, (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल ने कहा कि शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण पर निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत प्रमुख ध्यान दिया जा रहा है।

टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, मुंबई को सहयोग

ईसीआईएल की ओर से निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, मुंबई के लिए बिस्तरों हेतु 25 लाख रुपये का चैक दिया गया।

हास्पिटल के निदेशक डॉ. (प्रो.) आर.ए. बड़वे को 25 लाख रुपये का चैक देते हुए श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल। साथ में, (सबसे बाएं) श्री सी. एस. रामटेके; आंचलिक प्रबंधक (पश्चिम), ईसीआईएल, मुंबई

विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का निर्माण

ईसीआईएल द्वारा अपने निगमीय सामाजिक दायित्व के अंतर्गत मेड़चल जनपद, कीसरा मंडल के अहमदगुड़ा स्थित मंडल परिषद अपर प्राइमरी स्कूल में छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग से शौचालय ब्लॉक का निर्माण किया गया। इसके साथ-साथ जिला परिषद हाई स्कूल में छात्रों के लिए आरओ वाटर प्लांट स्थापित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री देवाशीष दास, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने लिया। इस अवसर पर श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) भी उपस्थित थे।

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आरओ वाटर प्लांट का शुभारंभ करते हुए

विद्यालयों में अध्ययन कक्ष का निर्माण

ईसीआईएल ने मेड़चल जनपद के अशोक नगर क्षेत्र में मंडल प्राइमरी स्कूल में 8.30 लाख रुपये की लागत से अध्ययन कक्ष का निर्माण करवाया। इसका उद्घाटन श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) ने किया। इस अवसर पर श्री के. श्रीधर, प्रभारी, अभियांत्रिकी सेवा प्रभाग भी उपस्थित थे। ईसीआईएल ने 34 विभिन्न राजकीय विद्यालयों के लिए प्रसाधन, अध्ययन कक्ष, बहुउद्देश्यीय हाल, भोजन कक्ष के निर्माण के साथ-साथ स्कूल बैग, बेन्च, वाटर बॉटल आदि वितरित किए।

श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) (सबसे बाएं) अध्ययन कक्ष का उद्घाटन करते हुए। साथ में (बाएं से दूसरे) श्री के. श्रीधर, प्रभारी, ईएसडी

शौचालय ब्लॉक का निर्माण

'स्वच्छ भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत ईसीआईएल द्वारा चिराला के जिला परिषद व मंडल परिषद विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए शौचालय ब्लाक का निर्माण किया गया। अनेक सामाजिक संगठनों ने ईसीआईएल के इस प्रयास की प्रशंसा की।

शौचालय ब्लॉक के उद्घाटन अवसर पर
श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

शुभागमन-स्वागतम्

हमारे माननीय अतिथिगण

एसएएमईएल 90 की बोर्ड रूम, प्रशासनिक भवन में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ बैठक

प्रौद्योगिकी विकास परिषद (टीडीसी) की बैठक में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

रियर एडमिरल के. श्रीनिवासन, निदेशक, डीएमडीई; अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से विचार-विमर्श करते हुए

स्कॉटिश डेवलपमेन्ट इन्टरनेशनल के प्रतिनिधि मंडल के साथ ईसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन

रियर एडमिरल वेन्नम श्रीनिवास, एनएम; फ्लैग ऑफीसर, पनडुब्बी (सबसे बाएं) अप्रनि से विचार विमर्श करते हुए

रियर एडमिरल सुनील आनंद, एनएम; (सबसे बाएं) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से विचार विमर्श करते हुए

राष्ट्रीय समारोह

गणतंत्र दिवस- 2017

निगम में 26 जनवरी, 2017 को 68वें गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने ईसीआईएल के मुख्य प्रवेश द्वार पर राष्ट्रध्वजारोहरण कर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 'सम्मान गार्ड्स' का निरीक्षण किया। समारोह में श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वित्त); श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक); श्री एस. सुरेन्द्र रेड्डी, अध्यक्ष, ईसीआईएल मजदूर संघ तथा श्री पी. श्रीनिवास गौड़, अध्यक्ष, ईसीओए भी उपस्थित थे।

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक राष्ट्रीय ध्वजारोहण करते हुए

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, गणतंत्र दिवस के अवसर पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के 'सम्मान गार्ड्स' का निरीक्षण करते हुए

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय नं.1 के छात्रों द्वारा देशभक्ति गान का प्रस्तुतीकरण

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय नं.1 के छात्रों द्वारा 'विमुद्रीकरण' पर गीत-नाट्य प्रस्तुतीकरण

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अप्रनि अभिभाषण देते हुए। मंचासीन (बाएं से) श्री एस. सुरेन्द्र रेड्डी, अध्यक्ष, ईसीआईएल मजदूर संघ; श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (का.); श्री किशोर रुंगटा, निदेशक (वि.) तथा श्री पी. श्रीनिवास गौड़, अध्यक्ष, ईसीओए

श्री एस. सुरेन्द्र रेड्डी, अध्यक्ष, ईसीआईएल मजदूर संघ, गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए

श्री पी. श्रीनिवास गौड़, अध्यक्ष, ईसीओए, गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए

श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए।

समारोह में उपस्थित महाप्रबंधक, वर्ग एवं प्रभाग प्रमुख तथा वरिष्ठ अधिकारीगण

ईसीआईएल: राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति की ओर

*बी.अशोक कुमार**

श्री देवाशीस दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के दिशा-निर्देश में ईसीआईएल में राजभाषा कार्यान्वयन निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में निगम द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। निगमीय स्तर पर राजभाषा कार्यक्रमों के आयोजन के साथ-साथ नराकास (उपक्रम) एवं राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी सहभागिता की जाती है। प्रमुख कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है-

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में 20-10-2016 को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद में राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री संजय कुमार चौधरी, हिन्दी अनुवादक ने सहभागिता की। कार्यक्रम में राजभाषा नीति की व्यावहारिक जानकारी, कार्यान्वयन की कार्य-योजना, कार्यान्वयन संबंधी प्रगति की जानकारी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं राजभाषा कार्यान्वयन पर अभिमुखीकरण प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में श्री होमनिधि शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम); श्री रुद्रनाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), एनएमडीसी लिमिटेड तथा श्री कृष्णानंद मिश्र, सहायक राजभाषा अधिकारी ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 44वीं अर्धवार्षिक बैठक में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में 25-10-2016 को पॉवर ग्रिड कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, सिकंदराबाद में आयोजित 44वीं अर्धवार्षिक बैठक में श्री पी.सुधाकर, (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का नराकास (उपक्रम) द्वारा सम्मान किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने अपने अभिभाषण में नराकास (उपक्रम) के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह समिति राष्ट्रीय स्तर पर अन्य कार्यालयों के लिए

(बाएं से) श्री टेकचंद, उप निदेशक (का.); श्री वाई. उदयभास्कर, अप्रनि, बीडीएल एवं अध्यक्ष, नराकास (उ.); श्री पी. सुधाकर (तत्कालीन), अप्रनि, ईसीआईएल; श्री वी. शेखर, अधिशासी निदेशक, पीजीसीआईएल

नराकास (उपक्रम) वार्षिक समारोह में (दाएं से) श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक; श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन

***श्री बी. अशोक कुमार,** प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन, ईसीआईएल हैं। ये निगमीय अध्ययन एवं विकास केन्द्र (सीएलडीसी) के प्रभारी रह चुके हैं। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के तत्त्वावधान में मई, 2016 में आयोजित पांच दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण के सफल आयोजन में इन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

नराकास (उपक्रम) वार्षिक समारोह में 'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति के सदस्य

उदाहरण है। उन्होंने श्री होमनिधि शर्मा, सदस्य-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की प्रशंसा करते हुए कहा कि सबके सहयोग से निश्चित ही राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में यह समिति उपलब्धियों एवं सम्मानों द्वारा सफलता के अनेक महत्त्वपूर्ण आयामों को पार करेगी। अपने अभिभाषण के अंत में उन्होंने समिति द्वारा दिए गए सम्मान एवं आदर के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। इस समारोह में श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक तथा मार्गदर्शक: 'ईसीआईएल गौरव'; तथा श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख; कार्मिक एवं प्रशासन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम मे श्री एम. नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी सहित 'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति के सदस्य तथा नराकास की वार्षिक राजभाषा प्रतियोगिताओं के विजेता उपस्थित थे।

'ईसीआईएल गौरव' अंक-7 का विमोचन

'ईसीआईएल गौरव' अंक-7 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक का विमोचन करते हुए सीएमसी सदस्य

श्री पी. सुधाकर (तत्कालीन) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा 28-10-2016 को आयोजित निगमीय प्रबंधन समिति की बैठक में 'ईसीआईएल गौरव' अंक-7 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक का विमोचन किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने पत्रिका के संपादन पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्ण विश्वास है कि संपादन समिति के अथक प्रयासों से 'ईसीआईएल गौरव' का प्रत्येक अंक नियमित रूप से एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित होता रहेगा। इस अवसर पर श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक एवं मार्गदर्शक 'ईसीआईएल गौरव'; श्री बी.अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन सहित ईसीआईएल मुख्यालय के समस्त वर्ग एवं प्रभागों के प्रमुख, आंचलिक प्रबंधक तथा 'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति के सदस्य उपस्थित थे।

राजभाषा विभाग द्वारा निरीक्षण

राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए श्री टेक चंद, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, बेंगलुरु द्वारा 16-11-2016 को राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न फाइलों एवं प्रकाशनों को प्रदर्शित किया गया। निरीक्षण के अंत में निरीक्षण अधिकारी ने श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन के साथ राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विचार-विमर्श किया।

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए निगम में 22-11-2016 तथा 16-02-2017 को प्रशासनिक एवं तकनीकी हिन्दी लेखन' विषय पर एक दिवसीय 'राजभाषा कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न वर्गों एवं प्रभागों के वरिष्ठ अधिशासियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अंतर्गत प्रथम (सैद्धांतिक) सत्र में हिन्दी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी का सामान्य परिचय, प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, प्रशासनिक हिन्दी का सामान्य रूप तथा द्वितीय (तकनीकी) सत्र में तकनीकी पारिभाषिक इलेक्ट्रानिकी शब्दावली, तकनीकी लेखन का अभ्यास, तकनीकी लेखन की पद्धतियां तथा निगम में उपयोगिता विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला प्रशिक्षण के माध्यम से केन्द्र एवं राज्य सरकारों के सम्मानित ग्राहकों के साथ सरलता एवं सहजता के साथ

संप्रेषण किया जा सकता है। तकनीकी लेखन की जानकारी से प्रतिभागी निगम की गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' में प्रकाशनार्थ तकनीकी आलेख भेज सकते हैं। कार्यशाला में ईसीआईएल का हिन्दी माध्यम से निगमीय पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण भी प्रस्तुत किया जिससे प्रतिभागी निगम की तकनीकी गतिविधियों को हिन्दी माध्यम से जान सकें। निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की व्यावहारिक कार्य-कुशलता को बढ़ाने के उद्देश्य से यह कार्यशाला अत्यंत उपयोगी एवं प्रभावी सिद्ध हुई है। कार्यशाला में प्रतिभागियों को 'संघ की राजभाषा नीति: सक्षिप्त परिचय' अध्ययन सामग्री दी गई तथा निगम के निम्नलिखित गृह-प्रकाशनों से भी परिचित कराया गया:-

- 'ईसीआईएल गौरव' गृहपत्रिका, प्रवेशांक से अंक-7 तक
- रक्षा क्षेत्र में ईसीआईएल
- ईसीआईएल उत्पाद प्रोफाइल
- इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन (ईवीएम) मैनुअल
- 'प्रमाणिका' जानकारी पुस्तिका
- 'मेस' दूरदर्शक प्रोफाइल
- अनुसंधान एवं विकास रिपोर्ट
- निगम की वार्षिक रिपोर्ट

कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों ने राजभाषा कार्यान्वयन की सार्थकता एवं प्रभावकारिता पर अपने विचार व्यक्त किए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में 09-12-2016 तथा 18-03-2017 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में श्री वी.एस.बी.बाबु, निदेशक (कार्मिक) तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति; श्री बी.अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन सहित राभाकास के सदस्यगण उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने निर्देश दिया कि निगम के प्रत्येक वर्ग तथा प्रभाग में राजभाषा नीति के दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया जाए। समिति में यह निर्णय लिया गया कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं कार्यदल-सदस्यों की संयुक्त बैठक का आयोजन किया जाए। श्री एम.नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राभाकास ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं कार्यदल सदस्यों की संयुक्त बैठक

निगम में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों को सहयोग देने तथा विभिन्न वर्ग एवं प्रभागों में राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कार्यदल का गठन किया गया है। दिनांक 09-12-2016 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 137वीं बैठक में लिए गए निर्णयानुसार श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं कार्यदल सदस्यों की दिनांक 12-12-2016 को संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्णय लिया गया:-

- **राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु राभाकास एवं कार्यदल सदस्यों का सहयोग**
  बैठक में निर्णय लिया गया कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति और कार्यदल सदस्य संबंधित प्रभाग प्रमुख और सदस्य-सचिव, राभाकास की उपस्थिति में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु प्रत्येक माह में एक बैठक का आयोजन करेंगे।

- **संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रश्नावली की आवश्यकताओं के अनुसार राजभाषा का कार्यान्वयन**
  राभाकास और कार्यदल सदस्यों ने राजभाषा कार्यान्वयन पर संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रश्नावली की आवश्यकताओं के अनुसरण करने हेतु संबंधित वर्ग तथा प्रभाग प्रमुख को सुझाव देने का निर्णय लिया गया।

- **राभाकास और कार्यदल सदस्यों का राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रभागों/ वर्गों एवं हिन्दी अनुभाग से समन्वय**
  राभाकास और कार्यदल सदस्यों ने संबंधित वर्ग/प्रभाग प्रमुख तथा कार्मिक अधिशासी के सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन में प्रभागों/वर्गों एवं हिन्दी अनुभाग में समन्वय स्थापित करने में सहमति व्यक्त की।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का हिन्दी अनुभाग में शुभागमन

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं सहनिदेशक (इलेट्रानिकी),

इलेक्ट्रानिकी एवं उपकरणीकरण वर्ग, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), मुंबई का 02-11-2016 को ईसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण करने के बाद 24-11-2016 को हिन्दी अनुभाग में शुभागमन हुआ। उन्होंने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन के बारे में जानकारी ली। इस अवसर पर मेजर जनरल अतुल मेहरा (नि.), कार्यपालक निदेशक तथा श्री बी.अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता

21-12-2016 को हैदराबाद में आयोजित दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में श्री एम. नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी तथा श्री संजय कुमार चौधरी, हिन्दी अनुवादक ने सहभागिता की।

ईसीआईएल में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

ईसीआईएल में 10-01-2017 को विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री अनिल कुमार दुबे, संप्रेषक, राष्ट्रीय पोषण संस्थान (एनआईएन), हैदराबाद, मुख्य अतिथि के रूप मे

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर (बाएं से) श्री वी.एस.बी. बाबु, नि. (का.), श्री अनिल कुमार दुबे, राष्ट्रीय पोषण संस्थान तथा श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन

आमंत्रित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने की। श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन के निर्देशन में डॉ. राजनारायण अवस्थी, हिन्दी अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सम्मानीय अतिथियों को मंच पर आमंत्रित कर विषय का प्रवर्तन करते हुए विश्व भर में मनाए जाने वाले 'विश्व हिन्दी दिवस' पर विस्तार से

श्री अनिल कुमार दुबे, मुख्य अतिथि; संप्रेषक, राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद, विशेष व्याख्यान देते हुए

प्रकाश डाला। स्वागत भाषण में श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, प्रशासन ने मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसी कारण प्रतिवर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' का आयोजन किया जाता है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) तथा उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कहा कि किसी भी प्रभुता संपन्न स्वतंत्र देश की पहचान-उसकी राजभाषा, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और संविधान होते हैं। हमारा देश एक बहुभाषी देश है। हमारे देश की राजभाषा हिन्दी ने सदैव ही पूरे देश को एकता के एक सूत्र में बांधने का कार्य किया है। संविधान में राजभाषा का स्थान पाने वाली हिन्दी को कार्यालय काम में अपनाना तथा इसका प्रचार-प्रसार करना आज कार्यालय के प्रत्येक कार्मिक का नैतिक और संवैधानिक कर्त्तव्य है। यह हमारे लिए संतोष और गर्व की बात है कि ईसीआईएल में हिन्दी का प्रयोग दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा ईसीआईएल मुख्यालय को बड़े कार्यालयों की श्रेणी में वर्ष 2015-16 के लिए 'राजभाषा शील्ड' प्रदान की गई। इसके साथ ही निगम की गृह पत्रिका 'ईसीआईएल गौरव' को नराकास (उपक्रम) द्वारा प्रकाशित पत्रिका श्रेणी में 'उत्तम पत्रिका' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सब आपके सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनिल कुमार दुबे ने 'चार पहिए: आहार, विहार, आचार, विचार और उनका व्हील अलाईमेंट' पर सारगर्भित

व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन में संतुलित स्वास्थ्य के लिए 'आहार, विहार, विचार तथा आचार में परस्पर समन्वय होना चाहिए। उन्होंने वैदिक ग्रंथों का संदर्भ देते हुए संदेश दिया कि 'आहार ही औषधि है'। इसी कारण विश्व भर में आयुर्वेद आज की चिकित्सा प्रणाली का स्रोत बनता जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनेक आंकड़ों के आधार पर उन्होंने भारत में कुपोषण की स्थिति को व्यक्त किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि नवजात शिशु को माता का दूध सर्वाधिक लाभप्रद एवं अमृत-तुल्य होता है।

इस अवसर पर निगम के विभिन्न प्रभागों तथा वर्गों के वरिष्ठ अधिकारीगण, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा कार्यदल के सदस्यगण एवं 'ईसीआईएल गौरव' सम्पादन समिति के सदस्यों सहित ईसीआईएल अधिकारी संघ और ईसीआईएल मजदूर संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में श्री एम. नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी तथा सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री संजय कुमार चौधरी, हिन्दी अनुवादक; श्री ए. सांबमूर्ति, फोटोग्राफर; श्री अजहर सुल्तान, अवर श्रेणी लिपिक/ टंकक (हिन्दी) तथा हिन्दी अनुभाग एवं निगमीय अध्ययन एवं विकास केन्द्र के सभी सदस्यों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

नराकास (उपक्रम) राजभाषा संगोष्ठी एवं सम्मान-समारोह में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के तत्त्वावधान में 03-03-2017 को आयोजित राजभाषा संगोष्ठी एवं सम्मान -समारोह में श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन सहित एवं श्रीमती डी. मैनावती, सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा हिन्दी अनुभाग के समस्त अधिकारियों ने सहभागिता की।

आंचलिक कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण

संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों एवं संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए मुख्यालय द्वारा समस्त अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण-कार्यक्रम विवरण इस प्रकार है:-

क्र.	कार्यालय का नाम	निरीक्षण अधिकारी	निरीक्षण तिथि
1.	आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई	श्री जय भगवान शर्मा, कंपनी सचिव	20-03-2017
2.	यूनिट कार्यालय, तिरुपति	श्री बी. अशोक कुमार, प्रमुख, कार्मिक एवं प्रशासन	21-03-2017
3.	आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नै	श्री एम. नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी	22-03-2017
4.	आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता	डॉ. राजनारायण अवस्थी, हिन्दी अधिकारी	25-03-2017
5.	आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली	श्री रंजन श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (लेखा)	28-03-2017
6.	आंचलिक कार्यालय, बेंगलुरु	श्री सी. मुनिकृष्णा, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक (मानव संसाधन)	30-03-2017

निगम के प्रभागों एवं वर्गों का राजभाषा निरीक्षण

निगम के प्रभागों एवं वर्गों में संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियमों एवं संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा राजभाषा कार्यदल के सदस्यों द्वारा 23-03 से 31-03-2017 तक राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम का संचालन श्री एम. नरसिम्हा चारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी तथा सदस्य-सचिव राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया। निरीक्षण कार्यक्रम में श्री अजहर सुल्तान, अवर श्रेणी लिपिक/ टंकक (हिन्दी) ने सहयोग दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नई दिल्ली

ब्रिगेडियर (नि.) कुलदीप सिंह दलाल
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कार्यालय में दिनांक 13-12-2016 को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रगति की समीक्षा के लिए ब्रिगेडियर (नि.) कुलदीप सिंह दलाल महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सर्वप्रथम श्री सत्य प्रकाश, कार्मिक प्रबंधक एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समिति के अध्यक्ष एवं समस्त सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय ने श्री प्रवीण कुमार चौहान, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों एवं प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने यह निर्देश दिया कि समस्त प्रभाग प्रभारी अपने-अपने प्रभाग में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें। बैठक में प्रमुख रूप से निम्नलिखित दिशा निर्देश जारी किए गए:

- प्रत्येक माह के प्रथम शनिवार को अध्यक्ष, राभाकास द्वारा सभी प्रभागों की हिन्दी फाइलों का निरीक्षण किया जाएगा
- राभाकास की प्रत्येक बैठक में कनि. हिन्दी अनुवादक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाए
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए समय-समय पर कार्यालय आदेश जारी किये जाएं
- राभाकास में नए सदस्यों को सम्मिलित किया जाए
- पत्र लेखन तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट को भरने के संबंध में कार्यशाला का आयोजन किया जाए
- राजभाषा के सुचारु रूप से कार्यान्वयन के लिए सभी विभागाध्यक्षों की एक विशेष बैठक का आयोजन किया जाए

बैठक के सफल आयोजन में श्री प्रवीण कुमार चौहान, कनि. हिन्दी अनुवादक ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री सत्य प्रकाश, कार्मिक प्रबंधक एवं
सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में 28-12-2016 को 'हिन्दी पत्र लेखन तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

श्री मुकेश यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग, नई दिल्ली प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

ब्रिगेडियर (नि.) कुलदीप सिंह दलाल, महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री मुकेश यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग, शाखा सचिवालय, नई दिल्ली को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। अतिथि वक्ता ने 'हिन्दी पत्र लेखन' तथा 'तिमाही प्रगति रिपोर्ट' भरने के विषय में सामान्य जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शुरू से ही हिन्दी में पत्राचार किया जाए। अंग्रेजी में पहले पत्र लिखकर उसका हिन्दी में अनुवाद करने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। श्री सत्य प्रकाश, कार्मिक प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राभाकास ने सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे कार्यालय का काम राजभाषा हिन्दी में ही करें। कार्यशाला के सफल आयोजन में श्री प्रवीण कुमार चौहान, कनि. हिन्दी अनुवादक ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई

श्री सी.एस.रामटेके, आंचलिक प्रबंधक (पश्चिम) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत 'पारंगत' प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यालय में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, मुंबई के तत्त्वावधान में 'पारंगत' प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 01-07-2016 को प्रारंभ होकर 16-11- 2016 को समाप्त हुआ। कार्यक्रम का समापन समारोह श्री सी. एस. रामटेके, आंचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में 11-11-2016 को किया गया। इस अवसर पर श्री विनोद कुमार शर्मा, उप निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, मुंबई ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए ईसीआईएल के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में ईसीआईएल के 06 तथा इंडिया रेअर अटर्स लिमिटेड (आईआरईएल), मुंबई के 10 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री राजन बी.पाटिल, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के दिशा निर्देशन में श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर, कनि. हिन्दी अनुवादक ने समन्वय अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन किया। इस प्रशिक्षण के संबंध में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की बैठक में डॉ. विश्वनाथ झा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), पश्चिम क्षेत्र, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई ने अपने व्याख्यान में ईसीआईएल द्वारा 'पारंगत' प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए श्री सी.एस. रामटेके, आंचलिक प्रबंधक की प्रशंसा की।

प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता

श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर, कनि. हिन्दी अनुवादक ने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, मुंबई के तत्त्वावधान में 03-10-2016 से 16-11-2016 तक आयोजित प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष, अनुवाद प्रक्रिया तथा प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली की जानकारी दी गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), मुंबई के तत्त्वावधान में 22-12-2016 को आयोजित 58वीं बैठक में ईसीआईएल आंचलिक कार्यालय (पश्चिम) की ओर से श्री सी.एस.रामटेके, आंचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति; श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर, कनि. हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया।

पांच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यालय में हिन्दी शिक्षण योजना के तत्त्वावधान में 02 जनवरी से 06 जनवरी, 2017 तक पांच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री विनोद कुमार शर्मा, उप निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना; श्री सी.एस. रामटेके, आंचलिक प्रबंधक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दीप प्रदीप्त कर किया गया। इस अवसर पर आंचलिक प्रबंधक ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युग में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी का विकास अत्यंत आवश्यक है। इस संबंध में कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए यह पांच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न कार्यालयों के 20 कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्देशन में श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर, कनि. हिन्दी अनुवादक ने समन्वय अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता

श्री देवाशीष देवनाथ, आंचलिक प्रबंधक (पूर्व) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कार्यालय में 09-12-2016 को श्री देवाशीष देबनाथ, आंचलिक प्रबंधक (पूर्व) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 89वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिन्दी की प्रगति और उत्तरोत्तर विकास अर्थात् कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग में वृद्धि, अधिकाधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में शत-प्रतिशत कार्य करने की मानसिकता को तैयार करना है। बैठक में राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 के सभी बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि हिन्दी में अधिक कार्य करने हेतु सभी वर्गों के प्रभारियों के साथ बैठक करने का निर्णय लिया गया।

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

कार्यालय में 30-12-2016 को 'कंप्यूटर एवं राजभाषा हिन्दी' विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अनूप

कार्यशाला में सहभागिता करते हुए अधिकारीगण

कुमार, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने कार्यालय में कंप्यूटर के माध्यम से हिन्दी में किस प्रकार सरलता और सहजता से कार्य किया जा सकता है, विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यशाला में कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री देवाशीष देवनाथ, आंचलिक प्रबंधक (पूर्व) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने आश्वासन दिया कि भविष्य में हिन्दी लिखने अथवा बोलने में गलतियां कम होंगी तथा हिन्दी के प्रयोग में कंप्यूटर का भरपूर प्रयोग किया जाएगा। कार्यक्रम के अंत में श्री तरुण मुखर्जी, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अतिथि एवं समस्त प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला के सफल आयोजन में सुश्री देवश्री मोदक, कनि. हिन्दी अनुवादक ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

कार्यालय में 10-01-2017 को विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री देवाशीष देवनाथ, आंचलिक प्रबंधक (पूर्व) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों ने हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य एवं उपयोगिता पर अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुश्री देवश्री मोदक, कनि. हिन्दी अनुवादक ने 'विश्व स्तर पर हिन्दी के विकसित रूप' विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। समारोह के अंत में सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सुश्री देवश्री मोदक, कनि. हिन्दी अनुवादक ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नै

श्री एन.वी.जयकर, आंचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्रीमती एम.यू. सुधामई, उप महाप्रबंधक तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कार्यालय में 25-11-2016 को 62वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। श्री एन.वी.जयकर, आंचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री ए.एस.पी. आंजनेयुलु, लेखा अधिकारी का मुख्यालय हैदराबाद स्थानांतरण होने पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य के रूप में दी गई उनकी सेवाओं की प्रशंसा की। उनके स्थान पर श्री वी. सूर्यप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक का नए सदस्य के रूप में स्वागत किया गया। समिति ने सुझाव दिया कि राजभाषा हिन्दी अभिविन्यास कक्षाएं प्रति माह आयोजित की जाएं ताकि अधिक से अधिक कर्मचारी हिन्दी का उपयोग कर ज्ञान बढ़ा सकें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), चेन्नै के तत्त्वावधान में 28-11-2016 को आयोजित 53वीं बैठक में श्री एन.वी. जयकर, आंचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्रीमती बी. विजय लक्ष्मी, मुख्य अधीक्षक ने सहभागिता की।

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम एवं संवैधानिक प्रावधानों को सुनिश्चित करने के लिए 03-12-2016 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एन.वी. जयकर, आंचलिक प्रबंधक (दक्षिण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्रीमती एम.यू. सुधामई, उप महाप्रबंधक तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि वक्ता डॉ. एन.एस. राजगोपालन का स्वागत किया। आमंत्रित अतिथि वक्ता ने 'राजभाषा के प्रयोग में हिन्दी की सरलता और सहजता' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। कार्यशाला का समापन 'राष्ट्रगान' से हुआ। श्रीमती बी. विजयलक्ष्मी, मुख्य अधीक्षक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यशाला में सहभागिता करते हुए अधिकारीगण

विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

कार्यालय में 10-01-2017 को श्री एन.वी. जयकर, आंचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में 'विश्व हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने हिन्दी के वैश्विक संदर्भ पर प्रकाश डाला। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यालय में बैनर प्रदर्शित किए गए।

गृहपत्रिका 'प्रवेशांक' का प्रकाशन

कार्यालय में 10-01-2017 को 'विश्व हिन्दी दिवस' के अवसर पर श्री एन.वी. जयकर, आंचलिक प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राभाकास द्वारा गृहपत्रिका 'प्रवेशांक' का विमोचन किया गया। ईसीआईएल स्वर्ण-जयंती वर्ष के अवसर पर प्रकाशित यह पत्रिका डॉ. ए.एस. राव, ईसीआईएल के संस्थापक एवं प्रथम प्रबंध निदेशक को समर्पित है।

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
आंचलिक कार्यालय, बेंगलुरु

श्री एम.एस. वेंकट सुब्बय्या, शाखा प्रभारी एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्रीमती बी. माधवी अरोरा, तकनीकी प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

कार्यालय में 22-12-2016 को श्री एम.एस.वेंकट सुब्बय्या, शाखा प्रभारी एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में 72वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। श्रीमती बी. माधवी अरोरा, प्रभारी, कार्मिक वर्ग एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने बैठक का संचालन करते हुए बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। श्री जे. निर्मलनाथन, उप महाप्रबंधक का समिति के नए सदस्य के रूप में स्वागत किया गया। अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 तथा मुख्यालय से प्राप्त प्रमुख पत्रों की समीक्षा की। उन्होंने यह निर्देश दिया कि राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के समस्त निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए। समिति ने श्री डी. आर. वेंकट सुब्बु एवं श्री एच. बूच्चप्पा, क्रमशः पूर्व अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए दी गई सेवाओं के लिए आभार व्यक्त करते हुए उनके सुखद एवं स्वस्थ सेवानिवृत जीवन की शुभकामनाएं दी। श्रीमती बी. माधवी अरोरा, सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

समिति ने श्री डी. आर. वेंकट सुब्बु एवं श्री एच. बूच्चप्पा, क्रमशः पूर्व अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए दी गई सेवाओं के लिए आभार व्यक्त करते हुए उनके सुखद एवं स्वस्थ सेवानिवृत जीवन की शुभकामनाएं दीं

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम एवं विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों को सुनिश्चित करने के लिए 26-12-2016 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एम.एस.वेंकट सुब्बय्या, शाखा प्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने मुख्य अतिथि एवं वक्ता श्री एन. रंगनाथाचार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) (नि.), केआईओसीएल, बेंगलुरु का स्वागत करते हुए कार्यशाला का उद्घाटन किया।

अतिथि वक्ता ने 'हिन्दी और अंग्रेजी के मध्य शैलीगत अंतर' विषय पर व्याख्यान दिया। इस संदर्भ में उन्होंने प्रत्येक भाषा की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और परंपरा को जानने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री अंबरीश कुमार पाठक, तकनीकी अधिकारी एवं सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अतिथि वक्ता ने 'हिन्दी और अंग्रेजी के मध्य शैलीगत अंतर' विषय पर व्याख्यान दिया। इस संदर्भ में उन्होंने प्रत्येक भाषा की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और परंपरा को जानने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
यूनिट कार्यालय, तिरुपति

श्री वी. अजय बाबु, प्रमुख, तिरुपति यूनिट एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुपति के तत्त्वावधान में 25-10-2016 को दूरदर्शन केन्द्र, तिरुपति में आयोजित विशेष बैठक में श्री वी. अजय बाबु, प्रमुख तथा श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक ने ईसीआईएल का प्रतिनिधित्व किया।

नराकास राजभाषा कार्यशाला में सहभागिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुपति के तत्त्वावधान में 24-11-2016 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, तिरुपति में 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' विषय पर आयोजित राजभाषा कार्यशाला में श्री एस.ए. हफीज़,

श्री महावीर शर्मा, सदस्य-सचिव, नराकास, तिरुपति को 'ईसीआईएल गौरव' अंक-7 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक की प्रति देते हुए श्री एस.ए. हफीज़, वरिष्ठ अधिकारी

वरिष्ठ अधिकारी ने सहभागिता की। इस अवसर पर कार्यशाला में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों को मुख्यालय की गृहपत्रिका 'ईसीआईएल गौरव', अंक-7 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक की प्रति भेंट की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

श्री वी. अजया बाबु, प्रमुख एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में 29-12-2016 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्यालय से प्राप्त पत्रों की समीक्षा की गई। इस अवसर पर 10-01-2017 को विश्व हिन्दी दिवस के आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

29-12-2016 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। श्री वी. अजय बाबु, प्रमुख एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए 'राजभाषा कार्यशाला' की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री एस. नौषाद, वरिष्ठ प्रबंधक एवं सदस्य सचिव ने 'राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति' पर विशेष व्याख्यान दिया।

विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

कार्यालय में 10-01-2017 को 'विश्व हिन्दी दिवस' के अवसर पर श्री सी.एस.डी. महाराज, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक को विशेष व्याख्यान लिए आमंत्रित किया गया। अतिथि वक्ता ने हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य एवं हिन्दी के प्रयोग करने की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया।

मंचासीन (बाएं से) श्री वी. अजयबाबु, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं प्रमुख, तिरुपति यूनिट; श्री सी.एम.डी. महाराज, मुख्य अतिथि तथा श्री एस. नौषाद, सदस्य सचिव, राभाकास

अनुप्रयुक्त विज्ञान अनुवाद: हिन्दी का विस्तार

*डॉ. राजनारायण अवस्थी**

सारांश

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत में अनुवाद के माध्यम से हिन्दी के विस्तार की अपार संभावनाएं हैं। इसके लिए वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादकों एवं विशेषज्ञों को वैज्ञानिक अनुवाद की यथार्थता, सूक्ष्मता तथा अनुप्रयोग को समझना अत्यंत आवश्यक है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अनुवाद की दृष्टि से ज्ञान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में पारस्परिक अंतर को समझना अपेक्षित है। यदि दो बिन्दुओं को जानना ज्ञान है, तो उनकी सामर्थ्य-ऊर्जा और बीच की दूरी इत्यादि को मापना विज्ञान तथा उन तक पहुंचने के माध्यम का विकास करना प्रौद्योगिकी है। भाषा, समाज एवं विज्ञान का बहुत गहरा संबंध है। भाषा का प्रयोगकर्ता समाज ही है। अत: भाषा, समाज से ही अपने शब्दकोश को चुनती है। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार शब्द तथा अर्थ का समन्वित रूप भाषा है। बिना अर्थ के शब्द निरर्थक रहता है और बिना शब्द के अर्थ की अभिव्यक्ति असंभव है। अनुवादक के समक्ष प्रौद्योगिकी अनुवाद प्रक्रिया में यदि सबसे बड़ी समस्या आती है तो वह 'अर्थ निर्धारण' की है। 'अर्थ' के अभीष्ट ज्ञान के बिना व्याकरणिक प्रयोग भी नहीं किए जा सकते। इसी बिन्दु से अनुवाद विज्ञान और अर्थ विज्ञान की भाषिक प्रक्रिया समानांतर और एकाकार हो जाती है।

प्रमुख शब्द: ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थ विकास, अर्थ विकार, अर्थादेश, अर्थसंकोच, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष, व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष या प्रकरण, विवृत्ति

****

अनुप्रयुक्त विज्ञान अनुवाद से हिन्दी का अत्यधिक विस्तार हो रहा है। प्रस्तुत आलेख में प्रौद्योगिकीपरक वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के माध्यम से हिन्दी के विस्तार के विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषणपरक अध्ययन किया गया है। आलेख के केन्द्र में सांख्यिकी (Statistics), निर्देशांक ज्यामिति (Coordinates) तथा ठोस ज्यामिति (Solid Geometry) को रखा गया है।

भाषाविज्ञान के अंतर्गत अनुवाद एक स्वतंत्र विधा है। यह अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics) की शाखा व्यतिरेकी भाषाविज्ञान (Contrastive Linguistics) के अंतर्गत आता है। अनुवाद के विभिन्न आयामों में वैज्ञानिक अनुवाद सर्वथा अलग सिद्धांत एवं अनुप्रयोग की अपेक्षा रखता है। इसमें भाषा की व्याकरणिक संरचना के साथ-साथ वैज्ञानिक सिद्धांतों की अवधारणाओं से भी भली-भांति परिचित होना चाहिए। आज ज्ञान-विज्ञान के युग में इस बात की नितांत आवश्यकता है कि विज्ञान और उसके अनुप्रयोगों को सामान्य जन तक पहुंचाया जाए। इस संबंध में वैज्ञानिक अनुवाद की चुनौतियों को समझना अत्यंत आवश्यक है। वैज्ञानिक अनुवाद की चुनौतियां निम्नलिखित हैं;

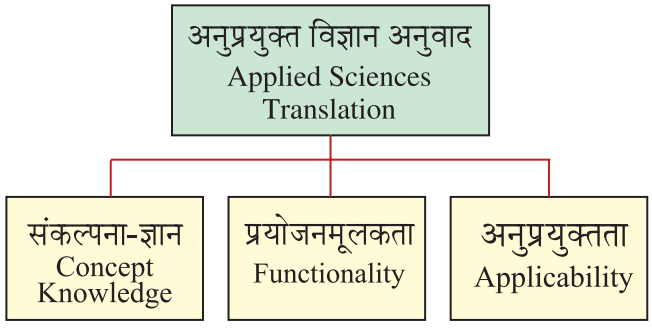

(1) सिद्धांत और अनुप्रयोग की समुचित जानकारी न होना।
(2) हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दों एवं संकल्पनाओं की समतुल्यता।
(3) अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का लिप्यंतरण।
(4) साहित्य की अपेक्षा वैज्ञानिक शब्दों एवं संकल्पनाओं का तेजी से विकास होना।

सिद्धांत एवं अनुप्रयोग की समुचित जानकारी के अभाव में अनुवाद या तो मूल से काफी दूर चला जाता है या क्लिष्ट हो जाता है। वैज्ञानिक साहित्य के हिन्दी में अनुवाद की समस्या का निराकरण तभी हो सकता है

***डॉ. राजनारायण अवस्थी**, हिन्दी अधिकारी एवं संपादक 'ईसीआईएल गौरव' ने इस शोधपत्र को वर्ष 2015 में भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रस्तुत किया था। शोधपत्र में वैज्ञानिक अनुवाद के विभिन्न भाषावैज्ञानिक एवं तकनीकी पक्षों को विश्लेषित किया गया है। डॉ. राजनारायण अवस्थी को इस शोधपत्र प्रस्तुतीकरण के लिए विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

जब इस क्षेत्र में अधिक से अधिक वैज्ञानिक सिद्धांतों और अनुप्रयोगों पर वैज्ञानिक कार्य करने वाले भाषाविद् आगे आएं। वैज्ञानिक अनुवाद की यही विडंबना है कि आज हमारे देश के अनुवाद के क्षेत्र में वैज्ञानिक साहित्य और तदनुकूल भाषा के मध्य तारतम्य स्थापित करने वाले अनुवादकों का नितांत अभाव है। अधिकांश भाषाविदों को यदि वैज्ञानिक साहित्य का ज्ञान है भी तो वे अनुप्रयोग के ज्ञान से वे नितांत अपरिचित हैं। विज्ञान के अनुप्रयोगों की भाषा में शब्द-शक्तियों का कोई विशेष स्थान नहीं होता है। उसमें भाषा का प्रवाह तथ्य और प्रामाणिकता-परक होता है।

विशेष रूप से जब सांख्यिकी (Statistics) संबंधी गणितीय प्रश्नों का

निर्देशांक ज्यामिति 'Coordinates' का अनुवाद करते समय भी अनुवादक को विशेष ध्यान रखना चाहिए। 'Coordinates' के अनुवाद में अंग्रेजी की पूरी की पूरी वाक्यगत संरचना पर बदलाव लाना पड़ता है। अंग्रेजी में 'line segment' अलग-अलग शब्द हैं, लेकिन हिन्दी में इसको एक ही पद 'रेखाखंड' में व्यक्त करेंगे

अनुवाद किया जाए उस समय गणितीय संवेदना 'Mathematical Sensitivity' का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जैसे- For the same cumulative frequency distribution, we have 'less than cumulative frequency curve' and 'more than cumulative frequency curve' as given below. Find the 'Median' of the distribution.

अब यहां पर निम्नलिखित पद-रूपों के अनुवाद पर विशेष रूप से ध्यान अपेक्षित है:-

(i) for the same.
(ii) less than cumulative frequency curve.
(iii) more than cumulative frequency curve.
(iv) frequency distribution.

यहां पर 'for the same' के लिए 'समान प्रकार की', 'समान के लिए', 'एक प्रकार की' आदि अनुवाद की अनेक प्रतिछायाएं (shades) हो सकती हैं। लेकिन यदि अनुवादक को सांख्यिकी की अवधारणाओं का ज्ञान है तो इसका अनुवाद 'एक प्रकार की' करेगा। भाषा की दृष्टि से 'समान' और 'एक प्रकार की' में कोई विशेष अंतर नहीं है, लेकिन सांख्यिकी की दृष्टि से इनमें काफी अंतर है। जैसे कि भौतिक विज्ञान (Physics) में 'frequency' का तात्पर्य 'आवृत्ति' से है तो सांख्यिकी में 'frequency distribution' मूल अभिप्राय 'बारंबारता बंटन' से है। सारांश यह है कि गणितीय अवधारणाओं वाली संकल्पनाओं का अनुवाद करते समय अनुवादक को बहुत सचेत रहना चाहिए। इस पाठ-सामग्री का अनुवाद इस प्रकार होगा;

''एक प्रकार की संचयी बारंबारता बंटन के लिए हमारे पास 'से कम संचयी बारंबारता वक्र' और 'से अधिक संचयी बारंबारता वक्र' नीचे दिए गए हैं। बंटन की माध्यिका ज्ञात कीजिए।''

उपर्युक्त अनुवाद सामग्री में 'less than cumulative frequency curve' और 'more than cumulative frequency curve' का अनुवादक 'से कम संचयी बारंबारता वक्र' और 'से अधिक संचयी बारंबारता वक्र' अनुवाद तभी कर सकता है जब उसे सांख्यिकी की गणितीय अवधारणाओं का ज्ञान होगा।

निर्देशांक ज्यामिति 'Coordinates' का अनुवाद करते समय भी अनुवादक को विशेष ध्यान रखना चाहिए। 'Coordinates' के अनुवाद में अंग्रेजी की पूरी की पूरी वाक्यगत संरचना पर बदलाव लाना पड़ता है। अंग्रेजी में 'line segment' अलग-अलग शब्द हैं, लेकिन हिन्दी में इसको एक ही पद 'रेखाखंड' में व्यक्त करेंगे। निर्देशांक ज्यामिति की 'value' का अर्थ 'कीमत', 'मूल्य' आदि न होकर 'मान' है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित निर्देशांक संरचनाओं को देखा जा सकता है;

(i) Determine the ratio in which the line $2x+y-4=0$ divide the line segment joining the points (1, 1) and (7, 3). Also find the coordinates of the point of division.

(ii) Find the point 'M' on the 'X' axis which is equidistant from the points 'N' (6, 5) and 'P' (-4, 3). Also find the area of triangle MNP.

(iii) If the mid-point of the line joining the points (3, 4) and (k, 7) is (m, n) and satisfy the equation $2m+2n+1=0$. Find the value of 'k'.

(iv) Prove that the intercept of tangent between two

parallel tangents to a subtends a right angle at the Centre of the circle.

उपर्युक्त पाठ सामग्री का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है (यहां पर यह दृष्टव्य है कि यह पाठ सामग्री एक साधारण पाठ सामग्री न होकर निर्देशांक ज्यमिति के विद्यार्थियों के लिए परीक्षा-प्रश्न है। अत: लक्ष्यभाषा की वाक्यगत संरचना के साथ-साथ सटीकता, संक्षिप्तता और स्पष्टता का विशेष रूप से ध्यान रखना होगा)

(i) बिन्दुओं (1, 1) और (7, 3) को जोड़ने वाले रेखाखंड को रेखा 2x+y-4=0 जिस अनुपात में विभाजित करती है, उसे ज्ञात कीजिए। विभाज्य बिन्दु के निर्देशांक भी ज्ञात कीजिए।

ठोस ज्यामिति (Solid Geometry) के अनुवाद में अनुवादक को विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के पृष्ठीय क्षेत्रफल (Surface Area) एवं आयतन (Volume) इत्यादि की भी मूलभूत जानकारी होनी चाहिए

(ii) 'X' अक्ष पर बिन्दु 'M' ज्ञात कीजिए, जो बिन्दुओं 'N' (6, 5) और 'P' (-4, 3) से समदूरस्थ हो। त्रिभुज MNP का क्षेत्रफल ज्ञात कीजिए।

(iii) यदि बिन्दुओं (3, 4) और (k, 7) को जोड़ने वाले रेखाखंड का मध्य बिन्दु (m, n) है और समीकरण 2m+2n+1 =0 को संतुष्ट करता है तो 'k' का मान ज्ञात कीजिए।

(iv) सिद्ध कीजिए कि वृत्त की दो समांतर स्पर्श रेखाओं के बीच एक स्पर्श रेखा का अंत:खंड केन्द्र पर समकोण अंतरित करता है।

ठोस ज्यामिति (Solid Geometry) के अनुवाद में अनुवादक को विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के पृष्ठीय क्षेत्रफल (Surface Area) एवं आयतन (Volume) इत्यादि की भी मूलभूत जानकारी होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए इस प्रश्न का अनुवाद विशेष रूप से दृष्टव्य है; पाठसामग्री के अनुवाद के संदर्भ में अनुवादक को 'frustum of a cone' जैसी ठोस ज्यामितीय अभिव्यक्तियों का पूरा ज्ञान होना चाहिए। अंग्रेजी में 'oil which can completely fill the container' का अनुवाद सरल और सहज दृष्टि से करना चाहिए। इसका अनुवाद 'तेल जो बर्तन को पूरा भर दे' न करके 'बर्तन में पूरे भरे हुए तेल' करना चाहिए।

An open container made up of a metal sheet is in the form of frustum of a cone. of height 20 cm with radii of its lower and upper ends of 6 cm. and 12 cm. respectively. Find the cost of oil which can completely fill the container at the rate of Rs. 50 per liter. Also find the cost of metal used, if it costs Rs. 5 per cm^2.	:	एक खुला बर्तन किसी धातु के चादर से बने शंकु के छिन्नक के आकार का है, जिसकी ऊंचाई 20 सेमी तथा निचले और ऊपरी शिरों की त्रिज्याएं क्रमश: 6 सेमी और 12 सेमी हैं तो बर्तन में पूरे भरे हुए तेल का मूल्य 50 रुपये प्रति लीटर की दर से ज्ञात कीजिए। धातु के चादर का भी मूल्य ज्ञात कीजिए यदि मूल्य 5 रुपये प्रति 100 $सेमी^2$ हो।

ठोस ज्यामिति के अनुवाद में अनुवादक को अत्यंत तार्किक दृष्टि से अनुवाद करना चाहिए। क्योंकि परीक्षा-प्रश्न में दी गई मापें तर्कसंगत होती हैं। उदाहरणार्थ;

A metallic right circular cone 30 cm. high whose vertical angle is 30^0 is put into two parts at the middle of its height by a plane parallel to its base. If it is frustum so obtained be drawn into wire of diameter 1/14 cm. Find the length of wire.	:	30 सेमी ऊंचाई और 30^0 शीर्षकोण वाले एक शंकु को उसकी ऊंचाई के बीचों-बीच से होकर काटा गया है, जबकि तल शंकु के आधार के समांतर है। यदि इस प्राप्त शंकु के छिन्नक का व्यास 1/14 सेमी वाले एक तार के रूप में बदल दिया जाता है तो तार की लंबाई ज्ञात कीजिए।

(उपर्युक्त पाठ में 'vertical angle' और 'middle of the height' का अनुवाद सावधानीपूर्वक करना चाहिए। सामान्य तौर पर 'vertical' का अभिप्राय 'ऊर्ध्व' से लिया जाता है, लेकिन यहां इसका तात्पर्य 'शीर्ष कोण' से है। इसी प्रकार 'middle of the height' का अनुवाद 'ऊंचाई के बीच' न होकर 'ऊंचाई के बीचों-बीच' अधिक उपयुक्त और तर्कसंगत होगा। इसके अनुवाद का प्रयास सामने दर्शाया गया है)

गणितीय अनुवाद में गणित संबंधी शब्दावली का भी अनुवादक को भली-भांति ज्ञान होना चाहिए। प्रमुख आधारभूत शब्दावली नीचे दी गई है ;

1.	Mean	:	माध्य (औसत)
2.	Median	:	माध्यिका
3.	Mode	:	बहुलक
4.	Zeros	:	शून्यक
5.	Polynomial	:	बहुपद
6.	Quadratic equation	:	द्विघात समीकरण
7.	Rectangle	:	आयत
8.	Area	:	क्षेत्रफल
9.	Radius	:	त्रिज्या
10.	Radii	:	त्रिज्याएं
11.	Tangent	:	स्पर्शज्या
12.	Linear equation	:	रैखिक समीकरण
13.	Perimeter	:	परिमाप
14.	Semi-circle	:	अर्धवृत्त
15.	Right angled triangle	:	समकोण त्रिभुज
16.	Mid-point	:	मध्य बिन्दु
17.	Probability	:	प्रायिकता
18.	Cumulative	:	संचयी
19.	Frequency distribution	:	बारम्बारता बंटन
20.	Acute angle	:	न्यून कोण
21.	Line segment	:	रेखाखंड
22.	Coordinates	:	निर्देशांक
23.	Random	:	यादृच्छया
24.	System	:	निकाय
25.	Arithmetic Progression	:	समांतर श्रेणी
26.	Common difference	:	सार्व अंतर
27.	Equidistant	:	समदूरस्थ
28.	Point of division	:	विभाज्य बिन्दु
29.	Corresponding sides	:	संगत भुजाएं
30.	Intercept	:	अंत: खंड

31.	Angle of elevation	:	उन्नयन कोण
32.	Angle of depression	:	अवनमन कोण
33.	Cone	:	शंकु
34.	Frustum	:	छिन्नक
35.	Quadratic equation	:	द्विघात समीकरण
36.	Natural numbers	:	प्राकृत संख्याएं
37.	Isosceles triangle	:	समद्विबाहु त्रिभुज
38.	Equilateral triangle	:	समबाहु त्रिभुज
39.	Fraction	:	भिन्न
40.	Collinear	:	संरेख
41.	Diagonals	:	विकर्ण
42.	Rhombus	:	सम चतुर्भुज
43.	Trigonometry	:	त्रिकोणमिति
44.	Least Common Multiple (LCM)	:	लघुतम समापवर्त्य
45.	Highest Common Factor (HCF)	:	महत्तम सार्व गुणनफल
47.	Theorem	:	प्रमेय
48.	Construction	:	निर्मेय
49.	Cuboids	:	घनाभ
50.	Rational numbers	:	परिमेय संख्याएं
51.	Irrational numbers	:	अपरिमेय संख्याएं
52.	Complimentary angle	:	संपूरक कोण
53.	Diameter	:	व्यास
54.	Consecutive even positive integers	:	क्रमागत सम-धनात्मक पूर्णांक
55.	Obtuse angle	:	अधिक कोण
56.	Perpendicular	:	लंब
57.	Proportional	:	समानुपात
58.	Vector	:	सदिश
59.	Non vector	:	अदिश
60.	Circumference	:	परिधि

अनुवाद-प्रक्रिया: विश्लेषणपरक अध्ययन

*चिप्पाड़ा अंबेडकर**

अनुवाद-प्रक्रिया का विश्लेषणपरक अध्ययन अनुप्रयुक्त भाषा वैज्ञानिकों, अनुवादविदों एवं अनुवादकों के लिए सदैव से ही गहन शोधपरक चिन्तन का विषय रहा है। 'कोई भी अनुवाद स्वयं में परिपूर्ण नहीं होता' आप्त वाक्य अनुवादक को सदैव सचेत किए रहता है। इस प्रकार अनुवादक स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में तादात्म्य स्थापित करते हुए आगे बढ़ता है। अनुवादकों को ध्यान रखना चाहिए कि वे मूल पाठ के प्रति निष्ठावान रहें, इसके लिए यह आवश्यक है कि अनुवाद के लिए दी हुई सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और वाक्य-संरचना का सम्यक् विश्लेषण करके अनुवाद में ध्यान देने योग्य: 'क्या करें' तथा 'अन्तर्निहित भाव' को यथार्थ रूप में ग्रहण किया जाए।

अनुवाद: क्या करें

1. वाक्य को इकाई मान कर अनुवाद करें।
2. मूल पाठ के लंबे और जटिल वाक्यों को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप विभक्त करें।
3. मूल रचना के अंतर्गत वाक्य में शब्द के स्थान पर पूरा ध्यान दें, वाक्य में शब्द का स्थान बदल जाने से कभी-कभी भाव बदल जाता है।
4. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द को ढूंढ़ते समय मूल पाठ के संदर्भ, प्रसंग तथा विषय का पूरा ध्यान रखें।
5. अनुवाद करते समय भाषेतर प्रसंग पर पूरा ध्यान दें।
6. अनुवाद में अभिव्यक्ति सरल और सुबोध भाषा में करें ताकि जिनके लिए अनुवाद किया जा रहा है वे उसे अच्छी तरह से समझ सकें।
7. अनुवाद में अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा की प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुकूल हो तथा उनमें पठनीयता और प्रवाह हो।
8. कभी-कभी विभिन्न विषयों में प्रयुक्त होने वाले शब्द या पदबंध वहि:केन्द्रित होते हैं, उनका ज्ञात या प्रचलित अर्थ नहीं होता। विषय विशेष में अर्थ रूढ़ हो जाने के कारण अर्थ सामान्य न रह कर विशिष्ट शब्दों या पदबंधों का पूरा अथवा रूढ़ अर्थ समझ कर अनुवाद करें।
9. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करते समय जहां मूल पाठ के भाव को अक्षुण्ण रखा जाए वहां वाक्य विन्यास लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति और प्रयोग के अनुरूप रखा जाए।
10. पारिभाषिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के लिए स्वीकृत पर्याय ही काम में लाएं, यदि स्वीकृत तकनीकी पर्याय उपलब्ध न हों तो मूल शब्द को ही लिप्यंतरित रूप में प्रयुक्त करें।
11. अनुवाद करते समय किसी संस्था के नाम का भाषांतरण तब तक न करें जब तक यह सुनिश्चित न हो जाए कि उसका नाम लक्ष्य भाषा में भी रजिस्टर्ड या अनुमोदित है।
12. अन्तरराष्ट्रीय संकेतों, सूत्रों और प्रतीकों को मूल रूप में ही लिखा जाना चाहिए।
13. संपूर्ण अनुवाद में स्रोत भाषा की शैली को अक्षुण्ण रखा जाए। रचना का समग्र प्रभाव बने रहने से अनुवाद प्रामाणिक रहता है।
14. अभिव्यक्ति में मानकीकृत वर्तनी का अनुसरण करें, शब्दावली की एकरूपता का ध्यान रखें तथा प्रचलित शब्दावली का प्रयोग करें।

अनुवाद: क्या न करें

1. मूल पाठ के भाव को अच्छी तरह समझे बिना अनुवाद न करें, अन्यथा लक्ष्य भाषा का स्वभाव विकृत हो जाने का डर है, अत: मूल पाठ को पढ़ने तथा मूल भाव को समझने में जल्दबाजी न करें।
2. शब्द प्रति शब्द अनुवाद न करें, वाक्य का अपना वाक्यार्थ होता है।
3. लंबे, अटपटे और अविभक्त वाक्यों की रचना न करें। अनुवाद में 'एक वाक्यता' अपेक्षित है, वाक्य का एक होना नहीं।
4. वाक्य में प्रयुक्त शब्द के स्थान का पूरा ध्यान रखें।
5. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द को ढूंढ़ते समय मूल पाठ के संदर्भ तथा प्रसंग की उपेक्षा न करें।
6. मात्र भाषा और अर्थ की पारंपरिकता पर निर्भर न रहें।
7. जटिल, लंबे और अटपटे वाक्यों की रचना न करें, क्योंकि ऐसा करने पर अनुवाद क्लिष्ट, दुर्बोध और असहज हो जाता है, जिससे अर्थ के सम्प्रेषण में बाधा पड़ती है।
8. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करते समय स्रोत भाषा की वाक्य संरचना का अनुसरण न करें।
9. विभिन्न विषयों के ऐसे शब्दों या पदबंधों का अनुवाद उनके विशिष्ट तथा रूढ़ अर्थ को समझे बिना शब्दश: अनुवाद न करें।

***श्री चिप्पाड़ा अंबेडकर**, आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), ईसीआईएल, मुंबई में कनि. हिन्दी अनुवादक हैं। मशीनी अनुवाद एवं वैज्ञानिक अनुवाद के क्षेत्र में इनका गहन शोधपरक अध्ययन प्रशंसनीय है। इन्होंने महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ से एम.ए., एम.फिल. (अनुवाद प्रौद्योगिकी) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया है।

व्याकरण एवं विराम-चिह्न

*स्वाति चोपड़ा**

किसी भी भाषा के व्याकरण और उसकी मानकीकृत लेखनशैली में विराम-चिह्नों का प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लिखित भाषा में जिस प्रकार किसी शब्द की वर्तनी का विशेष महत्त्व होता है उसी प्रकार विराम-चिह्नों का भी अपना विशेष महत्त्व है। विराम-चिह्नों का सही और समुचित स्थान पर प्रयोग न करने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। विराम चिह्नों के प्रयोग से वाक्य पूर्णरूपेण अनुशासित और संप्रेषणपरक रहता है। सारांशत:, भावों और विचारों को स्पष्ट और संप्रेषणपरक तथा बोधगम्य बनाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के मध्य या अंत में किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। विराम-चिह्नों का उदाहरण सहित प्रयोग इस प्रकार है:-

1. पूर्ण विराम - (।)

(1) पूर्ण विराम (।) का प्रयोग प्रश्नवाचक और विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों के अंत में होता है।

(2) अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में पूर्ण विराम (।) लगता है।

(3) दोहा, चौपाई छंदों के प्रथम चरण के अंत में एक पूर्ण विराम (।) और द्वितीय चरण के अंत में दो पूर्ण विराम (।।) लगते हैं।

(4) कविता की दो पंक्तियों के अंत में इसका प्रयोग होता है।

2. कॉलन (:)

विराम चिह्न (पंक्चुेशन मार्क्स) का एक प्रमुख चिह्न है- 'कॉलन'। भाषा के मानकीकरण में कॉलन के प्रयोग का ज्ञान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसका प्रयोग विशेष परिस्थितियों में किया जाता है।

3. अर्ध विराम (;)

अर्ध विराम का प्रयोग पूर्ण विराम से कम और अल्प विराम से अधिक समय तक रुकने की स्थिति में होता है। इसका प्रयोग कुछ सीमित स्थितियों मे ही होता है।

4. अल्पविराम (,)

अल्पविराम का प्रयोग वाक्य के मध्य में होता है। अन्य विराम चिह्नों की अपेक्षा इसका विविध स्थलों पर सर्वाधिक प्रयोग होता है।

5. प्रश्नवाचक (?)

प्रश्नवाचक चिह्न प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में प्रयुक्त होता है:-

(1) एक ही वाक्य में कई प्रश्नबोधक वाक्य हों, तो हर एक के बाद अल्प विराम लगाया जाता है और सबके अंत में प्रश्नबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे- मैं कहां जाता हूं, क्या करता हूं, किन लोगों से मिलता हूं, कब घर लौटता हूं, इन सब बातों से आपका क्या मतलब?

(2) संदेह या अनिश्चय प्रकट करने वाले स्थलों पर।
जैसे- आज के सभी नागरिक ईमानदार और चरित्रवान हैं?

(3) व्यंग्यात्मक भाव प्रकट करने के लिए। जैसे- जन सभाओं में भाषण करने वाले मातृभूमि के सच्चे सपूत हैं?

6. विस्मय/संबोधक सूचक (!)

इस चिह्न का प्रयोग विस्मयसूचक पदों, पदबंधों अथवा वाक्यों के अंत में होता है। जैसे-

(1) प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में मनोयोग प्रदर्शित करने के लिए।

(2) किसी को पुकारने, बुलाने के लिए।

(3) मनोवेग में क्रमश: होने वाली वृद्धि की स्थिति में।

7. योजक या विभाजक (-)

(1) द्वंद्व तथा तत्पुरुष समास में।

(2) तुलनाबोधक 'सा', 'से', 'के' पहले।

(3) मध्य के अर्थ में, राम-रावण संवाद।

(4) द्वित्व अर्थ में, कहीं-कहीं, पढ़ते-पढ़ते, चलते-चलते, धीरे-धीरे, हाय-हाय।

(5) अक्षरों में लिखी जाने वाली संख्याओं और उनके अंशों के बीच में। जैसे:- एक-तिहाई, एक-चौथाई।

8. निर्देशक (--)

(1) वार्तालाप में वक्ता के कथन के आगे इसका प्रयोग होता है।

(2) विषय निदेशक शब्दों में।

(3) किसी अवतरण के बाद और उसके लेखक के पहले।

(4) निक्षिप्त पदों के आगे पीछे।

***सुश्री स्वाति चोपड़ा,** ईसीआईएल के ऐन्टेना उत्पाद एवं साटकॉम प्रभाग (एपीएसडी) में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी हैं। इन्हें राष्ट्रीय महत्त्व की अनेक तकनीकी परियोजनाओं में कार्य करने का गहन अनुभव है। भारतीय भाषाओं के अध्ययन में इनकी विशेष रुचि है। अपने विद्यार्थी जीवन से ही हिन्दी भाषा के अध्ययन के प्रति इनकी विशेष रुचि रही है।

राष्ट्रकवि कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा

(29 दिसंबर, 1904 - 11 नवंबर, 1994)

*श्रीमती शिल्पा ए. मुंडेवाडि**

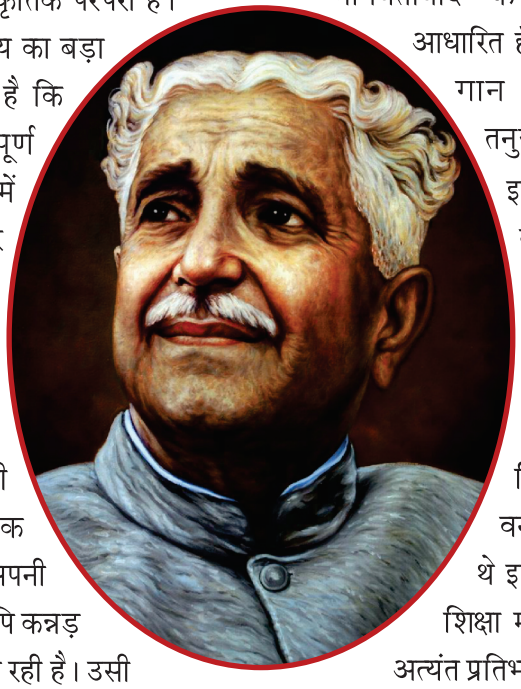

हमारा देश भाषाओं का देश है। प्रत्येक भारतीय भाषा की एक गौरवशाली साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा है। सामाजिक और राजनीतिक बदलाव में साहित्य का बड़ा प्रभावशाली महत्त्व होता है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक परिवर्तन में भाषाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। भारतीय भाषाओं में 'कन्नड़' को अब तक 8 ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना राष्ट्रीय गौरव के अलावा इस भाषा की समृद्धता को दर्शाता है। कन्नड़ साहित्य में 'वचन परंपरा'; 'दास साहित्य' तथा 'जनपद साहित्य' का साहित्यिक अवदान भारतीय साहित्य ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में भी अतुलनीय है। कन्नड़ साहित्य में अनेक स्वनामधन्य साहित्यकारों तथा कवियों ने अपनी रचनाओं से जनमानस को प्रेरित किया है। यद्यपि कन्नड़ साहित्यकारों एवं कवियों की एक समृद्ध परंपरा रही है। उसी परंपरा में श्री कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा का नाम अग्रगण्य है। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। ये उत्कृष्ट कोटि के उपन्यासकार, नाटककार, समालोचक तथा चिन्तक थे। कन्नड़ साहित्य में इनकी गणना 20वीं सदी के महानतम साहित्यकारों में की जाती है। कन्नड़ लेखकों में इनको 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सर्वप्रथम सम्मानित किया गया था। इन्होंने 'रामायण' महाकाव्य के आधार पर 'श्री रामायण दर्शनम्' की रचना की। इनका संपूर्ण लेखन 'विश्व मानवतावाद' के आध्यात्मिक दर्शन पर आधारित है। इन्होंने करनाटक राज्य गान 'जय भारत जननिया तनुजाते' की रचना की।

कन्नड़ साहित्य में इनकी गणना 20वीं सदी के महानतम साहित्यकारों में की जाती है। कन्नड़ लेखकों में इनको 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सर्वप्रथम सम्मानित किया गया था। इन्होंने 'रामायण' महाकाव्य के आधार पर 'श्री रामायण दर्शनम्' की रचना की

इनका जन्म करनाटक प्रांत के चिंकमंगलुर जनपद के अंतर्गत कोप्पा ताल्लुक में बोम्मलपुर के हिरेकोड़िगे नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम वेंकटप्पा गौड़ा तथा माता का नाम सीतम्मा था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने घर में ही प्राप्त की। बाद में माध्यमिक शिक्षा के लिए इन्होंने तीर्थहल्ली स्थिति एंग्लो वर्नाक्युलर स्कूल से प्राप्त की। जब ये 12 वर्ष के थे इनके पिता का देहावसान हो गया। इन्होंने उच्च शिक्षा महाराजा कॉलेज आफ मैसूर से प्राप्त की। ये अत्यंत प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। सन् 1929 में इन्होंने कन्नड़ साहित्य विषय के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इन्होंने अपना शैक्षिक जीवन सन् 1929 में महाराज कॉलेज आफ मैसूर में कन्नड़ के व्याख्याता के रूप में प्रारंभ किया। अन्य विद्यालयों में अध्यापन कार्य करते हुए इन्होंने सन् 1946 में महाराजा कॉलेज आफ मैसूर में प्रोफेसर का पदभार ग्रहण किया। इन्होंने सन् 1955 में इसी कॉलेज के प्रधानाचार्य के पद को सुशोभित किया। इसके बाद सन् 1956 से 1960 तक ये मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। मैसूर विश्वविद्यालय के ये पहले स्नातक थे जिन्होंने इतना बड़ा पद प्राप्त किया। प्रारंभ में इन्होंने अपना लेखन अंग्रेजी से प्रारंभ किया लेकिन बाद में कन्नड़ साहित्य को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। इनकी प्रबल मान्यता थी कि बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा कन्नड़ में दी जाए। कन्नड़ साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए इन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय में 'कन्नड़ अध्ययन संस्थान' की स्थापना की जिसे बाद में 'कुवेंपु कन्नड़ अध्ययन संस्थान' का नाम दिया गया।

***श्रीमती शिल्पा ए. मुंडेवाडि** धर्मपत्नी श्री मोहन बी. देवमाने, तकनीकी अधिकारी, नियंत्रण एवं स्वचालन प्रभाग-1, कन्नड़, मनोविज्ञान तथा अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. हैं। महिलाओं एवं बाल मनोविज्ञान के संबंध में उनको विशेष अनुभव है। ये करनाटक राज्य पुलिस की 'बाल एवं महिला विशेष शाखा' में परामर्शदाता रह चुकी हैं।

मैसूर विश्वविद्यालय में अपने 'कुलपति' कार्यकाल को अवधि में इन्होंने विज्ञान एवं भाषा के अध्ययन पर बहुत बल दिया। कुवेंपु का पूरा जीवन 'एक महान संदेश' था। वे स्वयं में एक संस्था थे। सन् 1974 में बंगलोर

श्री कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा के बचपन के घर को 'राष्ट्रकवि कुवेंपु प्रतिष्ठान' नामक संग्रहालय बनाया गया है। इस संग्रहालय में इनकी रचनाओं तथा उनके जीवन से जुड़ी वस्तुओं को संग्रहीत किया गया है। इनके सम्मान में उनके घर से दक्षिण में स्थित पहाड़ को 'कवि शैल' नाम दिया गया है

विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उनके द्वारा दिया गया अभिभाषण शिक्षा जगत में एक ऐतिहासिक भाषण था। आज के आधुनिक समाज में भी उनका अभिभाषण प्रासंगिक है। करनाटक सरकार ने शिमोगा जनपद में 'कुवेंपु विश्वविद्यालय' की स्थापना की। उनके बचपन के घर को 'राष्ट्रकवि कुवेंपु प्रतिष्ठान' नामक संग्रहालय बनाया गया है। इस संग्रहालय में इनकी रचनाओं तथा उनके जीवन से जुड़ी वस्तुओं को संग्रहीत किया गया है। इनके सम्मान में उनके घर से दक्षिण में स्थित पहाड़ को 'कवि शैल' नाम दिया गया है।

महाकवि कुवेंपु द्वारा रचित प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं:

महाकाव्य

1. श्री रामायण दर्शनम् - खंड-1 (1949) तथा खंड-2 (1957)
2. चित्रांगदा

काव्य संग्रह

- कोलालु (1930)
- पांचजन्य (1936)
- नविलु (1937)
- किन्दरीजोगी मत्तु इतर कवनगालु (1938)
- कोगिले मट्टु सोवियत रसिया (1944)
- शूद्र तपस्वी (1946)
- अग्निहंसा (1946)
- प्रेम कश्मीर (1946)
- चंद्रमांचके बा चकोरी (1954) इत्यादि।

इसके साथ-साथ इन्होंने उपन्यासों, नाटक, आत्मकथा, कहानी संग्रह,

श्री कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा की साहित्यिक सेवाओं के लिए भारतीय साहित्यिक जगत सदैव ऋणी रहेगा। शिक्षा एवं साहित्य जगत में इनके द्वारा स्थापित मानवीय जीवन-मूल्य आजीवन स्मरणीय रहेंगे

निबंध संग्रह, साहित्यिक समालोचना-निबंध एवं अन्य विधाएं, जीवनी, अनुवाद तथा बाल साहित्य के अंतर्गत बाल कहानियों तथा कविताओं का सृजन किया। कन्नड़ साहित्य जगत में अतुलनीय साहित्यिक योगदान के लिए करनाटक सरकार तथा भारत सरकार ने इनको अनेक महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया:-

- साहित्य अकादमी सम्मान (1955)
- पद्म भूषण सम्मान (1958)
- राष्ट्रकवि सम्मान (1964)
- ज्ञानपीठ सम्मान (1987)
- पद्म विभूषण सम्मान (1988)
- करनाटक रत्न सम्मान (1992)

श्री कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा की साहित्यिक सेवाओं के लिए भारतीय साहित्यिक जगत सदैव ऋणी रहेगा। शिक्षा एवं साहित्य जगत में इनके द्वारा स्थापित मानवीय जीवन-मूल्य आजीवन स्मरणीय रहेंगे।

शाश्वत जीवन-दर्शन

*कोमोडोर (नि.) एल.एम. खन्ना, वीएसएम **

इस संसार में मानव जीवन एक पहेली है। जिसने भी अपने मन की सकारात्मक ऊर्जा से इस पहेली को सुलझा लिया, उसी का वर्तमान और भविष्य सुखमय, आनंदमय एवं सुरक्षित रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत उतार-चढ़ाव आते हैं। इतिहास साक्षी है कि जीवन की मझधार से वही आगे बढ़ पाया है जिसने इनका सामना करना सीखा है। बस! मनुष्य के मन में एक संकल्प होना चाहिए कि आगे बढ़ना है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही विश्राम करना है। यदि जीवन को संकल्पशील बनाना है तो नदी से सीखना चाहिए। नदी की धारा! अविरल! अविराम! दोनों ओर विस्तृत फैला हुआ रेत। यदि एक बार नदी, रेत में प्रवेश कर जाए तो पूरी की पूरी नदी सूख जाएगी। लेकिन नदी तो नदी है! उसका एक संकल्प है! अपने वर्तमान में सदा प्रवाहशीलता बनाए रखती है। लक्ष्य को प्राप्त करने अर्थात् सागर से मिलने की प्रबल अभिलाषा। मनुष्य के जीवन में भी इसी प्रकार की अभिलाषा होनी चाहिए। लेकिन उसे यह बात सदैव याद रखनी चाहिए जीवन में सब कुछ वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते या चाहते हैं। हिन्दी के यशस्वी कवि जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में लिखा है कि:-

"लहरें सभी किनारा छू लें, यह तो नहीं जरूरी।
सागर के प्रवाह की, कुछ अपनी भी है मजबूरी"

जीवन किस प्रकार जीना चाहिए, इस संबंध में विभिन्न दार्शनिकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। वस्तुतः, अजीब सी पहेली है ज़िन्दगी। किसी कवि ने जीवन जीने के ढंग के बारे में सच ही लिखा है कि;

जो चाहा
कभी पाया नहीं,
जो पाया कभी सोंचा नहीं
जो सोंचा कभी मिला नहीं
जो मिला रास आया नहीं
जो खोया वह याद आता है....पर
जो पाया-संभाला जाता नहीं...क्यों
अजीब सी पहेली है ज़िन्दगी
जिसको कोई सुलझा पाता नहीं
जीवन में कभी समझौता करना पड़े
तो कोई बड़ी बात नहीं है...क्योंकि,
झुकता वही है जिसमें जान होती है
अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है
ज़िन्दगी जीने के दो ही तरीके होते हैं!
पहला: जो पसंद है उसे हासिल करना सीख लो!
दूसरा: जो हासिल है उसे पसंद करना सीख लो!

ज़िन्दगी जीना आसान नहीं होता
बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता।

ज़िन्दगी बहुत कुछ सिखाती है
कभी हंसाती है तो कभी रुलाती है
पर जो हर हाल में खुश रहते हैं
ज़िन्दगी उनके आगे सिर झुकाती है।

चेहरे की हँसी से हर गम चुराओ
बहुत कुछ बोलो पर कुछ न छुपाओ
खुद न रूठो कभी पर, सबको मनाओ
राज़ है यह ज़िन्दगी का बस जीते चले जाओ।

गुज़री हुई ज़िन्दगी को कभी याद न कर
तकदीर में जो लिखा है उसकी फरियाद न कर
जो होना है, वह होकर रहेगा
तू कल की फ़िक्र में अपनी
आज की हँसी बरबाद न कर।

हंस मरते हुए भी गाता है....और
मोर नाचते हुए भी रोता है
यह ज़िन्दगी भी बड़ी अज़ीब सी पहेली है
दुखों वाली रात नींद नहीं आती
और खुशी वाली रात कौन सोता है।।

***कोमोडोर (नि.) एल.एम. खन्ना, वीएसएम** ईसीआईएल के पूर्व कार्यपालक निदेशक; संचार प्रणाली वर्ग, रक्षा प्रणाली वर्ग तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं दूर संचार वर्ग हैं। इन्होंने भारतीय नौसेना तथा ईसीआईएल की अनेक महत्त्वपूर्ण संचार प्रणाली परियोजनाओं का नेतृत्व किया है। सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति इनका लेखन सतत रचनाशील है।

मेरा गांव: अतीत की स्मृतियों में

*मनोज कुमार रंजन**

हमारा देश भारतवर्ष गांवों का देश है। गांवों की सभ्यता, संस्कृति तथा सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिवेश भारतवर्ष की वास्तविक पहचान है। भारत में पर्यटन के लिए आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए हमारे देश की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत सदियों से शोध का विषय रही है। चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाह्यान तथा मेगस्थनीज के यात्रा वृत्तांत इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। भारत की सांस्कृतिक परंपरा के वैभव से संपन्न भारतवर्ष के उन्हीं गांवों में एक मेरा भी गांव है।

मेरे गांव का नाम कांटी है। कांटी गांव झारखंड राज्य के जनपद कोडरमा के अंतर्गत आता है। आज भी अपने गांव से मीलों दूर अपनी अतीत की स्मृतियों के छोटे से झरोखे से अपने गांव को देख सकता हूं। विशेषकर

हमारा देश भारतवर्ष गांवों का देश है। गांवों की सभ्यता, संस्कृति तथा सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिवेश भारतवर्ष की वास्तविक पहचान है। भारत में पर्यटन के लिए आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए हमारे देश की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत सदियों से शोध का विषय रही है

बसंत एवं वर्षा ऋतु में इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। हमारा गांव झारखंड राज्य की राजधानी रांची से 180 किमी तथा कोडरमा रेलवे स्टेशन से 14 किमी की दूरी पर स्थित है। कोडरमा प्राकृतिक खनिज संसाधनों से संपन्न जनपद है। अभ्रक की उच्च गुणता के लिए कोडरमा विश्वविख्यात है। पूरे विश्व का 70% अभ्रक यहीं से प्राप्त होता है। इस समय जब लगभग समस्त विश्व जल की कमी से जूझ रहा है वहीं मेरे गांव के पूर्व में बराकर नदी तथा उत्तर दिशा में गोखानी नदी कल-कल निनाद करती हुई बह रही है। गांव की जनसंख्या लगभग 12,000 के आस-पास है। गांव में विभिन्न संप्रदायों तथा जाति के लोग आपस में मिल-जुल कर आपसी सद्भाव के साथ रहते हैं। कृषि उत्पादन के क्षेत्र में हमारा गांव आत्म-निर्भर है। प्रमुख फसलों में चावल, गेहूं, मक्का, आलू, सरसों तथा हरी सब्जियां हैं। भारत का प्रसिद्ध जल विद्युत केन्द्र; 'तिलैया जल विद्युत केन्द्र' हमारी कांटी ग्राम पंचायत के अतर्गत ही आता है। तिलैया जल विद्युत केन्द्र 21 फरवरी, 1953 से ही राष्ट्र की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके जलाशय का क्षेत्रफल 36 वर्ग किमी है। यह पूरा जलाशय पहाड़ों और वृक्षों से घिरा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यंत रमणीक एवं मनोरम है।

हमारी ग्राम पंचायत में सैनिक स्कूल, दामोदर घाटी निगम माध्यमिक विद्यालय, दामोदर घाटी निगम उच्च विद्यालय, कांटी माध्यमिक विद्यालय, ग्रिजली माध्यमिक विद्यालय हैं। इन विद्यालयों में देश के भविष्य को सुसंस्कृत एवं सशक्त बनाने के लिए भावी नागरिक तैयार किए जाते हैं। हमारे गांव में बच्चों को देश के उच्च शिक्षा सस्थानों में प्रवेश पाने के लिए लगभग 70 कोचिंग संस्थान हैं। यदि मैं अपने गांव को आधुनिक शिक्षा का निकेतन कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। मैं यह जानता हूं कि मेरा शस्यश्यामलाम् गांव शहरों से किसी भी मामले में कम नहीं है। फिर भी मैं अपने गांव को गांव ही कहूंगा। पर्यावरण संरक्षण को हमारी ग्राम-पंचायत में विशेष ध्यान दिया जाता है। जल से आप्लावित जलाशय, लहराती नदियां, सघन वन, छोटे पहाड़ों की शृंखला, बाग-बगीचे, दूर-दूर तक हरे-भरे लहलहाते खेत और चारों ओर रंग-बिरंगे फूलों की महक किसी भी पर्यटक का मन मोह सकते हैं। पक्षियों का कलरव इस प्राकृतिक दृश्य को और भी अधिक मनोहारी बना देता है। उसकी मिट्टी में न तो कोई विषैले रासायनिक तत्त्व हैं, न ही उसकी

***श्री मनोज कुमार रंजन,** ईसीआईएल के ऐन्टेना उत्पाद एवं साटकॉम प्रभाग (एपीएसडी) में तकनीकी अधिकारी हैं। लोक-जीवन एवं लोक-शैली के प्रति इनकी लेखन सदैव नए आयामों के साथ प्रस्तुत होती है। ग्रामीण अंचल के आंचलिक सौन्दर्य तथा प्राकृतिक वैभव के प्रति इनका लेखन विशिष्ट है।

वातावरण में कोई जहरीली गैस और न ही उसके पानी में कोई हानिकारक रासायनिक तत्त्व हैं।

गांव की पक्की सड़कें, स्वच्छता, अच्छे विद्यालय, साधन संपन्न चिकित्सालय, बैंक, पोस्ट ऑफिस, पंचायत, खेल के मैदान आज के ''श्रेष्ठ भारत, संपन्न भारत और सशक्त भारत'' मेरे गांव की पहचान हैं। लेकिन आज सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आदर्श ग्राम की संकल्पना को साकार करने के लिए हमें मीलों चलना है। मेरे भी गांव में सुधार की दिशा में काफी-कुछ किया जाना शेष है। अभी भी यहां के अधिकांश किसान पूरी तरह साक्षर नहीं हैं। गांव में उद्योग-धंधों का विकास-अधिक नहीं हो पाया है। पहले ताला बनाने की एक फैक्टरी थी, वह भी वर्षो से बंद पड़ी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार की अत्यंत महत्त्वाकांक्षी योजना 'कौशल विकास योजना' के अंतर्गत मेरे गांव की फैक्टरी भी तकनीकी कार्य करना प्रारंभ करेगी।

अपने इस आलेख के माध्यम से मैं गांव के लोगों, विशेषत:, नवजवानों से आग्रह करना चाहता हूं कि हम सबके सहयोग से गांव में एक 'आदर्श-पुस्तकालय' की स्थापना की जाए। जहां निरक्षर ग्रामीण किसानों, भाइयों एवं बहनों को सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिकतम सहज एवं सरल उपकरणों के माध्यम से साक्षर बनाया जा सके

स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद भी आज हमारा गांव अनेक मूलभूत सुविधाओं से काफी दूर है। मेरे गांव में एक भी पुस्तकालय नहीं है। इस कारण बड़े-बुजुर्गों को दैनिक समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाओं तथा निर्धन विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक पुस्तकों की कमी का सामना करना पड़ता है। अपने इस आलेख के माध्यम से मैं गांव के लोगों, विशेषत:, नवजवानों से आग्रह करना चाहता हूं कि हम सबके सहयोग से गांव में एक 'आदर्श-पुस्तकालय' की स्थापना की जाए, जहां निरक्षर ग्रामीण किसानों, भाइयों एवं बहनों को सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिकतम सहज एवं सरल उपकरणों के माध्यम से साक्षर बनाया जा सके। अब वह समय आ गया है कि माननीय प्रधानमंत्री जी की राष्ट्रीय योजनाओं को साकार किया जाए।

हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए कि सूचना क्रांति के इस युग में हमारा गांव भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। मैं पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि अपने गांव को भारतवर्ष के मानचित्र में एक आदर्श ग्राम बनाने की दिशा में मैं तन-मन-धन से सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहूंगा।

हमारे कांटी ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आनेवाले प्रमुख दर्शनीय स्थलों में तिलैया जल विद्युत केन्द्र, जलाशय, नदियां, पर्वत-पहाड़, हरे लहलहाते खेत-खलिहान तथा सैनिक स्कूल तिलैया है। जिला के अंतर्गत आने वाले अन्य दर्शनीय स्थलों में हरिहर धाम, ध्वजाधारी पहाड़ी, संत परमहंस बाबा समाधि, कोडरमा अभयारण्य, मां चंचला शक्ति-पीठ, सोम भंडार गुफा, संत गांव, पेट्रो झरना, मैकमारो

पहाड़ियां इत्यादि हैं। कोडरमा जिला से 100 किमी की सीमा में आने वाले अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थलों में पार्श्वनाथ पहाड़ी मंदिर, हरिहर धाम, बोधगया, विष्णुपद मंदिर, वैद्यनाथ धाम, हजारीबाग अभ्यारण्य, इत्यादि प्रमुख हैं। सच कहूं तो मेरा गांव स्वर्ग की भांति इस धरा भूमि पर विद्यमान है। सच ही कहा गया है कि ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''।

मां ! याद तुम्हारी आती है

*इंद्रजीत सिंह**

सितंबर का महीना था। न ज्यादा गर्मी और न ही ज्यादा सर्दी थी। उस समय मेरी आयु 6 वर्ष थी। मैं 6 महीने से विद्यालय जा रहा था। वह भी इसलिए क्योंकि मेरी मां उसी विद्यालय में पढ़ाती थीं अन्यथा 6 साल से कम उम्र के बच्चे को प्रवेश नहीं मिलता था। उन दिनों हरिद्वार से साधु-संत हाथियों के साथ अमृतसर आते थे और दीपावली तक वहां रहते थे। वहां संतों का संगलवाला अखाड़ा था। मेरी मां मुझे दो साल से वहां हाथी दिखाने ले जाया करती थी। जाते समय केले ले लिया करती थी, मैं हाथियों के सूंड़ में केला रखता वो खा लेते थे, मैं सभी हाथियों को एक-एक कर केला खिलाया करता था। बहुत आनंद आता था। कभी मां महावत को बोलती मेरे बेटे को हाथी पर बिठालो, महावत हाथी को इशारा करता, हाथी सूंड में मुझे उठाकर उपर महावत को पकड़ा देता था।

मां के बगैर हाथी देखना अच्छा नहीं लगता था। लगभग 10 साल पहले मैं अपने बच्चों को हाथी दिखाने जरूर ले गया और उन्हें बताया कि मेरी मां मुझे यहां हाथी दिखाने लाती थी। आज भी वो समय याद आता है तो आंख भर आती हैं

मुझे याद है! एक बार शाम को घर लौटते समय मिट्टी के खिलौनों की एक दुकान आई, मैं मां से ज़िद करने लगा कि मुझे तोता लेकर दो। उस समय वो पांच पैसे का था, मां बोली तू तीन पैसे या दो पैसे का कुछ लेले, मैं नहीं माना तो मां ने मुझे वह तोता दिला ही दिया जिसे आज भी मैंने संभालकर रखा हुआ है।

पांच दिन हो गए थे मां को मालूम हुए कि इस वर्ष भी हाथियों के साथ साधु-संत संगलवाला अखाड़ा में आए हुए हैं। मै रोज मां को बोलता चलो हाथी देखकर आते हैं, मां आज-कल कह कर बात टाल जाती थी। आज मां स्कूल नहीं गई थी, कहती थी "तू स्कूल जा, आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है आधे दिन की छुट्टी लेकर घर आज जाना हम हाथी देखने चलेंगे।" मैं भागा-भागा स्कूल गया, अध्यापिका को बताया कि आज मै मां के साथ हाथी देखने जा रहा हूं, वह भी बहुत खुश हुई। मैं आधी दिन की छुट्टी का इंताजर करने लगा। आधी छुट्टी से पहले ही एक आदमी आया और बोला कि तुम्हारे बापू तुम्हें घर बुला रहे है मैंने अध्यापिका को बोला कि मै मां के साथ हाथी देखने जा रहा हूं, वह बोली जाओ। मैं एक टांग पर भागता हुआ गया। जब घर पहुंचा तो मां बिस्तर पर लेटी थी कुछ लोग उसके आजू-बाजू में बैठे थे। मैं मां को हिलाते हुए बोला मां उठो हाथी देखने चलेंगे। एक बुजुर्ग महिला ने मुझे पकड़ लिया और दूर ले गई। मुझे मालूम नहीं था कि मेरी मां अब इस दुनियां में नहीं है। सभी लोग मेरी मां को लेकर सुनसान जगह पर चले गए और लकड़ियों पर रखकर आग लगा दी। मुझे कुछ भी समझ नहीं आया। घर आते-आते शाम हो गई थी। मैंने बापू से पूछा मां कहां गई है बापू बोले चंदा मामा के पास गई है? बापू मां कब आएगी? बोले जल्दी ही आ जाएगी। तब मैं चंदा मामा को देखता और ताली बजा-बजा कर हंसता और कहता मेरी मां चंदा मामा के पास है जल्दी आ जाएगी, चंदा मामा मेरी मां को जल्दी भेजो।

समय के साथ जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ मौत के मायने समझ में आए तो मैं अपने को कोसने लगा कि मां इस दुनियां में नहीं थी और मेरी आंखों से एक आंसू भी नहीं बहा। मैं तो मां की अरथी के साथ भी खेलता-खेलता गया था और खेलता-खेलता ही आया था। तब मौत के मायने मालूम न थे। मुझे याद है जब मैं सड़क पार कर रहा था एक कार जो बहुत तेजी से आ रही थी मेरे आगे आने पर उसने इतनी तेजी से ब्रेक लगाई, मेरा हाथ उसको लगा लेकिन मै भाग कर निकल गया, यह विडंबना थी या कुछ और कि शायद मेरी मां मुझे अपने साथ ले जाना चाहती थी या यह सोचकर छोड़ दिया कि मैं सारी उम्र महसूस करता रहूं कि बिना माँ के जिंदगी कैसी होती है। दिनांक 24 सितंबर, 1964 से वर्ष 1978 में ईसीआईएल में शामिल होने तक मैं हाथी देखने नहीं गया। मां के बगैर हाथी देखना अच्छा नहीं लगता था। लगभग 10 साल पहले मैं अपने बच्चों को हाथी दिखाने जरूर ले गया और उन्हें बताया कि मेरी मां मुझे यहां हाथी दिखाने लाती थी। आज भी वो समय याद आता है तो आंख भर आती हैं। यह आप बीती लिखते-लिखते मै कितना रोया.....

"रोका बहुत आंसुओं को, आखिर बह ही गए।
जाते जाते तुम बेवफा हो, मुझे कह ही गए"

***श्री इन्द्रजीत सिंह,** उपकरण एवं प्रणाली वर्ग, ईसीआईएल में वरिष्ठ मास्टर तकनीशिएन हैं। पंजाबी लोक संस्कृति रंगमंच के ये ख्यातिप्राप्त निर्देशक हैं। देश के मंचों पर इन्होंने पंजाबी लोक-कला के कार्यक्रमों का निर्देशन किया है। मानवीय संबंधों की अतल गहराइयों को समझने एवं रचनाओं के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में इनकी विशेष रुचि है।

मानव जीवन की सार्थकता

*मुकेश दास **

हिन्दी के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि 'बड़े भाग मानुस तन पाया। सुर दुर्लभ सदग्रंथन गावा।'' इस संसार में मानव जीवन बड़े सौभाग्य से मिलता है। आज बड़ा आध्यात्मिक विषय हमारे समक्ष है-

''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे
यही पशु प्रवृत्ति की आप आप ही चरे।।''

हिन्दी के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने सच ही लिखा है। हमारे जीवन का मूलभूत दर्शन ही यही है। बड़े पुण्यों के फलस्वरूप मानव की देह प्राप्त होती है। अपनी देह से वह विश्व की सेवा कर सकता है। सेवा करने से सुख मिलता है, जबकि सेवक बनकर सेवा करने वाले को परम संतोष मिलता है। विशेष शांति मिलती है और वह धन्यता का अनुभव करता है। मानव धर्म यही कहता है कि हम अपने आस-पास के रहने वाले दुखी मानव के दुख को दूर करने में सहयोग करें। मानव सेवा ही सर्वश्रेष्ठ सेवा है। कहा भी गया है कि सच्चे अर्थों में नर सेवा ही नारायण सेवा है। हमें अपने पर्यावरण से सीखना चाहिए, अपनी प्रकृति से सीखना चाहिए। नदी, पर्वत, वृक्ष सभी का जीवन दूसरों के लिए समर्पित है। इस संबंध में बहुत प्रसिद्ध पंक्तियां है;

''वृक्ष कबहुं नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।''

सेवा के लिए मानव के मन में सर्वप्रथम यह उत्प्रेरणा होनी चाहिए कि दुखी मानव भी अपने बंधु हैं। वे अपने परिवार के अंग हैं। अगर हमारा पड़ोसी दुखी होगा तो हम भी दुखी होंगे। इसके लिए मनुष्य के मन में सेवा भाव का प्रस्फुरण होना आवश्यक है। जब तक हमारे हृदय में सेवा धर्म का भाव उदित नहीं होगा, तब तक हम दुखी व्यक्ति के प्रति कुछ कष्ट उठा कर सहयोग करके और अल्प त्याग करके तन-मन-धन से सेवा नहीं कर सकते।

महाराजा शिवि, दधीचि और राजा दिलीप आदि ने सेवा धर्म का निर्वाह करते हुए अपने जीवन को समर्पित करके पूरा किया। रामायण काल में गिद्धराज जटायु का बलिदान सेवा-समर्पण के लिए महान बन गया कि उसने दुखी और विलाप करती सीता जी की आर्त पुकार सुनकर, सामर्थ्यवान न होते हुए भी रावण से मोर्चा लिया और संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ

भारतीय संस्कृति में अनेक ऐसी, दिव्य आत्माएं हुई हैं; जिन्होंने सेवा के क्षेत्र में अपना अलौकिक कीर्तिमान स्थापित किया है। महाराजा शिवि, दधीचि और राजा दिलीप आदि ने सेवा धर्म का निर्वाह करते हुए अपने जीवन को समर्पित करके पूरा किया। रामायण काल में गिद्धराज जटायु का बलिदान सेवा-समर्पण के लिए महान बन गया कि उसने दुखी और विलाप करती सीता जी की आर्त पुकार सुनकर, सामर्थ्यवान न होते हुए भी रावण से मोर्चा लिया और संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार हमारे देश को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने में हजारों क्रांतिकारियों ने देश सेवा में अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया। मानव सेवा का दूसरा पहलू समाज सेवा और राष्ट्र सेवा है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत व्यक्ति राष्ट्र को परम वैभव के पद पर ले जाने के लिए अपना जीवन अर्पित कर देता है। हमारी भारतीय संस्कृति ने हमको यही सिखाया है कि हमारा जीवन देश-धर्म-जाति से परे मानवता के लिए समर्पित होना चाहिए।

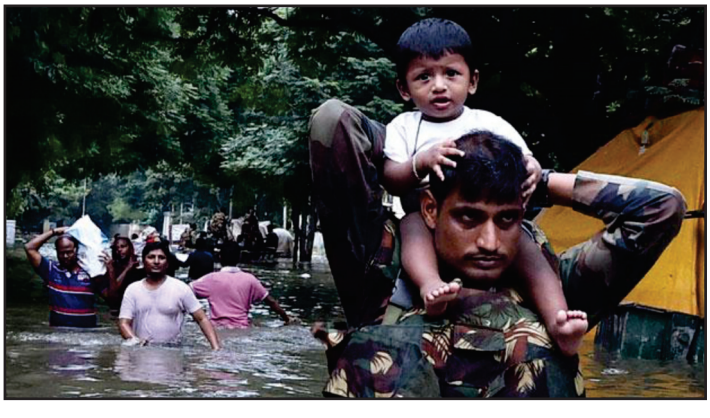

***श्री मुकेश दास,** ईसीआईएल के सर्वो प्रणाली प्रभाग में ट्रेड्समेन-डी हैं। सामाजिक संबंधों एवं पौराणिक लोक-शैली के प्रति इनका लेखन प्रशंसनीय है। ईसीआईएल में राजभाषा प्रतियोगिताओं में इनकी सहभागिता अनुकरणीय है। ईसीआईएल स्तर पर इनको अनेक बार राजभाषा प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कृत किया जा चुका है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

निगम के मुख्यालय तथा आंचलिक कार्यालयों में 31-10-2016 से 05-11-2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 31-10-2016 को वरिष्ठ अधिशासियों ने 'सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा' ली। अन्य कार्मिकों ने भी अपने-अपने प्रभागों में 'सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा' ली। सतर्कता जागरूकता के प्रचार-प्रसार के लिए ईसीआईएल मुख्यालय तथा आंचलिक कार्यालयों

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक व्याख्यान देते हुए

में प्रमुख स्थानों पर द्विभाषी/त्रिभाषी नारों वाले बैनर प्रदर्शित किए गए। कार्यक्रम के आयोजन के अंतर्गत श्री साई सुधीर डिग्री एवं पीजी कॉलेज में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सर्वोत्तम तीन प्रतिभागी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। ईसीआईएल मुख्यालय एवं आंचलिक कार्यालयों के कार्मिकों के लिए भी 'अखंडता के प्रोत्साहन एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन सहभागिता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

05-11-2016 को आयोजित जागरूकता सप्ताह समापन समारोह में भारत के राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा भारत के गृहमंत्री एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के संदेशों का वाचन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया। समारोह में ईसीआईएल के वर्ग/प्रभाग प्रमुख, वरिष्ठ अधिकारीगण तथा ईसीआईएल मजदूर संघ और ईसीआईएल ऑफीसर्स असोसिएशन के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह का आयोजन

निगम में 04-03-2017 को 46वें राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह के शुभारंभ के अवसर पर निगम के कार्मिकों द्वारा 'संरक्षा प्रतिज्ञा' ली गई। इस अवसर पर तेलुगु, हिन्दी एवं अंग्रेजी में 'संरक्षा निबंध लेखन', 'संरक्षा क्विज़', 'संरक्षा स्लोगन' तथा 'संरक्षा पोस्टर' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री वी. हेमंत कुमार, संरक्षा प्रबंधक, श्री मृण्मय नंदी, संरक्षा अधिकारी सहित संरक्षा अनुभाग के सभी सदस्यों ने सहयोग दिया।

चि. अभिषेक सुपुत्र श्री ए.पी. राजु, वरिष्ठ प्रबंधक, निगमीय अनुसंधान एवं विकास ने 26-02-1017 को विश्व क्यूब असोसिएशन द्वारा हैदराबाद में आयोजित 3X3X3 रुबिक क्यूब प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया। चि. अभिषेक ने यह प्रतियोगिता 51सेकंड में तथा प्रथम पुरस्कार विजेता ने 48 सेकंड में जीती।

'ईसीआईएल गौरव' संपादन समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमः झलकियां

(बाएं से) श्री वाई.एस. मय्या, पूर्व अप्रनि; श्री जी.पी. श्रीवास्तव, पूर्व अप्रनि तथा पी. सुधाकर (तत्कालीन) अप्रनि 'कॉफी टेबल बुक' का विमोचन करते हुए

आईजीसीएआर के टीएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अप्रनि

ईसीआईएल की 49वीं वार्षिक रिपोर्ट (2015-16) का सीएमसी बैठक में विमोचन

नाभिकीय संरक्षा व्याख्यान में (बाएं से) श्री वाई.एस. मय्या, पूर्व अप्रनि; श्री जी.पी. श्रीवास्तव, पूर्व अप्रनि तथा श्री पी. सुधाकर, (तत्कालीन) अप्रनि

प्रौद्योगिकी विकास परिषद (टीडीसी) की बैठक में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

ईसीआईएल की 'काफी टेबल बुक' के साथ निगमीय प्रबंधन समिति के सदस्य

भाई-भाई में आपस में द्वेष नहीं होना चाहिए- अथर्ववेद

महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमः झलकियां

सीआईएसएफ को सुरक्षा प्रणाली देते हुए श्री वी.एस.बी. बाबु, निदेशक (कार्मिक) एवं श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक

तोशिबा, जापान के प्रतिनिधि मंडल के साथ ईसीआईएल प्रबंधन

बांग्लादेश के प्रतिनिधि मंडल के साथ ईसीआईएल का प्रबंधन

एनएनएसए संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (यूएसए) के प्रतिनिधि मंडल के साथ ईसीआईएल का प्रबंधन

श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ निदेशक मंडल के सदस्य

परियोजना निदेशक, एटीवीपी एवं बीएआरसी की टीम के साथ ईसीआईएल प्रबंधन

काव्यांजलि

जीवन.....एक कहानी

जीवन क्या है?
नाटक है? कविता है?
शायद!
यह है एक कहानी!
जिसे पढ़कर
कभी हंसी
तो कभी निकल आता है
आंखों से पानी
स्मृतियों के अथाह सागर में
मनमानी करती है
यह कहानी।
कभी उछलती, कभी मचलती
तो कभी झील जैसे शांत भाव से
खुद को समेटती है
यह दीवानी
बहुत ही रोचक है
यह कहानी
जीवन का सार!
जीवन भर का प्यार!
यही तो है यह कहानी
समझो तो खुशियां अपार
न समझो तो दु:खों का पहाड़ है, यह कहानी
पर जो भी हो, जैसी भी हो
बहुत ही प्यारी और अनोखी है
यह जीवन की कहानी।।

कल्पना

बहुत चाह थी तुझे छूने की
चाह थी तुझमें खुद को खोने की
चाह थी अपने शीतल-स्पर्श से तुझे भिगोने की
चाह थी तेरे बादल जैसे बालों को सहलाने की

चाह थी तेरे दिल के उस जलते सूरज को
थोड़ा शांत करने की
चाह थी तेरे मन के उस अंधेरे में
छिपी चांदनी को थोड़ा जलाने की

चाह थी तेरी झिलमिलाती तारों जैसी
आंखों में खुद को देखने की, चाह थी तेरे दिल में
अपने प्यार का आशियाना बनाने की

पर कहां मिला मुझे तू, चाहत रह गई पर न मिला तू
प्यार रह गया पर आशियाना न बन पाया तू

फिर भी खुश हूं मैं, क्योंकि मुझमे है तेरी परछाई
हम न मिल सके तो क्या
तय किया है हमने मीलों का सफर
रखके हाथों में हाथ।

मिलना संभव नहीं फिर भी जुड़े हैं हम एक दूजे से
जब तक रहूंगी मैं, रहेगा तू
चलता आ रहा हमारा सफर सदियों से

तू है सूरज, चांद और तारों से पूर्ण मेरा आकाश
और मैं हूं तेरी दिवानी नदी
जिसको निखारती है तेरा प्रकाश।।

सुश्री देवश्री मोदक, आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता में कनि. हिन्दी अनुवादक हैं। राजभाषा कार्यान्वयन में इनका योगदान प्रशंसनीय है। ये कोलकाता विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. हैं। हिन्दी तथा बांग्ला साहित्य के भाषावैज्ञानिक तथा अनुवादपरक अध्ययन में इनकी विशेष रुचि है।

काव्यांजलि

वक्त

यह वक्त यूं ही गुजरता जाएगा....
न मैं कुछ कह पाऊंगी
न वह कुछ कह पाएगा
न मैं संभल पाऊंगी
न वह फिसल पाएगा
ये वक्त यूं ही गुजरता जाएगा....
न मैं इज़हार कर पाऊंगी
न वह इनकार का पाएगा
न मैं सुलझ पाऊंगी
न वह उलझ पाएगा
यह वक्त यूं ही
गुजरता जाएगा....
जिस तरह मैं तड़पती हूं
क्या वो भी तड़प पाएगा
जिस तरह मैं जलती हूं
क्या वो भी जल पाएगा
या यह वक्त यूं ही
गुजरता जाएगा....
इस वक्त का काम
तो है ही गुजरना
जब वो इस बात को
समझ जाएगा
तब मेरा हाथ थाम वो
इस वक्त को पीछे छोड़ जाएगा।।

जिन्दगी की राह

जिन्दगी के हर कदम पर ये सोचा कि
शायद अब ये जिंदगी
समझ आ जाएगी।
शायद कोई राह नज़र आएगी
पर न ही कोई राह
न ही किसी के कदमों के निशां
नजर आते हैं
जितनी दूर मैं चलती हूं
रास्ते बनते चले जाते हैं
हां! हर इंसान का रास्ता
शायद नया होता है
उसमें न ही कोई रास्ता
ना ही निशां होता है
ज्यों ही हम रुकते हैं, नया रास्ता
वहां खत्म हो जाता है
यूं समझो, जिंदगी का अंत हो जाता है
तो फिर राह मत खोजो
राह बनाते जाओ
जितनी दूर चल सको
चलते जाओ
वरना जिंदगी का
अंत हो जाएगा
जो कुछ भी है पास तुम्हारे
वो भी खत्म हो जायेगा।।

श्रीमती ज्योति पंचौली, सामरिक इलेक्ट्रानिकी प्रभाग में तकनीकी प्रबंधक हैं। ये इलेक्ट्रानिकी एवं संचार इंजीनियरी में स्नातक हैं। कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं सत्यनिष्ठा इनके जीवन का दर्शन है। राजभाषा गतिविधियों में इनका योगदान सदैव रहता है। इनको अनेक संस्थानों ने हिन्दी प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया है।

जिन्दगी का सच

जिन्होंने मेरी जिन्दगी में जहर इतना घोला है
बस आना उनके चेहरे पे निखार अभी बाकी है।

दोस्तों ने कब्र मेरी पहले ही खोद रखी है
बस उनको मेरे मरने का इंतजार अभी बाकी है।

बन जाएंगे दुख, आंसू, बद्दुवाएं मेरी सम्पत्ति
बस उन पर थोड़ा सा शृंगार अभी बाकी है।

जिन्दगी में जीने का क्यों नशा कम हो रहा
अपनों का जहर घुला प्यार अभी बाकी है।

दुश्मनों ने मुझ पर क्यों सितम ढाने छोड़ दिए
हमसफर के इशारे का इंतजार अभी बाकी है।

ऊंचाइयां छू लेने का क्यों इतना गुमान कर रहा
सीढ़ी खींचने वाले मददगार अभी बाकी हैं।

इतना क्यों उछल रहा लोगों का प्यार देखकर
जिन्दगी में नफरत के किरदार अभी बाकी हैं।

मौत से बच जाने का इतना जश्न क्यों मना रहा
दोस्तों के खंजर का वार अभी बाकी है।

शायद वो बदल जाए जो दोस्त दुश्मन बन गए
सुना है कि वफा की बहार अभी बाकी है।

'थिंद' ऐसा भी नहीं कि
दुनिया में सब दोस्त बदल जाते हैं,
कइयों के एहसानों का मुझ पर
भार अभी बाकी है।।

इन्द्रजीत सिंह
वरिष्ठ मास्टर तकनीशिएन
उपकरण एवं प्रणाली वर्ग

ऐ राही ! आगे बढ़

तेरे जन्म से शुरू हुआ है ये सफर
मंजिलें अनेक हैं ? रास्ते भी कहां एक हैं, जाओगे किधर
लड़खड़ाते-लड़खड़ाते ही सही पर खड़ा हो
गिरते पड़ते ही सही पर संभल
ऐ राही! चल चला चल, तू राही चल चला चल।
तुझे देखने अभी दुनिया भर के मेले हैं
इस मेले में मेले कम ज्यादा झमेले हैं
मत बन भीड़ का हिस्सा तू लपककर आगे निकल
ऐ राही! चल चला चल, तू राही चल चला चल।

हवाओं में लौ जलाना मुश्किल हो जाता है
पर याद रख बिना हवा के लौ भी कहां जल पाती है
तू हौंसले से अपनी हवा का रुख अदल-बदल
ऐ राही! चल चला चल, तू राही चल चला चल।

लेकिन राही को जीवन-सरिता में
पतवार ले कर आगे बढ़ना है, लहरों के झंझावातों से
रेतीले मैदानों के आलिंगन से आगे बढ़ते जाना है
नौका के पालों को ऐसे बांधो जो राह दिखाएं संघर्षों में
असफलता और सफलता जीवन के दो पहलू हैं।।

जीवन का शाश्वत दर्शन यही सिखाता है
समरस होकर, समदर्शी बनकर
आगे बढ़ते जाना है
संघर्षों की धरा-भूमि पर उपवन एक सजाना है
तूफानों में सत्कर्त्तव्यों की नौका से
आगे बढ़ते जाना है।
बस! आगे बढ़ते जाना है।।

अजहर सुल्तान
अवर श्रेणी लिपिक/ टंकक (हिन्दी)
हिन्दी अनुभाग

काव्यांजलि

नन्हीं सी ज़ान

यादों के गहरे झरोखों से
याद आ गई वो नन्हीं सी ज़ान
वक्त ने लिया था जिसका इम्तहान
न जीना था आसान...
उजड़ जो गये थे सारे अरमान।।

उसे वक्त से लड़ना था
बनाने के लिए अपनी पहचान
यह जमाना था बड़ा बेरहम
हर कदम पर डगमगाते थे कदम
बस ! एक मसीहे ने हमेशा दिया साथ
जिन्दगी में कुछ कर गुजरना है, यह दिलाया था विश्वास।।

उन्हें था अपनी बेटी पर दृढ़ विश्वास।
वही थी उनके जीने की आस।।
दर्द का बादल छंटा और सुनहरी धूप फैली
जिन्दगी एक बार फिर मुस्कराई।।

शत् ! शत् ! प्रणाम है उस पिता को
जिन्होंने उस नन्हीं सी जान को
संभाला ही नहीं बल्कि
जिन्दगी जीने का फलसफा सिखलाया
उसे बेहतर ही नहीं बल्कि बेहतरीन बनाया।।

उड़ने के लिए साहस दिया
जब भी गिरी हौसला देकर उठाया

असीम हृदय की गहराइयों से उस पिता को
पुन: सादर नमन! वंदन! अभिनंदन ।।

यादों की सौगात

याद आ गया वो गुजरा जमाना
वो सहकर्मियों के साथ हुआ नया याराना
डीएई कॉलोनी के रास्तों में घूमना
वो एक दूसरे को पिया की बातें कहकर छेड़ना।।

यहां सहकर्मियां सारी नई-नई सखियां बनीं थीं
उनसे लेकिन मन में
अजीब सी डोर बंधी थी
हर 15 तारीख को ऑफिस से आधे दिन की छुट्टी लेना
और सैर-सपाटे पर निकल जाना।।

जैसे-जैसे वक्त बीता
यह सारी सहेलियां बिछुड़ गईं
कुछ ईसीआईएल में रह गईं तो कुछ विदेश में बस गईं
ये सहेलियां जब याद आती हैं
तो कुछ पल दिल को बड़ा तड़पाती हैं।।

मन यही सोचकर शांत हो जाता है
जहां भी हैं सारीं, व्यस्त हैं अपनी जिन्दगियों में
कुछ घर-बार में तो कुछ नौकरियों में
पर है सारी सहेलियां याद करतीं एक-दूसरे को
कभी मैसेज कर लेतीं.....
व्हाट्सऐप में बीते दिनों की फोटो भेजतीं.....
तो कभी मिल लेतीं
हँस-बोल लेतीं घंटा-दो घंटा, फिर बिछुड़ जातीं
और वादा कर जातीं.....
वापस लौट आने को.....

श्रीमती शीजा शिवराजन, रिएक्टर परियोजना प्रभाग में वरिष्ठ प्रबंधक हैं। ये इलेक्ट्रानिकी एवं संचार इंजीनियरी में स्नातक हैं। कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं सत्यनिष्ठा इनके जीवन का दर्शन है। इनकी कविताएं सदैव प्रकाशित होती रहती हैं। हिन्दी में तकनीकी लेखन के क्षेत्र में इनकी विशेष रुचि है।

काव्यांजलि

देश है मेरा प्यारा हिन्दुस्तान

देश है मेरा प्यारा हिन्दुस्तान
जिसकी गाथा बड़ी महान
सदियों से ही सारे विश्व में बड़ी निराली इसकी शान
यही तो है वो पावन भूमि, साधु संत हैं जिसकी आन
यही धरा वो भगीरथ ने की जहां तपस्या और
धरती पर स्वर्ग से गंगा का किया आह्वाहन
जिसने पाप मुक्त किया लाखों को
तर गए जो पावन गंगा जल में करके स्नान।।

अलग है भाषा-बोली, फिर भी सब इक दूजे के हमजोली
यहां संग में मिलकर हैं मनाते हम सब ईद, दीवाली
क्रिसमस -होली और देश प्रेम ही सबसे बड़ा धर्म है
हर कोई अब ले ये जान, यही है गीता, यही है बाइबिल
यही है गुरुबाणी और यही तो हम सबकी है कुरान।।

यही वो धरती, सपूत जिसके महाराणा
और रानी झांसी जैसे वीर शिवाजी
छोड़ गए जो इतिहास में वीरता के कई अनगिनत निशान
यही वो भूमि जिसने दिए देश को अपने रक्त से सींचने वाले
गांधी, सुभाष और भगत सिंह जैसे संत महान
आओ करें सभी स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण
और करें हम उनको बार-बार नमन्
दिया जिन्होंने हमारे लिए अपने प्राणों का बलिदान

जय हिन्द की गूंज से झूम उठे ये धरती सारी
और झूम उठे ये सारा आसमान
सारे जग में सबसे है ये न्यारा और सदा ही रहेगा
सारे जग की आंख का तारा, देश ये मेरा प्यारा हिन्दुस्तान
आओ लगाएं नारा, जय जग जननि, जय हो हिन्दुस्तान।।

सुनील कुमार
लेखा सहायक
उपकरण एवं प्रणाली प्रभाग

पुकार

राष्ट्र व्यापी पुकार है
प्राणों की आवाज है
देश की सशक्तता में
सारी जनता का नाम है।

समय आने पर सभी को इन्कार है
पूंजीपतियों का सदा आदर सत्कार है
निर्धन को दुतकार है
अमानुषता का चारों ओर दुराचार है।

संकट में आपातकाल है
कष्टों में आपत्तिकाल है
समय आने पर यही सभी का
दिल दहलाने वाला हाल है।

दुखियों का कष्ट भरा काल है
सुख का आनन्दोल्लास माल है
सादगी ही जीवन की ताल है
सभ्यता ही राष्ट्र की परिमाल है।

प्रजातंत्र में स्वतंत्रता का भास है
स्वतंत्रता में उसी का ह्रास है
मुक्त भावनाओं का सदा यशोगान है
हृदयग्राही वासनाओं का कोई नहीं स्थान है।

परिमार्जित करने के लिए चाहिए
सभ्यता, संस्कृति को अपनाइए
अनुकरण, अनुभव करते जाइए
लक्ष्यित लक्ष्य को पाने में सफलता पाइए।।

जी. यज्ञ कुमार
उप महाप्रबंधक
संघटक प्रभाग

स्वास्थ्य-सौन्दर्य

*शोभा राजन पाटील**

अमरूद मीठा और स्वादिष्ठ फल होने के साथ-साथ कई रोगों का निवारण भी करता है। विशेष रूप से सर्दियों में अमरूद खाने के लाभ ही लाभ हैं। दंत रोगों के लिए, सर्दी और जुकाम जैसी समस्याओं में अमरूद बहुत लाभकारी है। अमरूद के पत्तों को चबाने से दांतों के कीड़े और दांतों से संबंधित रोग भी दूर हो जाते हैं। इसके अलावा भी ये कई औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इसमें विटामिन 'सी', विटामिन 'ए' तथा विटामिन 'बी' भी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यह ऐसा सर्वगुणकारी फल है जो पाचन तंत्र के लिए बहुत अच्छा होता है।

सर्दियों में अमरूद अत्यंत लाभकारी है

शीत ऋतु में अमरूद का प्रयोग अत्यंत लाभकारी है। यह एक सर्वगुणकारी प्राकृतिक फल है। हमारे देश में अमरूद लगभग प्रत्येक प्रांत में पाया जाता है। इसके प्रयोग से निम्नलिखित लाभ हैं:-

1. अगर आपको दांत में दर्द है तो अमरूद के पत्तों से इसको कम किया जा सकता है। इसे खाने से दांत भी स्वस्थ रहते हैं और दांतों में सड़न नहीं होती साथ ही हमेशा मुंह ताज़गी से भरा रहता है।
2. अमरूद के सेवन से खून में शर्करा का स्तर कम होता है। इसमें फाइबर अधिक मात्रा में होते हैं जो शर्करा पचाने और इन्सुलिन बढ़ाने में मदद करता है।
3. इसमें विटामिन 'सी' होने के कारण यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता है।
4. खाना खाने के बाद अमरूद खाने से पाचनशक्ति ठीक रहती है।
5. कब्ज की समस्या से बचने के लिए काला नमक के साथ अमरूद का सेवन करना चाहिए।
6. अमरूद में विद्यमान पोटैशियम शरीर में सोडियम के प्रभाव को कम करता है जिससे रक्त दाब का संतुलन बना रहता है। इसके अतिरिक्त, इससे शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होता है।
7. अमरूद में आयोडीन अच्छी मात्रा में होती है जिससे थाइराइड की समस्या में आराम मिलता है। इससे शरीर का हार्मोलन संतुलन भी बना रहता है।
8. अमरूद में विटामिन 'बी' अच्छी मात्रा में होता है। यह रक्त संचार को बढ़ाता है जिससे मस्तिष्क तेजी से काम करता है।
9. अमरूद का प्रयोग त्वचा कैंसर से बचाता है।
10. गुलाबी अमरूद में लाइकोपीन टमाटर से दुगुनी मात्रा में होता है जो त्वचा का पराबैंगनी किरणों से बचाव करता है।

अमरूद के पत्तों को चबाने से दांतों के कीड़े और दांतों से संबंधित रोग भी दूर हो जाते हैं। इसके अलावा भी ये कई औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इसमें विटामिन 'सी', विटामिन 'ए' तथा विटामिन 'बी' भी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यह ऐसा सर्वगुणकारी फल है जो पाचन तंत्र के लिए बहुत अच्छा होता है

***श्रीमती शोभा राजन पाटील** धर्मपत्नी श्री राजन बी. पाटील, बिक्री अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई हैं। सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी लेखन पर इनकी विशेष रुचि है। इनका सामाजिक लेखन पाठकों के समक्ष सदैव एक नए आयाम के साथ उपस्थित होता है।

'ईसीआईएल गौरव' ज्ञान-प्रश्नोत्तरी

सम्माननीय पाठकगण

इस अंक से 'ईसीआईएल गौरव' ज्ञान-प्रश्नोत्तरी (पढ़ें और जीतें) प्रतियोगिता नामक स्थाई स्तंभ का शुभारंभ किया जा रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य 'ईसीआईएल गौरव' के पाठकों में प्रतिस्पर्धा एवं इसके माध्यम से पत्रिका में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करना है। प्रतियोगिता के नियम निम्नवत हैं:-

- ईसीआईएल मुख्यालय सहित आंचलिक, शाखा तथा यूनिट कार्यालयों के नियमित अधिकारी तथा कर्मचारी ही इसमें भाग ले सकते हैं
- ईसीआईएल मुख्यालय सहित आंचलिक, शाखा तथा यूनिट कार्यालयों के हिन्दी अनुभाग तथा राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारी एवं कर्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते हैं
- प्रतियोगिता में कुल दस (10) प्रश्न होंगे जो पत्रिका में छपे लेखों से संबंधित होंगे
- उत्तर केवल ई-मेल द्वारा ही स्वीकार किए जाएंगे
- इनके उत्तर ई-मेल द्वारा संपादक: 'ईसीआईएल गौरव' को drawasthi@ecil.co.in पर भेजना है
- समस्त 10 प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले विजेताओं के नाम फोटोग्राफ के साथ अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे
- परिणाम से संबंधित समस्त प्रक्रियाओं के अधिकार संपादन समिति के पास सुरक्षित होंगे और संपादन समिति का निर्णय अंतिम एवं मान्य होगा
- उत्तर प्राप्त होने की अंतिम तिथि 15-09-2017 है

पत्रिका के इसी अंक पर आधारित प्रश्न

शृंखला-1

1. श्री देवाशीष दास, विशिष्ट वैज्ञानिक ने ईसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार कब ग्रहण किया?
2. श्री पी. सुधाकर, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को 'इलेक्ट्रानिक मैन आफ द इयर' सम्मान किस वर्ष के लिए दिया गया?
3. डॉ. पी.के. अय्यंगर को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से किस वर्ष सम्मानित किया गया?
4. 'ईसीआईएल गौरव' के 'मार्गदर्शक' कौन हैं?
5. विश्व हिन्दी दिवस समारोह- 2017 में मुख्य अतिथि कौन थे?
6. 10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन कहां किया गया?
7. राष्ट्रकवि कुप्पालि वेंकटप्पा पुट्टप्पा का संबंध भारत के किस राज्य से है?
8. 'ईसीआईएल गौरव' अंक-7 किस विशेष उत्पाद पर आधारित विशेषांक था?
9. इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) की स्थापना किस वर्ष हुई?
10. आंचलिक कार्यालय (पश्चिम), मुंबई में पांच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण में कितने प्रतिभागियों ने भाग लिया?

संदेशा आया है

मुझे प्रसन्नता हुई कि इस अंक में तकनीकी आलेख, साहित्यिक आलेख, कविता, राजभाषा कार्यान्वयन विषयक रिपोर्ट को सम्मिलित किया गया है। जैसा कि आपको जानकारी है की यह विश्वविद्यालय समस्त ज्ञान हिन्दी माध्यम से प्रदान करता है। भारत में चिकित्सा, अभियांत्रिकी, प्रबंधन, विधि, कृषि आदि विषयों का शिक्षण एवं शोध अंग्रेजी माध्यम से होता है। हमारे विश्वविद्यालय ने अभियांत्रिकी, प्रबंधन एवं विधि पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम से प्रारंभ कर दिए हैं। आप इलेक्ट्रानिक्स से संबंधित लेख हिन्दी माध्यम से प्रकाशित करते हैं। आपसे आग्रह है कि इलेक्ट्रानिक्स/अभियांत्रिकी से संबंधित लेखों की साफ्ट प्रति भेजने का कष्ट करें जिससे कि हम छात्रों को उपलब्ध करवा सकें। आपकी जानकारी में ऐसे शोध संस्थान जो अपनी पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित करते हैं उनकी भी सूची भेजने का कष्ट करें।

प्रो. मोहनलाल छीपा
कुलपति
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस अंक के माध्यम से ईसीआईएल द्वारा किए जा रहे अनुसंधान और विकास कार्यक्रम से विश्वविद्यालय के विद्यार्थी परिचित हो रहे हैं। आपके द्वारा 'ईसीआईएल गौरव' की प्रति निरंतर प्रेषित की जा रही है जो विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में संदर्भ पत्रिका के तौर पर वांछनीय है। आपके वर्तमान अंक 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' विशेषांक से विश्वविद्यालय के तकनीकी संकाय के छात्रों को देश की सशस्त्र सेना में आर्टिलरी की सामरिक महत्ता का ज्ञान मिल रहा है। साथ ही इस अंक में साहित्यिक काव्यांजलि और साहित्यिक आलेख जैसी परिशिष्ट ने विश्वविद्यालय के नियमित प्रकाशन 'विश्वविद्यालय वार्ता' के प्रस्तावित अंक में पाठक रुचि को शामिल करने की प्रेरणा भी दी है। आज आपका संस्थान ईसीआईएल इलेक्ट्रानिकी में उत्कृष्टता के गौरवशाली स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुका है। सामरिक इलेक्ट्रानिकी में देश को आत्म निर्भर बनाने की संकल्पना को आपका संस्थान साकार कर रहा है। उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में आपने विश्व के अग्रणी राष्ट्रों की श्रेणी में भारत को खड़ा कर दिया है। आशा है अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय परिवार को आपकी समृद्ध अनुभव यात्रा की यह पाती निरंतर प्राप्त होती रहेगी।

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रभारी, भाषा एवं अनुवाद विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

सर्वप्रथम एक सफल गृहपत्रिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक बधाइयां स्वीकार करें व वरिष्ठ कार्यपालकों तक पहुंचाएं। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृहपत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। आपने हिन्दी पर तकनीकी सामग्री व कार्यालय की गतिविधियों को इसमें समेटकर इसे एक संपूर्ण पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया है। आपको साधुवाद। नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. दामोदर खड़से
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
अंतरिक्ष विभाग व परमाणु ऊर्जा विभाग की संयुक्त सलाहकार समिति

जी वी रेड्डी द्वारा लिखित इलेक्ट्रानिक फ्यूज सुरक्षा के क्षेत्र में ईसीआईएल के बढ़ते कदम को दर्ज करता है तथा वेलुरु सूर्यप्रकाश की काव्यांजलि 'काम का दाम' सच में किसानों के वास्तविक जीवन को उजागर करता है। उच्चकोटि गुणता आश्वासन हेतु भारतीय पीएसयू एवं उद्योग पुरस्कार से पुरस्कृत होने पर संस्थान को हार्दिक शुभकामनाएं।

एस.पी. शर्मा
महाप्रबंधक, सिंडिकेट बैंक, हैदराबाद

ईसीआईएल में आयोजित सभी कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक, अपेक्षित व अन्य के लिए प्रेरणास्रोत हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख रोचक तथा आदर्श हैं। इस पत्रिका के संकलन में अत्यंत परिश्रम एवं समन्वय का समावेश हुआ है।

ए. अम्बादास
वरिष्ठ हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, हैदराबाद

''इलेक्ट्रानिक फ्यूज़'' विशेषांक के रूप में पत्रिका अत्यंत ही आकर्षक और सूचनापरक है। इसमें वैज्ञानिक उत्पादों एवं परियोजनाओं को हिन्दी माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है जो बहुत ही प्रशंसनीय है। इस अंक में भारतीय सेना की आर्टिलरी की तोपों में प्रयुक्त होने वाले ''इलेक्ट्रानिक फ्यूज़'' के महत्व की जानकारी दी गई है जो ज्ञानवर्धक है।

अरुण कुमार मंडल
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
मंडल रेल प्रबंधक (राज), सिकंदराबाद

भविष्य वर्तमान के द्वारा खरीदा जाता है- डॉ. सैम्युअल जानसन

सर्वप्रथम, ईसीआईएल को इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में 50 वर्षों से उत्कृष्ट योगदान के लिए 'भारत का सर्वोच्च पीएसयू पुरस्कार-2016' की प्राप्ति पर बहुत-बहुत बधाई। श्री अनुराग कुमार, महाप्रबंधक, उपकरण एवं प्रणाली वर्ग तथा निगमीय अनुसंधान एवं विकास द्वारा रचित 'ईसीआईएल के बढ़ते कदम' लेख से ईसीआईएल के स्वर्णिम इतिहास के साथ-साथ वर्तमान में इसके बढ़ते कदमों की छाप और आहट, दोनों दिखाई-सुनाई देती है।

डॉ. बी. बालाजी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), मिश्र धातु निगम लिमिटेड
हैदराबाद

गृह-पत्रिका ''ईसीआईएल गौरव'' में वैज्ञानिक लेखों तथा ईसीआईएल में वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी के साथ-साथ ईसीआईएल में आयोजित राजभाषा हिन्दी एवं अन्य कार्यक्रमों की भी जानकारी दी गई हैं। अत: पत्रिका की सामग्री अत्यंत सूचनापरक एवं प्रेरणादायक है।

के. सनातनन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
उन्नत आंकड़ा संसाधन अनुसंधान संस्थान (एड्रिन), सिकंदराबाद

''ईसीआईएल गौरव'' का 7वां अंक प्राप्त हुआ। हमारा अनुरोध स्वीकार करने के लिए शुक्रिया। 'स्वर्ण-जयंती' के अवसर पर ईसीआईएल के सभी कर्मियों को हार्दिक बधाई। 'इलेक्ट्रानिक फ्यूज़' पर विशेष जानकारी देने हेतु श्री जी वी रेड्डी जी का विशेष धन्यवाद। अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों का परिचय भी सराहनीय प्रयास है।

एम. जी. सोम शेखरन नायर
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र
तिरुवनंतपुरम

***एस. विष्णु प्रसाद**, कुलसचिव, गणितीय विज्ञान संस्थान, चेन्नै ***श्री सीलम गिरि**, उप महाप्रबंधक, सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय (ग्रामीण), हैदराबाद ***पी. प्रदीप कुमार चांगभले**, उप प्रबंधक (राजभाषा), दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, हैदराबाद ***आईशा शेख**, हिन्दी अधिकारी, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय, हैदराबाद ***बीरेन्द्र साह**, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (अधिकारी) कार्यालय, पुणे ***सीएच. नागराजु**, प्रशासनिक अधिकारी, आकाशवाणी, हैदराबाद ***टी.वी. राजेन्द्रन**, हिन्दी अधिकारी, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, चेन्नै ***महेश्वर घनकोट**, हिन्दी अधिकारी, मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन ***प्रदीप शर्मा**, रक्षा लेखा नियंत्रक (अनुसंधान एवं विकास) कार्यालय, बेंगलुरु ***डॉ. धनजी प्रसाद**, सहायक प्रोफेसर, भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ***डॉ. एम.ए. खुद्दुस**, राज्य निदेशक, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार राज्य कार्यालय, तेलंगाना ***डॉ. सैयद मासूम रज़ा**, सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु खनिज अन्वेषण निदेशालय, हैदराबाद ***हुमने के.ए.**, हिन्दी अधिकारी, सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद **वरुण भारद्वाज**, हिन्दी अनुवादक एवं संपादक 'भंडारण गौरव', केन्द्रीय भंडारण निगम, हैदराबाद ***डॉ. जवाहर कर्नावट,** उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, मुंबई ***मनोज कुमार शुक्ला**, सहायक निदेशक (राजभाषा), भारी पानी संयंत्र, बड़ोदरा **राहुल खटे**, उप प्रबंधक (राजभाषा), आंचलिक कार्यालय, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, हुबली ***अमर कडू**, उप प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिजर्व बैंक, हैदराबाद ***सुरेन्द्र सिंह राजपूत**, उप महाप्रबंधक (भंडार) एवं समन्वयक-राभाकास, इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड, मणवालकुरुच्चि ***उत्तम कुमार दास**, हिन्दी नोडल अधिकारी, हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद ***आर. महेश्वरी अम्मा**, हिन्दी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स, तिरुवनन्तपुरम ***एन.एल. शर्मा**, सहायक निदेशक (राजभाषा), दूरदर्शन केन्द्र, हैदराबाद ***एस.एच. जाफरी**, वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी, टाटा स्मारक अस्पताल, मुंबई ***डॉ. पी. आर. वासुदेवन**, हिन्दी अधिकारी, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय, चेन्नै ***एस.बी. प्रसाद**, उप अधिकारी (हिन्दी), इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड, मुंबई ***चि.वें. सुब्बाराव**, हिन्दी अधिकारी, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ***डॉ. शगुफ्ता परवीन**, हिन्दी अधिकारी, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद ***श्याम पी. अकोलकर**, सहायक निदेशक (राजभाषा), रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद ***डॉ. एस. नसीमा**, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद

प्रतिक्रियाएं भेजने के लिए *'ईसीआईएल गौरव संपादन समिति'* आपके प्रति सादर आभार व्यक्त करती है

नराकास (उपक्रम) राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर
वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ईसीआईएल के पुरस्कार विजेता अधिकारीगण

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस- 2017 समारोह के अवसर पर
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड में भव्य आयोजन

इलेक्ट्रानिकी में उत्कृष्टता का 50वाँ वर्ष

ईसीआईएल: बहु उत्पाद, बहु-प्रौद्योगिकी उद्यम है जो परमाणु ऊर्जा, रक्षा, वाँतरिक्ष, सुरक्षा तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-अभिशासन के सामरिक क्षेत्र में नवोन्नत प्रौद्योगिकी समाधान उपलब्ध कराती है

उत्पाद एवं सेवाएँ निवेदित

- नियंत्रण एवं उपकरणीकरण प्रणाली, विकिरण संसूचक एवं उपकरण
- वीडियो निगरानी सहित एकीकृत सुरक्षा प्रणाली, कार्मिक एवं वाहन अभिगम नियंत्रण, वीडियो विश्लेषिक एवं सुरक्षा उपकरण
- इलेक्ट्रानिक निगरानी एवं युद्धकौशल प्रणाली, रेडियो संचार उपस्कर, रक्षा के लिए कमान्ड एवं नियंत्रण प्रणाली, इलेक्ट्रानिक फ्यूज़, जैमर, डाटा, वॉयस एवं वीडियो के लिए इनक्रिप्शन उपस्कर
- ऐन्टेना प्रणाली एवं वी-सैट नेटवर्क, कॉकपिट वॉयस रिकार्डर, सिन्क्रोज एवं जाइरो
- ई-अभिशासन अनुप्रयोग, कंप्यूटर शिक्षा सेवा, इलेक्ट्रानिक मतदान मशीन एवं मतदाता सत्यापन पेपर ऑडिट परीक्षण प्रिन्टर
- परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, इलेक्ट्रानिक ऊर्जा मीटर, थिक फिल्म हाइब्रिड सूक्ष्म परिपथ इत्यादि

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड

भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम
हैदराबाद-500062, तेलंगाना
टेलीफैक्स: +91 40 27122584, ई-मेल- cpr@gmail.com
वेब: www.ecil.co.in